जनवरी – 2014

20/-

अन्दर पढ़े...

- जीवन का सच
- वसंत बाबू राव का पुनः जीवित होना
- ब्राह्माण्ड की यात्रा
- युग कैसे बदलते हैं ?
- सोशल नेटवर्किंग का बढ़ता हुआ रुझान

एवं नियमित स्तम्भ
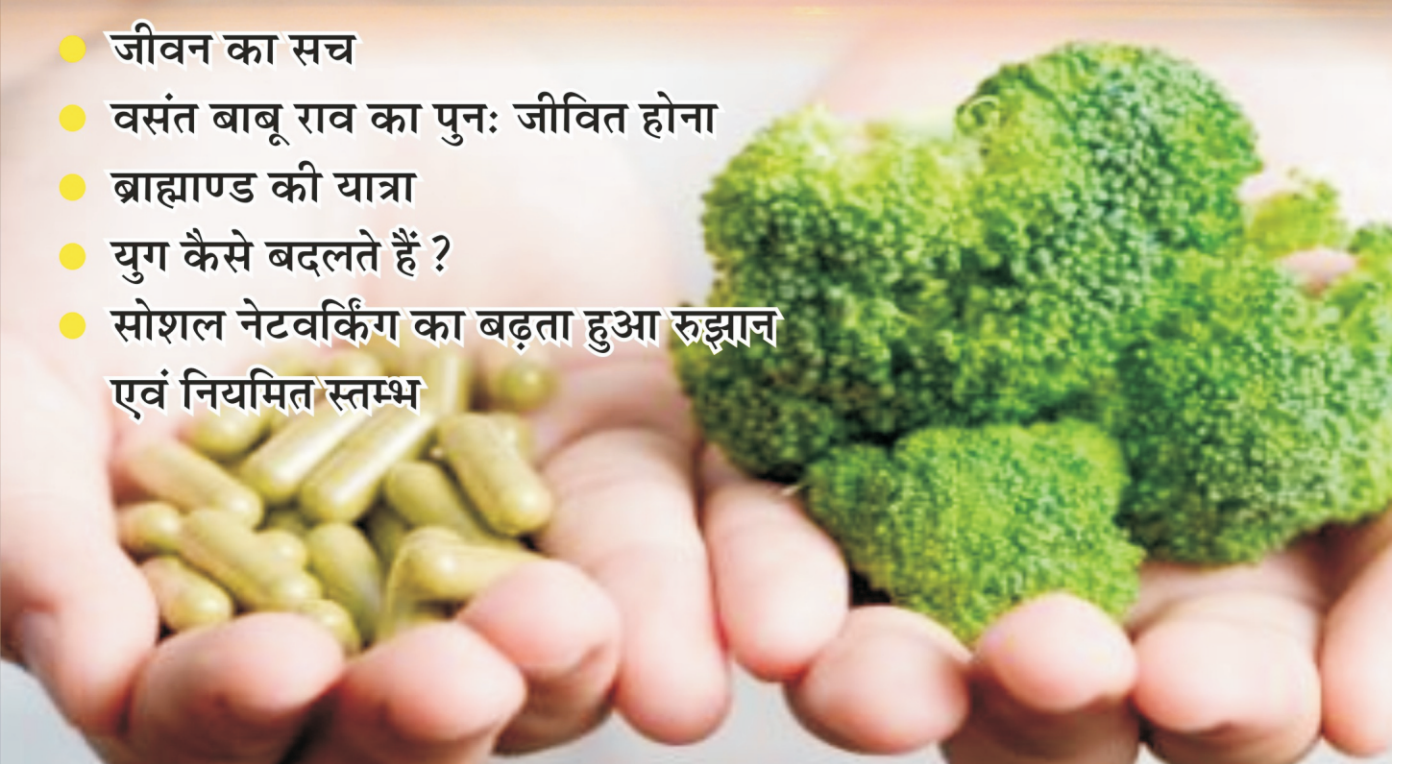
संस्थापक संपादक:
आर.पी.गांधी - 093154-46140
संपादक
बलवन्त सिंह (प्राध्यापक) - 094163-24802
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
संपादन सहयोग:-
बलबीर लौंगोवाल: 098153-17028
हेम राज स्टेनो: 098769-53561
गुरमीत अम्बाला-094160-36203
अनुपम राजपुरा: 094683-89373
पत्रिका शुल्क:-
वार्षिक: 100/- रू.
विदेश: वार्षिक: 25 यू.एस.डॉलर
पत्रिका वितरण:
गुरमीत अम्बाला
Email:tarksheeleditor@gmail.com
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)
Email:tarksheeleditor@gmail.com
तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुडने के लिए
www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग
Gurmeet Singh C/o
Hindu Institute of Computer & Accounts
Lukhi Road, Bhiwani Khera, KKR.
e-mail:hindu.institute@gmail.com
M.No. 089502-82815

विशेष लेख:

चलंत मामले:

केस रिर्पोट:

नियमित स्तम्भ:

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक ईस्माईलाबाद, जिला कुरूक्षेत्र में दिनांक 09-03-14 दिन रविवार को प्रात: 10:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक होगी। सभी प्रतिनिधिगण समय पर अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें।

संपर्क सूत्र:
टहल सिंह गिल -089012-87805
कर्मजीत सिंह -094163-66335

तर्कशील केन्द्र, हरियाणा के निर्माण के लिए सहयोग स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा माडल टाऊन, अम्बाला शहर। (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं: 30191855465 में जमा करा सकते हैं। अपना पता मोबाईल सं: 94160-36203 पर SMS कर दें।

नोट: किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

स्वागत योग्य कदमः

ओडिसा सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए-'जादू टोना रोकथाम विधेयक 2013-2014 को पारित कर अंधविश्वास फैला कर अपना धंधा करने वालों के विरूद्ध एक सख्त कानूनी प्रावधान बनाकर एक स्वागत योग्य कदम उठाया है।

देश में जादू-टोना रोकथाम विधेयक पास करने वाला ओडिसा चौथा राज्य बन गया है। इसके पूर्व बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड राज्य ने ऐसा ही कानून बनाया हुआ है। यह कानून मुख्यतः डायन प्रथा के विरूद्ध है। उपरोक्त सभी राज्य अभी भी डायन प्रथा से ग्रस्त हैं, आंकड़ों के अनुसार अकेले ओडिसा राज्य में वर्ष 2010 में 31, वर्ष 2011 में 39 व वर्ष 2012 में 35 महिलाओं को प्रताड़ित कर मारा गया है। किसी भी महिला को डायन घोषित कर इन राज्यों में बेहद प्रताड़ित किया जाता है, उनके केश काटने, नंगा घुमाने, मल-मूत्र फैंकने, पेड़ से बांधकर चाबूक-डण्डों से मारने, जिन्दा जला देने इत्यादि जैसे अमानवीय ढंग अपनाए जाते रहे हैं।

कभी डायन-प्रथा भारत ही नहीं पूरे विश्व में पाई जाती थी, यूरोपीय मुल्कों में भी 'विच-क्राफ्ट' के नाम पर यह सब प्रचलित रहा है। देश के बहुत से राज्य जहां विकास एवं सामाजिक आन्दोलनों के कारण इस कुप्रथा से मुक्त हो गए हैं, वहीं देश के कुछ राज्यों में अभी भी यह उत्पीड़न बेहद दुःखदायी है। यह कानून मुख्यतः इसी कुप्रथा पर फोक्स करता है। आवश्यकता है कि अंधविश्वास विरोधी कानून का दायरा और विस्तृत किया जाए और इनके अन्तर्गत आश्रमों/डेरों में महिलाओं के यौन उत्पीड़न को भी शामिल किया जाए, क्योंकि देश के अन्य राज्यों में अगर डायन प्रथा नहीं है तो भी आश्रमों/डेरों में महिलाओं को साध्वियां बनाकर रखने की कुप्रथा प्रचलन में है, जहां पर धर्म की आड़ में शारीरिक, मानसिक व आर्थिक शोषण की घटनाएं लगातार सुर्खियों में आती रहती हैं। देश भर में लागू मौजूदा कानून 'ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडिज एक्ट-1956' भी निचले स्तर के तांत्रिकों को ही घेरे में लेता है इसे विस्तृत बनाकर अन्य स्थलों पर किए जाने वाले अंधविश्वास के उपक्रमों को भी शामिल किया जाना चाहिए। महाराष्ट्र राज्य में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति द्वारा किए जा रहे आंदोलन को भी संज्ञान में रखते हुए कड़े कानूनी प्रावधान आवश्यक हैं। कानूनी दायरे में जहां डेरों/आश्रमों में किए जाने वाले महिला विरोधी उपक्रमों को सम्मिलित करने की जरूरत है वहीं इन डेरों/आश्रमों के अवैध कब्जे/सम्पत्ति के लिए किये जाने वाले धोखाधड़ी के प्रयास, मानवीय श्रम का ईश्वरीय भक्ति के नाम पर दोहन, झूठे नाम-दान के प्रचार, दिखावे के तौर पर किये जाने वाले सामाजिक सुधार कार्यक्रमों की आड़ में राजनीतिक शक्ति को प्राप्त करने के प्रयास आदि को भी कानूनी दायरे में लाये जाने की जरूरत है ताकि कुछ चालाक लोगों द्वारा आम जनता को मानसिक, शारीरिक व आर्थिक शोषण से मुक्ति मिल सके।

संविधान के पालन में ईश्वरवाद सबसे बड़ा खतरा

किसी भी राष्ट्र या राष्ट्र के नागरिकों की प्रगति, खुशहाली, सुख-समृद्धि, तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में समान अवसर, सम्मान और न्याय की उपलब्धता के लिए राष्ट्र के संविधान की अहम भूमिका होती है। हमारे राष्ट्र भारत के संविधान की उद्देशिका में स्पष्ट उल्लेख हैं कि भारत एक सम्पूर्ण प्रभुता-सम्पन्न धर्म निरपेक्ष, समाजवादी, लोकतंत्रात्मक गणतंत्र है।

सम्पूर्ण प्रभुता-सम्पन्न का भाव है कि भारत किसी भी बाह्य राष्ट्र के दबाव अथवा नियंत्रण में नहीं है। वह अपनी आन्तरिक और विदेशी नीतियों को स्वयं निर्धारित करने में पूर्ण स्वतंत्र है।

धर्मनिरपेक्ष का आशय है कि भारत में प्रत्येक व्यकित अपनी आस्था और मान्यता के अनुसार उपासना पद्धति अपनाने के लिए पूर्ण स्वतंत्र है और सरकार सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करे। सरकार किसी भी विशेष धर्म, पन्थ, मत, अथवा सम्प्रदाय को विशेष महत्व न दे।

समाजवादी शब्द का अर्थ है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त हैं। प्रत्येक नागरिक को समता, समरसता, बन्धुता, न्याय तथा सम्मानपूर्वक जीवन जीने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

लोकतंत्रात्मक शब्द से तात्पर्य है कि देश में जनता की, जनता के लिए, जनता द्वारा चुनी गयी सरकार बने जो आम जनता के हित, साधन और खुशहाली के लिए पूर्णरूपेण समर्पित हो। 'एक आदमी - एक वोट' के सिद्धान्त पर प्रत्येक व्यक्ति को बराबर महत्व मिले।

भारत के संविधान निर्माता डा० भीमराव अम्बेडकर ने प्रत्येक नागरिक के मूल अधिकारों, संसदीय प्रणाली और नीति-निर्देशक तत्वों को भारतीय संविधान में इस सूझबूझ के साथ सम्मिलित किया कि जिससे भारतीय समाज, जिसमें अनेक विविधतायें देखने को मिलती हैं, के लिए उपयोगी और हितकर सिद्ध हो सके।

संविधान के अन्तर्गत अनुच्छेद (14) में मानव-मानव में समता या बराबरी का अधिकार है। किसी भी व्यक्ति को उसके जन्म या धर्म के आधार पर किसी भी अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। सभी का विधि के अनुसार समान अधिकार है। अनु० (15) के अनुसार धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेद नहीं किया जा सकता। अनु० (16) में सभी नागरिकों को नियोजन या नियुक्ति में अवसर की बराबरी का उल्लेख है। अनु० (17) में अस्पृश्यता का किसी भी रूप में आचरण विधि के अनुसार दण्डनीय घोषित है। अनु० (18) के अनुसार राज्य सेना या विद्या सम्बन्धी सम्मान के सिवाय और कोई भी उपाधि प्रदान नहीं करेगा। अनु० (21) के अनुसार भारत के हर नागरिक को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। अनु० (22) द्वारा नागरिकों को मनमानी गिरफ्तारी से संरक्षण प्राप्त है। अनु० (23) में प्रत्येक नागरिक को शोषण से मुक्त स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार है। अनु० (25), (26) और (27) में अपनी आस्था के अनुसार धर्म स्वीकार करने की आजादी है। अनु० (32) के अनुसार प्रत्येक नागरिक को अपने मूलभूत अधिकारों को लागू करवाने हेतु न्यायालय में आवेदन करने का अधिकार प्राप्त है। अनु० (51)(क) में भारत की एकता, अखण्डता की रक्षा करना, देश की सुरक्षा करना, सभी लोगों में समरसता, भाईचारा की भावना, प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं ज्ञानार्जन की भावना का विकास, सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा और 6-14 वर्ष के बच्चों को शिक्षा दिलाना उल्लिखित

है।

संविधान में यह भी अंकित है कि ये अधिकार तब तक है जब तक किसी भी प्रकार से भारत की संप्रभुता, एकता, अखण्डता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, लोक व्यवस्था, सदाचार अथवा शिष्टाचार में से कोई भी बाधित नहीं होता। सविधान के अनु० (368) तथा अनु० (13/2) के अनुसार संविधान-संशोधान तो किया जा सकता है किन्तु संविधान के मूलभूत ढाँचे को बदला नहीं जा सकता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि डा० अम्बेडकर ने संविधान के माध्यम से सामाजिक न्याय और प्राकृतिक न्याया दोनों का अनुपम सिद्धान्त प्रतिपादित किया है। संविधान समर्पित करते समय डा० अम्बेडकर ने स्पष्ट कहा था- ''आज हम दोहरी जिन्दगी में कदम रख रहे हैं। एक ओर राजनीति में हमे समानता मिलेगी क्योंकि 'एक आदमी - एक वोट' की बराबरी को हमने सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया है, परन्तु दूसरी ओर सामाजिक तथा आर्थिक गैर बराबरी बनी रहेगी। यदि इसे जल्द न समाप्त किया गया तो बड़ी कठिनाई से बना राज-सत्ता का महल ध्वस्त हो जायेगा।''

डा० अम्बेडकर ने जो संविधान भारत के नागरिकों को सौंपा उसकी भाव-भूमि में उनके अन्तःकरण की अदात्त मानवतावादी सद्‌भावना रही कि इस संविधान के प्रकाश में भारत की भावी पीढ़ी एक ऐसे राष्ट्रीय समाज में सान्द खुशहाल जीवन बितायेगी जहाँ का प्रत्येक मानव लिंग-वर्ण-जाति और धर्म से ऊपर उठकर समता, समरसता, बंधुता, स्वतंत्रता और न्याय के आधार पर एक सशक्त, प्रगतिशील, समृद्ध और सुखी राष्ट्र और समाज का निर्माण करेगा। ऐसा राष्ट्र और समाज जिसमें कोई भी छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, छूत-अछूत, अमीर-गरीब, मालिक-नौकर और शोषक-शोषित नहीं होगा। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक दृष्टि से सभी समान होंगे और सबको अपनी क्षमता के अनुसार विकास करने का समान अवसर मिलेगा।

संविधान के क्रियान्वयन और उसकी सफलता तथा उपयोगिता पर टिप्पणी करते हुये डा० अम्बेडकर ने जो कहा था वह उनकी सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक दूरदृष्टि एवं चिन्तनशैली को प्रमाणित करता है। उन्होंने कहा था- ''संविधान को अच्छे व कुशल ढँग से चलाने एवं लागू करने का पूर्णदायित्व उसके चालकों पर है। यदि चालक ही खराब हैं, तो संविधान कितना ही अच्छा हो, व्यर्थ ही सिद्ध होगा।''

आज डा० अम्बेडकर के उपर्युक्त शब्द भारत के संविधान पर अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रहे हैं। भारत के लोकतंत्र पर अँगुलियाँ उठायी जाती हैं क्योंकि लोकतंत्र के चारों स्तम्भ- विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया - प्रश्न चिन्हों से घिरे हैं। लोगों के मन में उनके प्रति विश्वास की आधारशिला आज डगमगाती है। असल में लोगों के मन में ऐसी शंकायें और अविश्वास की भावनायें इसलिए उठती हैं, क्योंकि आजाद भारत के 65 वर्ष स्वयं गवाही दे रहे हैं। देखियेन-शासकों, प्रशासकों, न्यायधीशों, और पत्रकारों द्वारा राष्ट्रीय पर्वो पर हर वर्ष निष्ठापूर्वक शपथ खाने के बावजूद आज देश में काला धन, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, प्रदूषण, अपराध, कन्या-भ्रूण-हत्या, बलात्कार, नारी उत्पीड़न, सामाजिक अन्याय, शोषण, मँहगाई, जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी जैसे सामाजिक रोग दिन दूगने रात चौगुने बढते ही जा रहे हैं।

यदि हम देश की इस दुर्दशा का गहराई से विश्लेषण करके चिन्तन-मनन करें तो पायेंगे कि भारत में समस्याओं का एक कारण ईश्वर या ईश्वरवाद है। इसलिये यह आवश्यक है कि आज हम सर्वप्रथम यह विचार करें कि ईश्वर क्या है। उसके बाद हम देखेंगे कि ईश्वरवाद किस तरह से संविधान के पालन में सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है।

मनुष्य जन्म से ही जिज्ञासु होता है। जिज्ञासा मानव का स्वभाव है। वह हर घटना का कारण

जानने को उत्सुक रहता है। चूँकि आदिकाल में मनुष्य हर घटना का कारण नहीं जानता था, अतः उसे किसी दैवी शक्ति का चमत्कार मान लेता था। अनुकूल घटना को अलौकिक शक्ति की प्रसन्नता और प्रतिकूल घटना को उसकी नाराजगी मानकर उसे प्रसन्न करने हेतु मानव ने उसकी पूजा-अर्जना प्रारम्भ की। कुछ चतुर चालाक लोगों ने अपने को दैवी शक्ति का प्रतिनिधि बताकर दूसरों को छलना शुरू कर दिया। कालान्तर में जब लोगों ने देवी-देवों पर प्रश्न करने प्रारम्भ कर दिये तब उन्होंने एक ऐसे ब्रह्म या ईश्वर की कल्पना कर ली जो सर्वव्यापक, सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान, निराकार, निर्विकार तथा अलख हो जिसे केवल दिव्य चक्षुओं से ही देखा जा सके और वे दिव्य चक्षु भी ऐसे जिनको पाने के लिए लोग छप्पन पीढ़ियों तक जिन्दगी खपाते रहें किन्तु या न सकें और साथ ही साथ उस कल्पित ब्रह्म य ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास भी न खोयें।

ईश्वर के रूप को समझने के बाद ईश्वरवाद स्वतः स्पष्ट हो जाता है। ईश्वर के दो रूप माने गयें हैं। एक निराकार और दूसरा साकार।

1. निराकार ईश्वर की कल्पना है कि ईश्वर का कोई रूप नहीं, आकार नहीं, वह न कुछ कर्ता, न कुछ हर्ता, वह न कुछ मांगता, न कुछ देता, उसकी न कोई इच्छा, न कोई संकल्प, वह न कुछ देखता, न कुछ सुनता इत्यादि। कहने का भाव यह है कि वह निर्विकार, निर्लेप है। उसके होने न होने से मानवजीवन में कोई अन्तर नहीं पड़ता। ऐसे निराकार ईश्वर को न तो हमसे कुछ मतलब और हमको भी उससे कोई मतलब नहीं।

2. साकार ईश्वर की कल्पना मानव जैसी है। वह हमारी तरह ही गुण-दोषों से युक्त है। हमारे जैसे ही उसके हाथ-पैर, बुद्धि, बल, क्षमता है। वह भी हमारा जैसा राग-द्वेष-क्रोध-लोभादि बंधनों से बडा है। अन्तर सिर्फ इतना है कि मनुष्य के अन्दर ये गुण-दोष सीमित हैं जबकि साकार ईश्वर में असीमित। साकार ईश्वर प्रसन्न भी होता और नाराज भी, वर भी देता, और शाप भी, लाभ भी करता और हानि भी। वह सुख भी देता और दुख भी। वह अपनी प्रशंसा, प्रार्थना, पूजा, चढ़ावा से खुश होता है। ईश्वर के इसी रूप की आलोचना की जाती और यही है समस्याओं की जड़।

इस कल्पित ब्रह्म या ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करना, धर्मग्रंथों में वर्णित ईश्वर के स्वरूप और शक्ति में विश्वास करके 'बिना जाने मान लेने' की प्रवृत्ति से उसमें श्रद्धा, आस्था, भक्ति या समर्पण का भाव रखना और तथा कथित ईश्वर के वचनों, आदर्शों और उपदेशों को यथावत आचार-विचार में धारण करने की दार्शनिकता को ही ईश्वरवाद कहा जाता है। ईश्वरवाद को ही भाववाद, आदर्शवाद अध्यात्मवाद, कल्पनावाद, शून्यवाद, यथावतवाद और ब्राह्मणवाद जैसे नामों से भी जाना जाता है। इसमें ईश्वर, आत्मा, मन तथा विचार के विभिन्न गुणों के आधार पर प्राकृति, पदार्थ और मानव से संबंधित सभी घटनाओं की व्याख्या की जाती है।

इसमें कहा जाता है कि सृष्टि के पहले पदार्थ न तो था और न तो प्रलय के बाद रहेगा ही। पदार्थ की 'उत्पत्ति और विनाश' किसी शाश्वत विचार या काल्पनिक सत्ता की देन हैं। ईश्वरवाद 'कुछ नहीं' से 'कुछ है' की उत्पत्ति की बात करता है! इस शाश्वत विचार या काल्पनिक सत्ता को ही ब्रह्म, ईश्वर, अल्लाह या गॉड कहा जाता है। ईश्वरवाद की मान्यता है कि- 'ब्रह्म सत्यं, जगत्मिथ्या'। इसके अतिरिक्त ईश्वर को सारी सृष्टि का कर्ता, भर्ता और हर्ता कहा गया है। धर्मग्रंथों में ईश्वरवाद के सभी प्रत्ययों- ईश्वर (परमात्मा), आत्मा, पुनर्जन्म, भाग्यवाद, देवी-देवता, स्वर्ग-नर्क, मोक्ष, योनि, चार वर्ण, चार आश्रम, चार वेद, चार युग, चार धाम, चार योग, चार पुरूषार्थ, संस्कार, ज्योतिषि तथा चमत्कार - को भी पूर्ण रूपेण महिमा मण्डित किया गया है। उसके ही प्रचार-प्रसार में हजारों मठ-मंदिर तथा पूजा-केन्द्र है, जहाँ पर जीवी करोड़ों साधू-संत-पुरोहित-पुजारी तथा कथा-वाचक चौबीसों घण्टे इसके प्रचार कार्य में जुटे रहते हैं। सरकारी तंत्र, रेडियों, टी.वी. और मीडिया भी अपने-अपने ढंग से

ईश्वरवाद का ही पोषण करते हैं।

ईश्वरवाद विवेक बुद्धि का मारक है। ईश्वरवाद बिना कारण के ही कार्य होने की बात करके चमत्कार का पोषण करता है। अंधविश्वास ही ईश्वरवाद का मौलिक आधार है। ईश्वरवाद ने अवैज्ञानिक सोच के आधार पर आत्मा को शाश्वत, अजर, अमर माना क्योंकि उसे ईश्वर का अंश बताया। आत्मा को बार-बार जन्म लेने की बात कहकर मनगढ़ंत पुनर्जन्म का सिद्धान्त प्रतिपादित करके आम आदमी का शोषण करने का साजिशपूर्ण तरीका निकाला।

इसके अतिरिक्त ईश्वरवाद अवतारवाद का भरपूर पोषक है। ऐसी मान्यता है कि तथाकथित निर्गुण, निराकार, निर्विकार और निर्लेप तथा अजन्मा ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा तथा सदाचार और धर्म की स्थापना करने के लिए स्वयं अपने आप को उत्पन्न करता है। संसार में व्याप्त सभी बुराइयों को दूर करके धरती पर धरती पर अच्छाइयों की लहलहाती फसल उगाना ईश्वर की ही ठेकेदारी है। मनुष्य के वश के बाहर है।

ऐसे कल्पना पर आधारित ईश्वरवाद के फूलते-फलते भारत का श्रेष्ठतम संविधान आम आदमी को खुशहाल बनाने में असफल है। देखिए, किस प्रकार ईश्वरवाद संविधान के पालन में बाधक बना है और साथ ही यह भी देख ले कि इस बाधा को कैसे दूर किया जा सकता है।

चूँकि ईश्वरवाद सृष्टि का आदि कारक ईश्वर को ही बताता है और उसके साथ यह भी कहता है कि ईश्वर ही सारी सृष्टि का नियामक और नियंत्रक है, तथा ईश्वर की इच्छा से ही संसार में सारी घटनायें घटित होती हैं। ईश्वर ही प्रत्येक मनुष्य के भाग्य का निर्णायक है। ईश्वरवाद का उद्घोष है- ''होई है सोइ जोरा मर चिराखा'' तथा ''लाभ-हानि, जीवन-मरन, जस-अपजस विधि हाथ।'' इस उद्घोष से जन-मानस में तथा कथित ईश्वर का काल्पनिभय भरकर आधारहीन तर्क के सहारे आम आदमी का आर्थिक और सामाजिक शोषण-दोहन करने की साजिश चलती है।

पुरोहित और पुजारी उस ईश्वर के प्रतिनिधि कहे जाते रहे हैं। वे ईश्वर की सभी योजनाओं को जानने का दावा करते हैं। इस प्रकार इन धार्मिक ठेकेदारों की धार्मिक सत्ता जन-मानस पर हावी हो जाती है, जिसका परिणाम है कि बेचारा मेहनतकश आम आदमी कल्पित ईश्वर में अंधश्रद्धा का शिकार बनकर मानसिक गुलामी का दंश झेलने को मजबूर हो जाता है और वह बिना बुद्धि का प्रयोग किये अपनी कठिन मेहनत की कमाई स्वेच्छा से ही परजीवी वर्ग को लुटाता रहता है, तथा भावी जीवन सुधारने हेतु, स्वर्ग प्राप्त करने हेतु, प्रारब्ध अथवा पूर्वजन्म के पापों से मुक्त होने हेतु, भ्रामक अंधविश्वास में अपने जीवन की शान्ति खो देता है।

संविधान में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समता का उल्लेख है। ईश्वर कृत वर्ण व्यवस्था, जो आज जाति व्यवस्था का रूप ले चुकी है, मूलतः विषमता पर आधारित है। सीढ़ीनुमा ऊँच-नीच पर आधारित वर्ण व्यवस्था पूर्ण रूप से समता को नकारती है।हिन्दू धर्मग्रंथो में इन्सान को इन्सान न कहकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहा गया है। कमशः ब्राह्मण सबसे उच्च और शूद्र सबसे नीच है। जीवन के हर क्षेत्र में उठने-बैठने, बोलने-चालने, खाने-पीने और रोटी-बेटी के संबंध स्थापित करने में यह विषमतावादी प्रवृति आज भी सामाजिक समरसता के लिए घातक सिद्ध हो रही है। तथाकथित नीच कहे जाने वाले लोगों में हीन भावना भर दी गयी है। वे मानसिक गुलाम बन चुके हैं। जहां सर्वगुण हीन पतित ब्राह्मण को पूज्य बताया जाये और सर्वगुण सम्पन्न शूद्र को नीच और तिरस्कृत माना जाये, जहां ब्राह्मण सभी अधिकारो से पूर्ण हो और शूद्र मानवीय मौलिक अधिकारों से वंचित हो, वहां सामजिक समता-समरसता की बात बेईमानी है। जहां बराबरी नहीं, वहां बंधुता-भाईचारा को कोई ठौर ही नहीं और जहां भाईचारा नहीं, वहां

एकता अखण्डता सिर्फ एक छलावा है। संविधान का खुला विरोध है।

जहाँ तक लैंगिक समानता के लिए सविधान का आग्रह है, हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में नारी आज के प्रगतिशील युग में भी पुरूष की अनुचारी ही बनी है। चूँकि ईश्वरवाद ईश्वर और धर्म को एक दूसरे के पूरक बताता है, इसलिए बेचारी नारी धार्मिक संस्कारों की विषमतावादी मार की शिकार बनी हुयी है। धर्मग्रंथों ने नारी को पुरूष की दासी, सेविका, भोग्या, पाप की जड़, नर्क का द्वार, सहज अपावन, जड़ जैसे अमानवीय शब्दों से पुकारा है। परिणामतः नारी के मन में हीन भावना फूल-फल रही है। नारी शोषण, उत्पीड़न और बलात्कार का शिकार होकर नारकीय जीवन जीने के लिए विवश है। उसे अबला कहकर बलि की वेदी पर भी चढ़ाया जाता है। आज कन्या-भ्रूण हत्या संविधान को तहस-नहस करती है। यह लैंगिक भेद-वृत्ति ईश्वरवादी सोच से उत्पन्न मानसिक गुलामी और हीन भावना का ही परिणाम है।

अस्पृश्यता और छुआछूत की भावना आज भी बरकरार है। जब हम आज इक्कीसवीं सदी में आजादी के 65 वर्ष बाद अपने को प्रगतिशील होने का दावा करते हैं और समय-समय पर संविधान की दुहाई भी देने लगते हैं, तब भी मंदिरों में प्रवेश, पूजा-पाठ करने तथा मंदिर का पुजारी बनने में छुआछूत की भावना को दूर नहीं कर पाये। हम आज भी दकियानूसी विचारों के दास हैं। विष्ठा भोगी कुत्ता को हम अपनी रसोई में पाकर धर्मभ्रष्ट नहीं होते, किंतु यदि साफ-सुथरा शूद्र हमारे आंगन में पहुच जाये तो हम अपने घर की सफाई करने लगते हैं। रोटी-बेटी का संबंध तो बहुत दूर है। कारण स्पष्ट है कि हमारे दिमाग में ईश्वरवादी वर्णव्यवस्था के रोगाणु सक्रिय हैं जो संविधान विरूध है।

आज शिक्षा का प्रचार-प्रसार है। शिक्षा ही हर समस्या का हल है। भारत में अनिवार्य शिक्षा का नारा दिया जाता है। चूँकि सरकार में सभी शासक और प्रशासक सिर्फ ईश्वरवादी मानसिकता के हैं अतः वे नहीं चाहते कि आम जनता शिक्षित होकर अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग कर सके। यदि लोग शिक्षित होकर अपने अधिकार माँगने लगेंगे तो फिर उच्च पदस्त लोगों की सामंतशाही खत्म हो जायेगी। यही कारण है कि सरकार दोहरी शिक्षा नीति चलाकर अमीरों के बच्चों को मँहगे स्कूल और गरीब बच्चों के लिए सरकारी स्कूल खोल रही है। गरीब बच्चे तो शिक्षित नहीं, साक्षर किये जा रहे हैं। वस्तुतः यह हमारे संविधान की मूल भावना के खिलाफ है।

ईश्वरवाद ने धार्मिक असहिष्णुता को जन्म दिया। भारत में अनेक धर्म हैं। हर धर्म का अलग ईश्वर है। सभी धर्मो के अनुयायी अपने-अपने धर्मो के खूँटों से बँधे हैं। सभी धर्मो की अपनी अलग परिधि है। हर व्यक्ति उस परिधि के अन्दर ही चक्कर काटता रहता है। उसके बाहर निकलना यदि असम्भव नहीं तो दुर्लभ जरूर है। सबके अलग-अलग ईश्वर, अलग-अलग कर्मकाण्ड, प्रतीक और जीवन मुल्य हैं। सबके अलग-अलग विश्वास और आस्था के मान बिन्दु हैं। हम रोज ''हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई-आपस में हैं भाई-भाई'' का नारा लगाते हैं। नारा स्वयं यह उद्घोष करता है कि ये सब भाई-भाई नहीं हैं और न हो सकेंगे क्योंकि उनमें धार्मिक कट्टरता जन्य आपसी दूरियाँ इतनी अधिक पैदा हो चुकी हैं कि सामाजिक समरसता संभव ही नहीं। विभिन्न धर्मो ने मानव को मानव से तोड़ा, जोड़ा नहीं, आपसी घृणा पैदा की है, प्यार नहीं, सामाजिक विखराव पैदा किया, लगाव नहीं। अतः संविधान में उल्लिखित राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए ईश्वरवाद एक बड़ा खतरा बना है।

जहाँ तक समाजवादी व्यवस्था की बात है तो यहाँ पूँजीवाद हावी है। वहाँ गरीब और अधिक गरीब होता जा रहा है तथा अमीर और अधिक अमीर हो रहा है। पूरें देश में दो वर्ग हैं, एक कमेरा और दूसरा लुटेरा। यहाँ दो संस्कृतियाँ हैं- एक

ब्राह्मणी संस्कृति और दूसरी श्रमण संस्कृति। आज देश में ब्राह्मण संस्कृति का बोलबाला है। आज श्रमण संस्कृति को हेय समझा जाता है। श्रमण संस्कृति का अर्थ है वह जीवन शैली जिसमें श्रम और श्रमिक का सम्मान हो। इसके बिल्कुल उल्टे बाह्मण शैली का अर्थ है वह जीवन शैली जिसमें बिना श्रम किये खाने वाला पूज्य हो, शारीरिक श्रम को हीन माना जाये, दानी को नीच और दान लेने वाले को उच्च, अपनी मेहनत से पैदा करके पेट भरने वाले को अपमानित और मुफ्तखोर को सम्मानित, इंसान को इंसान कहने वाले को नास्तिक और जड़ पत्थर को भगवान कहने वाले को आस्तिक कहा जाए, और जिसमें रोज नये-नये देवी-देवताओं की फसल उगे तथा कल्पित ईश्वरकृत विषमतामूलक वर्णव्यवस्था को आदर्श सामाजिक व्यवस्था माना जाये। ऐसी बाह्मणवादी संस्कृति के रहते समाजवाद की कल्पना करना बौद्धिक कंगाली है।

ऐसी विषम परिस्थिति में सामाजिक न्याय पाना एक आदमी के लिए नभ से तारे तोड़ने के समान ही है। जहाँ धनी-गरीब, शोषक-शोषित, शासक-शासित, ऊँच-नीच, छूत-अछूत, हिन्दू-मुस्लिम, पुरूष-नारी के बीच इतनी विशाल खाईं हों, वहाँ सामाजिक न्याय कैसे सम्भव हो सकता? यहाँ सफेदपोश अपराधियों को शासन-प्रशासन 'क्लीन चिट' देकर खुला अपराध करने की छूट दे देता है जबकि बेचारा निर्दोष मेहनतकश आम आदमी जेल में ही मर जाता है। जीवन के हर क्षेत्र में जो भी अपराध हो रहे हैं, या जिन्हें सामाजिक रोग कहते हैं उनकी प्रेरणा का स्त्रोत ईश्वरवाद ही है, क्योंकि ईश्वर के अवतार राम और कृष्ण कमशः ''सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं-जनम कोटि अघनासहिं तबहीं'' और ''सर्वघर्मान् परित्यज्य मां एकं शरणं व्रज-अहंत्वां सर्वपापेश्योमोक्षयिष्यामि माशुचः'' कह कर यह उद्घोष करते हैं कि कोई भी व्यक्ति चाहे जितना कुकर्मी, पापी या अपराधी हो, बस मेरी शरण में आकर मेरा भक्त बन जाये, उसके सारे अपराध खत्म होकर वह पुण्यात्मा हो जायेगा। भला जब ईश्वर जैसी सत्ता अपने भक्त को इतनी सशक्त अकाट्य 'क्लीन चिट' दे देता है तो फिर दूसरा कौन उसे दण्ड दे सकता है? यही कारण है कि आज एक से एक बड़े अपराधों की झड़ी लगी है और यह निर्विवाद सत्य है कि उन अपराधियों में 99ः ईश्वरवादी ही हैं।

सबसे मजे की बात तो यह हैं कि ईश्वरवाद ने मनुष्य की बुद्धि को कुन्द कर दिया है। वह तो यही सोचता रहता है कि मनुष्य असहाय है, मनुष्य स्वयं कुछ नहीं कर सकता। जो ईश्वर चाहता है वह मनुष्य से करवाता है। मनुष्य ईश्वर के हाथ की सिर्फ एक कठपुतली है। इसलिए मनुष्य थोड़ा-बहुत कहने भर को हाथ-पैर चलाता है लेकिन परिणाम के विषय में नहीं सोचता। उसकी तो स्पष्ट मान्यता हैं कि जब लूट-खसोट, अपराध, दुराचार-अनाचार, शोषण, उत्पीड़न सारी सीमायें तोड़ देंगे, तब ईश्वर स्वयं प्रकट होकर देश में खुशहाली, सुख-समृद्धि और सुख-शांति स्थापित कर देगा। ऐसी मानसिक स्थिति में मनुष्य क्यों कुछ करे? भारत के राष्ट्र-संविधान की चिन्ता ही किसको है? यहाँ तो सबके दिलो में, दिमागों में मनु का संविधान जड़ जमाये घुसा है।

हमारा संविधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की बात करता है जिसका भाव है कि मानव को चाहिए कि वह जीवन में हर बात और घटना को क्या, क्यों और कैसे प्रश्नों को तर्क-कसौटी पर कसे। यदि खरी उतरे तो माने अन्यथा नहीं। हर कार्य या घटना के पीछे कोई न कोई कारण होता है। बिना कारण कोई कार्य या घटना नहीं हो सकती। ईश्वरवाद कार्य-कारण संबंध को स्वीकार नहीं करता। ईश्वरवाद में 'बिन जाने मान लेने' की पद्धति स्वीकार्य है। वहाँ तो चमत्कार को ही नमस्कार किया जाता है। विवेक और तर्क को कोई भी ठोरे नहीं। इस प्रकार ईश्वरवाद ने समाज में अंधविश्वास को कूट-कूट कर भर दिया हैं। केवल अनपढ़ ही नहीं, पढ़े लिखे लोग भी अंध विश्वासी हैं। ईश्वरवादियों

द्वारा खूब प्रचार प्रसार भी किया जाता है। देखियेन, आज मनुष्य चन्द्रमा पर जा चुका है, फिर भी उसकी पूजा होती है। लोग मंगल पर पैर रख चुके हैं किन्तु यहाँ मंगल के अनिष्ट से बचने हेतु दान दिया जाता है सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण लगने पर लोग दान-दक्षिणा देते हैं। इसके अतिरिक्त स्वर्ग-नर्क की मान्यता, पत्थरों की पूजा, भोग, चढ़ावा, काँवर चढ़ाना, मृत पितरों को श्राद्ध-पिण्डादान, विवाह में लग्न ढूँढ़ना, गणेश को दूध पिलाना इत्यादि नाना प्रकार के अंधविश्वासों ने मनुष्य को दिमागी दिवालिया बना दिया है।

असल बात यह है कि अंधविश्वास तो अज्ञान से भी खतरनाक है क्योंकि अज्ञान को तो ज्ञान के प्रकाश से मिटाया जा सकता है किन्तु अंधविश्वास को तो लोग सच्चा ज्ञान ही मान बैठे हैं और उसके पक्ष में उधार लिये हुये तथ्यहीन तर्क प्रस्तुत करके सत्य को झुठलाया करते हैं। जिस संसार में रहते हैं, देखते-सुनते हैं उसके यथार्थ को मिथ्या कहते है और जिस ईश्वर को आजतक न किसी ने देखा न जाना उसे सिर्फ अन्धश्रद्धा वश सत्य मानकार उसको प्रसन्न रखने हेतु अपने जीवन की पूरी कमाई मुफ्तखोरों को देने में संकोच नहीं करते।

वस्तुतः इस संसार में सबसे बड़ा और खतरनाक अंधविश्वास है कल्पित ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना। मेरा विश्वास है कि यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मनुष्य तर्क बुद्धि से ईश्वर के अस्तित्व को नकार दे तो फिर न ईश्वर रहेगा और न ईश्वरवाद। तब ईश्वरवाद जन्य सारी विषमतायें और विद्रूपतायें स्वतः समाप्त हो जायेंगी और तब संविधान के पालन में कोई कठिनाई नहीं होगी। मानव समाज में 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त फूलेगा और फलेगा। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि थोड़ा सा ईश्वर के अस्तित्व पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार कर लें।

ईश्वर का अस्तित्व नितांत काल्पनिक है क्योंकि पूरे विश्व के धर्मगुरूओं, चिन्तकों और मनीषियों के ईश्वर संबंधी निष्कर्ष परस्पर मेल नहीं खाते। ईश्वर के संबंध में जितनी व्याख्यायें हैं वे सब व्यक्तिगत अवधारणा-मान्यता की अभिव्यक्ति हैं। अतः यदि एक ही ईश्वर होता तो सबकी मान्यता समान होतीं। इससे यही निष्कर्ष है कि या तो अनेक ईश्वर हैं अथवा ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है।

यद्यपि भारतीय दर्शनों ने ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने की अनेक प्रमाण-युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं किन्तु यथार्थ में कोई भी प्रमाण ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने में सक्षम नहीं है।

भारत में ही जैन तथा बौद्ध दर्शनों ने तो ईश्वर के अस्तित्व पर अनेक गम्भीर प्रश्न चिन्ह लगाये हैं जिनका उत्तर आजतक ईश्वरवादियों ने नहीं दे पाया है। चार्वाक ने तो 'ब्रह्म मिथ्या, जगत् सत्यं' कहकर ईश्वर सत्ता को पूर्ण रूपेण ही नकार दिया।

वैदिक ऋषियों ने भी ईश्वर को जानने की जिज्ञासा तो व्यक्त की परन्तु किसी ने भी ईश्वर को देखने का दावा नहीं किया। आज तो अनेक स्वयं भू भगवान होने का दावा करते हैं और झूठे चमत्कार दिखाकर अंधश्रद्धालु जनता को ठग कर स्वर्ण-सुरा-सुन्दरी का उपभोग करके मौज छान रहे हैं। ऐसे चमत्कारी भगवानों को तो डाक्टर टी. कैवूर ने चुनौती दी थी लेकिन किसी ने भी उनकी चुनौती स्वीकार नहीं की।

कुछ लोगों का कथन हैं कि कुछ वैज्ञानिक भी ईश्वर की सत्ता मानते हैं। यह कथन ही पूर्णतः अवैज्ञानिक है क्योंकि विज्ञान का ज्ञान रखना अलग बात है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना बिल्कुल अलग बात है। सच्चा वैज्ञानिक कभी भी ईश्वरवादी हो ही नही सकता क्योंकि उसके अनुसार प्रत्येक धटना का कोई न कोई भौतिक कारण होगा। कोई ईश्वरवादी कभी सच्चा वैज्ञानिक नहीं हो सकता क्योंकि उसके लिए हर घटना के पीछे ईश्वर ही कारण होता है।

जहाँ तक उत्पत्तिकारक की बात है, तो यह

संसार किसी भी स्रष्टा की सृष्टि नहीं है, वरन् पदार्थ की स्वतः संचालित सतत गतिशील प्रक्रिया का परिणाम है। मनुष्य भी पदार्थ की श्रेष्ठतम संगठित संरचना है अतः मनुष्य में भी पदार्थ के गुणों के अनुसार ही परिवर्तन होता है। संसार में सारी घटनायें भौतिक कारणों से होती हैं, उनके होने, न होने में किसी अलौकिक सत्ता या ईश्वर का कोई भी हस्तक्षेप नहीं है। प्रकृति के नियम और गुणसूत्रों के आधार पर मानव शरीर बनता या बिगड़ता है।

कुछ लोग ईश्वर को ही प्रकृति या शक्ति मानने की जिद करके ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने का असफल प्रयास करते हैं। प्रकृति भौतिक, दृश्य, उपयोगी है। प्रकृति के निश्चित नियम हैं उनका पालन करने में हित है। यदि प्रकृति के नियमों का पालन न करें तो प्रकृति दंड दे देती। प्रकृति में कोई रहस्य नहीं, कोई चमत्कार नहीं। प्रकृति को इन्ही आँखों से देखा-समझा जा सकता है, वशर्ते कि हमारे पास वैज्ञानिक उपकरण संसाधन और मानसिक तत्परता हो। प्रकृति को जानने के लिए 'दिव्य चक्षुओं' की जरूरत नहीं है। शक्ति भी भौतिक है। उसका उत्पादन, संग्रह और व्यय किया जाता है। शक्ति भी प्रकृति का एक रूप है। ईश्वर में उपर्युक्त कोई भी गुण नहीं पाये जाते। अतः ईश्वर को प्रकृति अथवा शक्ति कहना आम आदमी को भ्रमित करने के लिए एक छलावा है, एक साजिश है।

आज के वैज्ञानिक युग में काल्पनिक ईश्वर की मौत हो जानी चाहिए थी वह आज भी जिन्दा है क्योंकि अधिकांश लोग अपने को प्रबुद्ध, दार्शनिक और तर्कशील सिद्ध करने का दावा तो करते है और दैनिक जीवन में किसी भी बात को बिना तर्क स्वीकार भी नहीं करते लेकिन वे ही ईश्वर के सम्बन्ध में तर्क और विवेक का प्रयोग करना वर्जित मानते हैं, क्योंकि धर्मग्रन्थों में ईश्वर और ईश्वरीय धर्म के विषय में तर्क करना पूर्णतः प्रतिबंधित है। प्रतिबंध का कारण यही है कि ईश्वरवादियों के पास ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के ठोस, यथार्थ, तर्कसंगत एवं तथ्यपूर्ण प्रमाण नहीं हैं।

वैसे तो लेखक का स्वतंत्र विचार है कि यदि ईश्वर है और वह सर्वशक्तिमान है तो उसे आम चौराहे पर खड़ा कर दिया जाये और फिर उसके ऊपर तर्क के तीरों से प्रहार किया जाये। यदि वह स्वयं सक्षम है तो वह स्वयं अपनी रक्षा कर लेगा, किसी अंध भक्त द्वारा उसकी रक्षा की जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि वह असक्षम है, कमजोर है तो वह मर जायेगा तथा वहीं दफना भी दिया जायेगा। फिर ऐसे मरणशील ईश्वर की लोगों को जरूरत भी क्या है?

अन्त में हम कह सकते हैं कि आज डार्विन के विकासवाद की महत्ता विश्व के सभी वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। डार्विन सही सिद्ध हुये, फिर भी लोग विकासवाद का विरोध करते हैं, जबकि झूठे स्रष्टा और सृष्टिवाद को भ्रामक दलीलें देकर जिन्दा किये हैं। हिटलर के मंत्री गोबेल ने कहा था कि यदि किसी झूठ बात की आवृत्ति सौ बार कर दी जाए तो लोग उस झूठ को भी सच मान लेते हैं। यहाँ सृष्टिवाद को तो लाखों साधू-सन्त, पुजारी और उपदेशक, टी.वी. चैनल रेडियो और अख्बार रोज करोड़ों बार दोहराते रहते हैं। इसलिए ईश्वर और ईश्वरवाद आज भी जीवित है।

अतः यह आवश्यक है कि हम सभी लोग अपने राष्ट्र के संविधान को सुचारू रूप से लागू होने राष्ट्र की एकता अखण्डता एवं सम्प्रभुता आक्षुण्ण बनाये रखने, तथा आम नर-नारी के जीवन में खुशहाली लाकर समता मूलक सामाजिक व्यवस्था प्रस्थापित करने हेतु ईश्वर को नकार दे तभी ईश्वरवाद जन्य विषमतावादी वर्ण व्यवस्था (जातिप्रथा), मनगढ़ंत आत्मा एवं उसका पुनर्जन्म, भाग्यवाद, स्वर्ग-नर्क, मोक्षादि सभी प्रत्यय और शोषणवादी सभी धार्मिक कर्मकाण्डों एवं संस्कारों का निर्मूलन संभव होगा।

रामसिंह 'प्रेमी', हरदोई (उ.प्र.)
मो.- 09450859504

जीवन का सच

उपेन्द्र कुमार उन्मुक्त,, 090317-02581

संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों की बात करें तो दुनियां भर में दो करोड़ लोग अब भी गुलाम है। इन गुलामों में बधुआ मजदूरों को भी शामिल किया गया है। ऐसे मजदूरों की संख्या भारत, पाकिस्तान तथा अन्य दक्षिण एशियाई मुल्कों में अधिक है। यहाँ बंधुआ मजदूर की सबसे बड़ी वजह कर्ज है। खेती के काम में लगे मजदूर शुरू में गुजारे के लिए और फिर आगे खाद, बीज, रसायन आदि के लिए कर्ज लेते है। धीरे-धीरे कर्ज इतना बढ़ जाता है कि फसल की कटाई के बाद भी उसे चुकाना संभव नही होता। महाजन लोग कर्ज न चुका पाने की सजा जीवन भर चौबीसो घंटे की गुलामी के रूप में देता है। भारत के गरीब राज्यों में शुमार बिहार में पिछले वर्ष का एक मामला काफी चौंकाने वाला रहा है। यहाँ जवाहर माँझी ने अपने घर की एक शादी के लिए 40 किलो चावल गाँव के भू-स्वामी से उधार लिए थे, जिसके एवज में वह तीस बरस से उस भू-स्वामी के खेत में मजदूरी करता रहा। बंधुआ मजदूरों का कर्ज कई बार उन्हें गुर्दे बेचने के लिए भी बाध्य करता रहा। आज अवैध अंग-व्यापार की एक बड़ी वजह बंधुआ मजदूरों की बुरी हालत है। अन्तरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन हयूमन राइट्स वॉच ने एक रिपोर्ट में बताया है कि प्रवासी लोगों खासकर घरेलू नौकरानियों के साथ अरब देशो में गुलामों सा ही दुर्व्यवहार होता है वहाँ मालिकों द्वारा पासपोर्ट जब्त कर लिए जाते हैं और सारा समय उन्हें मालिक की मर्जी पर ही गुजारना होता है। पश्चिमी देशो में भी इस तरह की अमानवीय घटना होती है। हाल ही में भारतीय मूल के एक दंपत्ति को दो घरेलू नौकरानियों के साथ गुलामों की तरह व्यवहार करने पर दंडित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने गुलामी प्रथा पर स्पष्ट रूप से कहा है कि जहाँ मसला राजनीतिक नेता और न्यायधीशों के पद पर बैठे जमींनदारों का होता है वहाँ रास्ते में बड़ी अड़चने आती हैं।
दरअसल बदले हालतों में गुलामी प्रथा थोड़े भिन्न रूप में सही किन्तु अपनी मौजूदगी का अहसास लगातार करा रही है। बेरोजगारी, भुखमरी, बीमारी, वस्त्र, आवास आदि जैसी वैश्विक समस्या के रहते इसका खात्मा भी संभव नहीं। इसे खत्म करना है तो नवजनवादी आन्दोलन को मंजिल तक पहुँचाना होगा।

जीवन का सच जानने के लिए चार्ल्स राबर्ट डार्विन के सिद्वान्त को भी जानना आवश्यक है। विकासवाद के संस्थापक चार्ल्स डार्विन का जन्म 1809 ई० में इंलैण्ड में हुआ था। डार्विन बचपन से ही पशु-पक्षियों, फूलों एवं पेड़-पौधों का एकत्र करके रखने के शौकिन थे। 1831 ई० में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद उन्होंने एक लम्बी समुद्री यात्रा की। इस यात्रा क दौरान डार्विन ने बहुत अधिक पौधों एवं जन्तुओं के नमूने संग्रह किये। इन्हीं नमूनो के आधार पर उन्होंने एक लम्बी वैज्ञानिक रिपोर्ट लिखना शुरू किया। वह पुस्तक लगभग बीस वर्षो में पाँच भागों में तैयार हूई। उन्होनें कठिन परिश्रम, मंथन एवं अध्ययनों के आधार पर 1859 ई० में अपनी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक जातियों की उत्पत्ति (ऑरीजीन ऑफ स्पेशीज) को प्रकाशित कर लोगों को विकासवाद के सिद्वान्तों पर विश्वास दिलाया और विकासवाद की स्थापना की।

डार्विन का विकासवाद प्राकृतिक चयनवाद पर अधारित है। प्राकृतिक चयनवाद की सम्पुष्टि निम्न तीन सिद्धान्तों पर अधारित है :-

क अस्तित्व के लिए संघर्ष
ख विभिन्नताएँ एवं उनका वंशानुगमन
ग सबसे उत्तम का जीवित रहना

क अस्तित्व के लिए संघर्ष :-

पौधों तथा जन्तुओं में संतान उत्पन्न करने की क्षमता इतनी अधिक होती है कि उसकी कोई सीमा रेखा नहीं खीचीं जा सकती। एक मक्खी डेढ़ महीनें में लगभग बीस करोड़ संतान उत्पन्न करती है। अगर पैदा होने पर ये सभी मक्खियाँ जीवित रहें तो कुछ ही दिनों में धरती पर तिल रखने की जगह

नहीं रहेगी। दूसरी तरफ धरती पर भोजन की मात्रा, जल, स्थान आदि सीमित मात्रा में हैं। ऐसी स्थिति में जो जीव पैदा होते है, उनमें जीवित रहने के लिए आपस में कठोर संघर्ष करना पड़ता है। इस संघर्ष में जो जीव कमजोर होते हैं, वे और अधिक कमजोर होकर अंत में समाप्त हो जाते है और जो जीव शक्तिशाली होते है वे जीवित रह पाते है।
इसी को आस्तिव के लिए संघर्ष कहते है।

ख विभिन्नताएँ एवं उनका वंशानुगमनः-

किसी पौधे या पशु के द्वारा उत्पन्न सभी संतान प्रत्येक दृष्टि से बिल्कुल एक जैसी नहीं होती है। एक माता-पिता के संतान में ही ही कोई अधिक गोरा, लम्बा, तथा सुन्दर और कोई काला, छोटा तथा कुरूप हो जाता है। इन्हीं विचित्रताओं को भिन्नताएँ कहते है। ये विभिन्नताएँ जन्मजात होती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ में जाती है, जिसें वंशानुगमन कहते है।

ग सबसे उत्तम का जीवित रहना :-

पैदा होते ही सभी जीवों की संतानो में जीवन के लिए संघर्ष होता है। इस संघर्ष में जो शक्तिशाली होता है, वह आगे आता है। उसमें जीने की क्षमता सबसे अधिक होती है, इसलिए वह जीता है और शेष कमजोर रहने के कारण संघर्ष में पीछे छूट जाते है और अंत मे नष्ट हो जाते है। इसी संघर्ष में सफल होने के लिए मानव के बच्चे जन्म लेते ही भोजन के लिए रोने लगते हैं। किसी आवादी को स्थिर रखने का काम प्रकृति स्वयं करती है और सिर्फ सर्वोतम को जीने की सभी सुविधाएँ देकर कमजोर को चुन- चुन कर नष्ट कर देती है। इसी को प्राकृतिक चयनवाद कहते है।

इस प्रकार डार्विन ने विकासवादी ही सिद्धान्त के आधार पर यह सिद्ध करदिया है कि संसार की कोई भी जीव या वस्तु ईश्वर द्वारा नहीं बनायी गयी है बल्कि सब ऐतिहासिक विकास का परिणाम है।

चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त हमें यह बताते है कि पृथ्वी पर सरल जीवों से जटिल स्वरूप बाले जीवों का विकास किस प्रकार हुआ। मेंडल के प्रयोगों से हमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में लक्षणो की वंशानुगति की कार्यविधि का पता चला। परन्तु दोना ही यह बताने में असमर्थ रहे कि पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई अर्थात इसका अविर्भाव किस प्रकार हुआ।

एक ब्रिटिश वैज्ञानिक जे० बी० एस० हाल्डेन (जो बाद में भारत के नागरिक हो गए थे) ने 1929 में यह सुझाव दिया कि जीवों की सर्वप्रथम उत्पत्ति उन सरल अकार्बनिलक अणुओं से ही हुई होगी जो पृथ्वी की उत्पत्ति के समय बने थे। उसने कल्पना की कि पृथ्वी पर उस समय का वातावरीण, पृथ्वी के वर्तमान वातावरण से सर्वथा भिन्न था। इस प्राथमिक वातावरण में संभवतः कुछ जटिल कार्बनिक अणुओं का संश्लेषण हुआ, जो जीवन के लिए आवश्यक थे। सर्वप्रथम प्राथमिक जीव अन्य रासानिक संश्लेषण द्वारा उत्पन्न हुए होंगे। यह कार्बनिक अणु किस प्रकार उत्पन्न हुए। इसके उत्तर की परिकल्पना स्टेनले एल० मिलर तथा हेराल्ड सी० उरे द्वारा 1953 में किए गए प्रयोगों के आधार पर की जा सकती है। उन्होंने कृत्रिम रूप से ऐसे वातावरण का निर्माण किया जो संभवतः प्राथमिक प्राचीन वातावरण के समान था। (इसमें अमोनिया, मिथेन तथा हाइहड्रोजन सल्फाइड के अणु थे परन्तु ऑक्सीजन के नहीं) पात्र में जल भी था। इसे 1000 सेल्सियस से कुछ कम ताप पर रखा गया। गैसों के मिश्रण में चिनगारियाँ उत्पन्न की गई- जैसे आकाश में बिजली। एक सप्ताह के बाद 15 प्रतिशत कार्बन (मिथेन से) सरल कार्बनिक यौगिक में परिवर्तित हो गए। इनमें एमीनों अम्ल भी संश्लेषित हुए जो प्रोटिन के अणुओं का निर्माण करते है।

अंधविश्वासी लोग जीवों की उत्पत्ति के संबंध में अवैज्ञानिक विचार फैलाकर कमजोर वर्ग का सभी तरह के शोषण करते है। आज जनता को अपनी भलाई-बुराई भी मालुम होनी चाहिए। जनता को यह मालुम होना चाहिए कि राजनीति के अखाड़े में कैसे - कैसे दाँव-पेंच खेले जाते है।

आज जिस तरह का मानव जाति का ढ़ाँचा दिखाई पड़ता है, असल में सब दोष उसी ढ़ाँचे का है। जब तक वह ढ़ाँचा तोड़कर नया ढाँचा नही बनाया जाता-तब तक दुनियाँ मे मानवीय समस्याएँ बनी रहेगी। ढ़ाँचा तोड़ना भी एक आदमी के वश

का बात नहीं है, इसके लिए उन सब लोगों को काम करना है, जिनको इस ढ़ाँचें ने आदमी नहीं रहने दिया।

अभी तक गरीबी-रेखा से नीचे रहने वालों की पहचान भी सही से नही हो पायी है। लेकिन सरकार और उसकी एजेंसिया प्रमाणिक रूप से दावा करती है कि ऐसे लोगों की तादाद काफी कम हुई है। आज देश के कई राज्यों में अनाज की कमी से लोगों के मरने की घटनाएँ घट रही है। आज गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों में से एक वर्ग ऐसा भी है जिसका बी० पी० एल० कार्ड नहीं बना है। गरीबों को वितरित किया जाने वाला सामान आज खुले बाजार में बिक रहा है। राशन की दुकानें ऐसे लोगों को अलॉट होती है, जिनके खिलाफ कोई कुछ बोल नहीं पाता। आज तमाम् संसदीय दल गरीबों की जरूरत सिर्फ वोट के समय समझती है, और ऐसे मौकों पर भी उन्हें जातियों, उपजातियों और कुनबो में बाँटकर उनके वोट बटोरने वाले सौदागरों की देश में कमीं नही है।

आजादी के 65 वर्ष होने के बाद भी यदि कुछ लोग सड़े आमों की गुठली, पौधो की जड़े, कीड़े-मकोड़े और अभक्ष्य अखाद्य पदार्थ खाकर जीवन बसर कर रहे हैं तो यह शर्मनाक स्थिति है और भारतीय जनता के प्रति घोर अपराध है, अन्याय है, जुल्म है। एक तरफ करोड़ो- अरबों रूपये के घोटाले हो रहे है और दूसरी ओर लोग भुखमरी के शिकार हो रहे है।

आज भारत की आर्थिक नीतियाँ विदेशी शक्तियों द्वारा निर्देशित है, इसलिए उदारवादी आर्थिक नीतियों के अपनाएँ जाने से भारतीय उद्योग-धन्धे विदेशी उद्योगों को मुकाबला करने के बजाय संकट में फसते जा रहे है। भारत का मंदी का शिकार होना हमारे लिए चिंता की बात है। हमारे देश के औद्योगिक उत्पादन में 95 प्रतिशत हिस्सेदारी विदेशी तकनीक की ही है। आज भारतीय शासक वर्ग जहाँ कोई समस्या आयी, तो तुरंत विदेशी कम्पनियों की शरण में चले जाते हैं। आज देश में बीस हजार से भी अधिक तकनीकी समझौते विदेशी कम्पनियों से किये जा चुके है। इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। हमने बूट पॉलिश, टूथ पेस्ट, रंग-रोशन से लेकर च्युंइंगम बनाने की तकनीक के लिए भी विदेशी कम्पनियों से समझौते किये है। तकनीक के लिए विदेशी कम्पनियों से अन्धा-धुंध समझौते के कारण नयी गुलामी का खतरा पैदा हो गया है। तकनीक के स्थायी आयात से देश के लोगों का जीवन-स्तर नहीं सुधर सकता है और न ही देश की आर्थिक प्रगति हो सकती है। देशी उपकरण का इस्तेमाल करके ही विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश को आत्म-निर्भर बनाया जा सकता है।

विज्ञान और तकनीकी संस्थानों के तथाकथित अगुआ वैज्ञानिक, दलाल नौकरशाह और सम्राज्यवादी, सामंतवादी, राजनीतिज्ञ ही देश की प्रगति में बाधक है। देश की संसद में परियोजना पर कभी बहस नही होती है। भारत में अबतक हुई वैज्ञानिक प्रगति से केवल थोड़े से धनी लोगों को ही लाभ पहुँचा है। हमें बड़े पैमाने पर ऐसी उन्नत तकनीक लानी चाहिए अथवा ईजाद करनी चाहिए, जो पूँजी, उर्जा और कच्चे माल की बचत कर सकें। तभी भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ सकेगा।

स्त्रोत :-

हिन्दूस्तान दिनांक - 12.01.2007 पृष्ठ सं० -14
प्रभात खबर दिनांक - 03.12.2010 पृष्ठ सं० -10
दैनिक जागरण दिनांक-21.03.2010 पृष्ठ सं० -20
हिन्दूस्तान दिनांक - 12.01.2007 पृष्ठ सं० -06
प्रभात खबर दिनांक - 29.09.2006 पृष्ठ सं० -06
राष्ट्रीय सहारा दिनांक- 11.09.2008 पृष्ठ सं० -08
विश्व का इतिहास - पृष्ठ सं० 349 से 351 तक
विज्ञान कक्षा 10 पृष्ठ सं० 164

(एन० सी० आर० टी०)

वसंत बाबू राव का पुनः जीवित होना

प्रो. अब्राहम टी. कोवूर

विशेष नोटः– ''तर्कशील लहर के प्रकाश स्तंभ प्रो. अब्राहम टी. कोवूर ने दुनियां भर के देव पुरूषों, मुल्ला-मौलवियों, ज्योतिषियों व पादरियों इत्यादि, जो स्वयं को कथित चमत्कारिक अथवा दैवीय शक्तियों के स्वामी होने का दावा करते थे, को 23 शर्तों की खुली चुनौती दी थी। जिसके पश्चात् सभी कथित देवपुरूषों के हाथ-पांव फूल गए थे। प्रो. कोवूर ने समय-समय पर अपने अनुभव लेखों के प्रारूप में लिखे, जो विभिन्न समाचार पत्रों व पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। उन द्वारा लिखे गए कुछ लेखों की दो पुस्तकें 'और देव पुरूष हार गए' एवं 'देव और दानव' इस से पूर्व हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी हैं। अब हम प्रो. कोवूर के कुछ लेखों की एक श्रृंखला आरम्भ कर रहे हैं, जो अभी तक हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुए। बाद में इनको एक नई पुस्तक का रूप भी दिया जा सकता है।'' ----- (सम्पादक मण्डल)

निम्नलिखित खबर बहुत से भारतीय समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई थी, ''पूना निवासी वसंत बाबू राव जिसकी आयु 48 वर्ष थी, तपेदिक व मधुमेह का मरीज था। 6 जनवरी, 1965 को उसी छाती में तेज दर्द होने के कारण उसे शीघ्रातिशीघ्र शहर के एक नर्सिंग होम में दाखिल करवा दिया गया। परन्तु दाखिल होने के पश्चात् जल्दी ही उसकी मृत्यु हो गई। नर्सिंग होम के सर्टिफिकेट के अनुसार उसकी मृत्यु दिल फेल होने के कारण हुई थी।

सायंकाल को उसके भाई उसकी लाश को टैक्सी में डाल कर ले गए।

शहर से एक मील बाहर जा कर जब टैक्सी गाव वाली टूटी-फूटी सड़क पर से गुजर रही थी तो एक झटका टैक्सी को ऐसा लगा जिससे लाश का सिर बहुत ज़ोर से खिड़की में जा कर लगा। जब लाश ने दाएं हाथ से अपने सिर की ओर इशारा किया तो टैक्सी में बैठे हुए सभी व्यक्ति डर गए। डरे हुए भाईयों ने जल्दी से कार मोड़ी तथा पुनः उसे उसी नर्सिंग होम में ले गए।

''दो दिनों के पश्चात् स्वर्गवासी श्री बाबू राव को पूर्णतः तन्दरूस्त होने के उपरांत, नर्सिंग होम से छुट्टी दे दी गई।''

वसंत राव समेत समस्त जीवित जीवधारियों में जीवन उर्जा उस रासायनिक क्रिया के द्वारा कायम रखी जाती है जो उनके शरीर की कोशिकाओं के प्रोटोप्लाजमा में निरन्तर चलती रहती है। यह रासायनिक क्रिया कोशिकाओं के भीतर के पौष्टिक पदार्थों जैसे ग्लूकोज़, वसा एवं प्रोटीनों का श्वास क्रिया द्वारा आक्सीकरण होता है। इस आक्सीकरण के द्वारा कार्बनडाईआक्साईड, पानी एवं जीवन उर्जा तीन चीजें उत्पन्न होती हैं। इन में से प्रथम दो चीजों को फालतू चीजों के तौर पर गैस के रूप में श्वास क्रिया बाहर निकाल देती है तथा तीसरी जीवन उर्जा को शरीर की जीवन क्रियाओं के लिए प्रयोग किया जाता है। वे सभी क्रियाएं जिन में क्रियाशील प्रोटोप्लाज़मा (एक पेचीदा प्रोटीनीय पदार्थ) होता है, श्वास प्रकिया में भाग लेती हैं (अर्थात् सांस लेती हैं)।

वर्तमान अण्वेषकों ने यह खोज की है कि जीवित कोशिकाओं के साइटोप्लाज़म वाला रेशेदार पदार्थ माईटोकोंड्रिया पृथ्वी पर समस्त जीवन के उर्जा के कारखाने हैं। अनेकों प्रकार के एंजाईम रखने वाले य माईटोकोंड्रिया अपनी ग्लूकोज़, वसा एवं प्रोटिनो के साथ होने वाली रासायनिक क्रियाओं के द्वारा श्वास प्रक्रिया के दौरान अत्यन्त विशेष प्रकार की शक्ति, जिसे जीवन-उर्जा कहते हैं, उत्पन्न करते हैं। इस रासायनिक क्रिया में से एडिनोसाईट ट्राईफास्फेट उत्पन्न होती है जोकि जीवन का विश्वव्यापी स्त्रोत है। वह उर्जा जिसकी मांसपेशियों के लिए सिकुड़ने, तन्तु संकेतों के संचार, मैटाबोलिटिक क्रिया आदि अर्थात् जिसकी हमारे शरीर अथवा

इसके अंगों की जीवन क्रियाओं के लिए आवश्यकता पड़ती है।

एक जीवित प्राणी जैसे कि श्री वसंत राव उतने समय तक जीवित रह सकता है जितने समय तक वह सांस लेता है। श्वास क्रिया निम्नलिखित तीन हालातों में रूक जाती है:-

1. जब प्रोटोप्लाज़्मा वाली कोशिकाओं को आक्सीजन नहीं मिलती।

2. जब कोशिकाओं वाला ईंधन ग्लूकोज वसा एवं प्रोटीन समाप्त हो जाते हैं।

3. जब प्रोटोप्लाज़्मा गलना सड़ना शुरू हो जाता है।

इस प्रकार श्वास क्रिया एवं मोमबत्ती के जलने की क्रिया में कोई अन्तर नहीं। दोनों में केवल आक्सीजन की गति का अन्तर है। मोमबत्ती के तेज आक्सीकरण (जलने) तथा प्राणियों की धीमी श्वास-क्रिया में कार्बनडाईआक्साईड़, जलवाष्प, ऊष्मा एवं रोशनी के स्थान पर जीवन शक्ति उत्पन्न करते हैं।

जितनी देर मोमबत्ती के पदार्थ (हाईड्रो कार्बन) का विघटन नहीं होता, हम बुझी हुई मोमबत्ती को दोबारा जला सकते हैं। इसी प्रकार जितनी देर प्रोटोप्लाज़्म का विघटन शुरू नहीं होता हम मृतक प्राणी को श्वास क्रिया चालू करके पुनः जीवित कर सकते हैं।

दोबारा जलाई हुई मोमबत्ती पहले की तरह से ही गर्मी व रोशनी देती है। यह कथन ठीक नहीं है कि जब लौ बुझा दी जाती है तो गर्मी एवं रोशनी मोमबत्ती में से निकल जाती हैं तथा वापिस आ जाती हैं जब उसे दोबारा जलाया जाता है। इसी प्रकार पुनः जीवित किया प्राणी ताजा जीवन उत्पन्न करता है। यह कहना गलत है कि जीवन शक्ति प्राणी में से निकल जाती है जब वह मृत हो जाता है तथा जीवन शक्ति वापिस आ जाती है जब उसकी श्वास क्रिया चालू कर दी जाती है। प्राणी केवल जीना बन्द करता है अथवा जीवन शक्ति उत्पन्न करना बन्द करता है, जिस प्रकार कोई बुझी हुई मोमबत्ती गर्मी तथा रोशनी उत्पन्न करना बंद कर देती है।

चाहे पुरातन समय से सारी दुनिया यह विश्वास करती आ रही है कि मानव समेत प्राणियों में आत्मा होती है, जोकि निकल जाती है जब वे मृत हो जाते हैं तथा वापिस आ जाती जब वे पुनः जीवित हो जाते हैं। परन्तु ऐसी सोच का कोई प्रमाण अथवा सुबूत नहीं है।

प्राणी अलग-अलग ढंग से सांस लेते हैं। पौधे पत्तों में से हजारों बारीक सुराखों के द्वारा, जड़ों के द्वारा, तनों के द्वारा सांस लेते हैं क्योंकि पौधे के सभी भाग सांस लेते हैं। इसलिए उसके टुकड़े किए जा सकते हैं। प्रत्येक टुकड़े को अनुकूल हालात में रख कर पुनः जीवित किया जा सकता है, उगाया जा सकता है। यह बात सोचना बेहद बेतुका है कि पौधे के प्रत्येक कटे हुए टुकड़े में साबुत पौधे की कटी हुई आत्मा होती है अथवा उस से कटे प्रत्येक टुकड़े में नई आत्माएं प्रवेश करती हैं। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि पौधों का जीवन जानवरों से किसी भी प्रकार से अलग नहीं है। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार दोनों जीवित प्राणी हैं जो एक साझा स्त्रोत से पैदा हुए हैं।

क्रमिक विकास के अलग-अलग स्तरों पर पहुँचे कसिलोट्रेंटस कृमि इत्यादि इस प्रकार के जीव है जो अपनी त्वचा के द्वारा सांस लेते हैं। इस जीवों को भी पोधों की तरह से काटा जा सकता है तथा प्रत्येक टुकड़ा अनुकूल हालात में फल-फूल कर पूर्ण जीव बन सकता है। यहां पर यह बात सोचना बेतुका है कि काटे हुए टुकड़े पैत्रिक जीव की आत्मा के टुकड़ों के हिस्सेदार बनेंगे, जब कि ऐसी आत्मा कोई होती ही नहीं।

इन कृमियों के ऊपर जीवों की दुनिया में ऐसे कीड़े भी हैं जोकि अपने शरीर के सुराखों के द्वारा सांस लेते हैं। काक्रोच अथवा ड्रैगन मक्खी का यदि सिर काट दिया जाए तो उनका

बे-सिरा शरीर कई दिनों तक जीवित रहता है क्योंकि बे-सिरा शरीर अपने शरीर के सुराखों के द्वारा सांस लेता रहता है। जब उसके शरीर वाला ईंधन खत्म हो जाता है तो वह मर जाता है। यदि बे-सिरे शरीरों में ईंधन की सप्लाई कृत्रिम तरीकों के द्वारा कायम रखी जा सके तो इन्हें और भी अधिक समय तक जीवित रखा जा सकता है। इस हालत में क्या यह कहना उचित है कि बे-सिरे शरीर में पूर्ण शरीर वाली आत्मा का कुछ भाग मौजूद है तथा दूसरा भाग कटे हुए सिर के साथ गुम हो गया है?

बसंत राव जैसे ऊंचे स्तर के प्राणियों में श्वास क्रिया एक अंग में केंद्रित होने के कारण कुछ पेचीदा होती है। इसलिए निम्न स्तर के प्राणियों की तरह से उनके टुकड़े नहीं किए जा सकते। चाहे स्तनधारी जीव अविभाजित होते हैं परन्तु उनके विकास का एक स्तर ऐसा होता है जहां पर उनका भी विभाजन होता है। यह अवस्था निम्न समय होती है। समरूप जुड़वां, तिकड़ी, चार बच्चे एक ही फर्टिलाईज्ड, अण्डा कोशिका के विभाजन द्वारा पैदा होते हैं। क्या जुड़वा बच्चे एक ही आत्मा को दो हिस्सों में बांट लेते हैं अथवा पुनर्जन्म ले रही किसी शखिसयत को आधा-आधा दो भागों में बांट लेते हैं?

वायु श्वास क्रिया द्वारा फेफड़ों में जाती है। वहां लहू वाले होमोग्लोबिन आक्सीजन को जज़्ब कर लेते हैं। फिर हृदय, धमनियों के द्वारा आक्सीजन मिश्रित रक्त, शरीर के जीवित भागों को प्रवाहित करता है जहां ग्लूकोज़, वसा एवं प्रोटीनों का आक्सीकरण हो कर उर्जा एवं कार्बनडाईआक्साईड उत्पन्न होते हैं जिनको रक्त अपने में जज़्ब करके पुनः फेफड़ों में ले आता है, यहां से इनको सांस द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है।

यदि रक्त धमनी बन्द करके आक्सीजन मिश्रित रक्त को शरीर के किसी भाग तक जाने से रोक लिया जाए तो उस भाग के टिशू मर जाएंगे। परन्तु यदि बैक्टीरिया की क्रिया के कारण प्रोटोप्लाज़्म के गलने-सड़ने की क्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व उस भाग में रक्त की सप्लाई बहाल कर दी जाये तो टिशू फिर से जीवित हो उठेंगे।

इसी प्रकार यदि टिशुओं अथवा पैत्रिक शरीर में से कटे अंगों को वैज्ञानिक तरीकों द्वारा गलने-सड़ने से बचा कर संभाल लिया जाए तो उन टिशुओं एवं अंगों को कई वर्षों के पश्चात् भी अन्य जीवित व्यक्तियों को प्रत्यारोपित करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति के शरीर में एक या एक से अधिक ऐसे प्रत्यारोपित किए हुए अंग होंगे तो क्या इसका अर्थ यह है कि अंग दान करने वाले व्यक्ति की आत्मा के कुछ भाग उसमें आ जाएंगे?

जीवों के शरीर में से लिए गए टिशू प्रयोगशालाओं में विशेष वैज्ञानिक हालातों में जीवित रखे जा सकते हैं तथा उन्हें विकसित किया जा सकता है। पैत्रिक शरीरों से अलग करके रखे हुए टिशुओं के बहुत लम्बी अवधि तक जीवित रहने के अनेकों उदाहरण हैं। क्या ऐसो मामलों में हम यह मान लें कि मृतक शरीर की आत्मा का कुछ भाग इन संभाले हुए टिशुओं में पीछे रह गया था? क्या ऐसे केसों का पुनर्जन्म किस्तों में होता है?

भविष्य में प्रतयारोपित करने हेतु प्रयोग में लाये जाने वाले काटे हुए अंग एवं टिशू अत्यन्त ठण्डे तापमान पर कई वर्षों तक ग्लिस्रीन में संभाल कर रखे जा सकते हैं। प्रयोगों के द्वारा परखा गया है कि इस प्रकार संभाले हुए मृत ट्शिू जीवित मांसपेशियों की तरह से ही सिकुड़ते हैं जब उनका ए.टी.पी. (Adenosine Triphosphate) के रासायनिक ट्रिगर एक्शन के साथ सम्पर्क करवाया जाता है। क्या इसका अर्थ यह है कि इन टिशूओं में अभी भी आत्मा होती है।

हवा रहित बंद डिब्बों में वैज्ञानिक ढंग से सूखे हुए खमीर को कई वर्षों तक खराब होने से बचा कर रखा जा सकता है। यदि इस प्रकार के सूखे खमीर की एक चुटकी चीनी के घोल में डाल

कर निश्चित तापमान तक गर्म की जाए तो मृत खमीर पुनः जीवित होकर फलने-फूलने लग जाएगा। जब खमीर की कोशिकाएं इस प्रकार जीवित की जाती हैं तो क्या मृत खमीर की बिछुड़ी हुई आत्माएं वापिस आ जाती हैं? अथवा इन में अन्य मृतक जीवों की आत्माओं का पुनर्जन्म होता है?

अमीबा जैसे एक कोशीय जीव साधारणतः तथा कभी न मरते। एक अमीबा बीच में से टूट कर दो नये बच्चे बन जाता है। पीछे उसका कुछ भी नहीं बचता न मां, न बाप, न आत्मा, न लाश। एक तरह से अमीबा अमर है।

क्या ऐसे जीवों के भूत अथवा पुनर्जन्म नहीं होते?

श्वास क्रिया के रूकने का मतलब है मृत्यु। उच्च्य स्तर के जीवों में शरीर की समस्त कोशिकाओं का सांस लेना आवश्यक है। इसलिए श्वास क्रिया एवं रक्त प्रवाह जारी रहने चाहिएं। यदि किसी जानवर के दिल एवं डायाफार्म के स्वयंमेव कार्य करने वाली कोशिकाएं कार्य करना बंद कर दें, शरीर की कोशिकाओं वाला, प्रोटोप्लाज्म चाहे ठीक हालत में हो, तो जानवर मर जाएगा। उस जानवर के मृत अंगो को कृत्रिम तरीकों से जैसे छाती की मालिश, मुख द्वारा सांस देना, लौह-फेफड़े का प्रयोग, विद्युत पेस मेकर, दिल व फेफड़ों की मशीन इत्यादि द्वारा पुनः जीवित किया जा सकता है।

पूना निवासी वसन्त राव के केस में उसकी मृत्यु हृदयाघात के कारण हुई थी। उसका पुनर्जन्म शरीर की कोशिकाओं के प्रोटोप्लाज्म की गलने-सड़ने की क्रिया शुरू होने से पूर्व हृदय का रक्त संचार पुनः शुरू होने के कारण हुआ था। लाश को जबरदस्त झटके लगने के कारण जब कार गढ़ढ़ों वाली सड़क पर जा रही थी। दिल एवं डाएफार्म की मांसपेशियों को अपनी एकसार हरकतें शुरू करने के लिए पर्याप्त उत्तेजना मिल गई थी। लाश की मृत कोशिकाओं को सांस लेने के लिए एवं नई उर्जा उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त आक्सीजन मिलने लग गई थी।

खबरों के अनुसार अमेरिका का प्रसिद्ध फिल्म स्टार पीटर सैलर्ज 1963 में सात बार मृत हुआ था तथा हर बार उसे विद्युतीय पेस मेकर के प्रयोग द्वारा पुनः जीवित कर लिया गया था।

न ही पूना निवासी के केस में और न ही पीटर सैलर्ज़ के केस में यह कहा जा सकता है कि 'बिछुड़ी हुई आत्माएं' जीवित हुए शरीरों में प्रवेश हेतु वापिस आ गई थी। क्या पुनरजीवित हुए व्यक्ति नई आत्माएं प्राप्त करते हैं अथवा अपनी पुरानी आत्माएं ही स्वर्ग अथवा नर्क में जाने के उपरान्त अथवा अन्य स्थानों पर जन्म लेने के पश्चात् वापिस आ जाती हैं?

जीवन एवं मन सांस लेने वाले शरीर के बगैर अस्तित्व में नहीं आ सकते। मन तन्तु प्रबन्ध की विद्युतीय रासायनिक क्रिया की उपज है। जीवन की भांति मन भी किसी जीव के तन्तु प्रबन्ध वाले तन्तुओं के नष्ट होने के पश्चात् जीवित नहीं रह सकता। इस बाबत बहस करना बेतुका है कि पुनर्जन्म लेने के उपरान्त पिछली स्मृतियां पुनरजीवित की जा सकती हैं जैसे कि तलाघाकल्ले निवासी गणति लेके अथवा मथुरा निवासी शांति देवी के बारे में कहा जाता है। प्रतिदिन नये-नये वैज्ञानिक प्रमाण सामने आ रहे हैं जिन के अनुसार यह प्रमाणित होत है कि स्मृतियां अणुओं पर आधारित होती है। प्रो. एच. हाईडन की नवीनतम खोजों ने सिद्ध किया है कि प्रौढ़ जीव की तन्तु कोशिकाओं में सीखने के द्वारा प्राप्त किए गए अनुभव संभाले जाते हैं। आर.एन.ए. अंशो वाली कोशिकाओं के कारण उनमें परिवर्तन होते रहते हैं। स्मृति की समस्या को समझने के लिए यह तथ्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हाईडन का यह विचार कि स्मृति आर.एन.ए. आधारित होती है। इस बात की प्रौढ़ता प्रो. जे.वी. मैककोनल की स्मृति से संबन्धित खोजों से भी होती है, जिस ने मिशीगन यूनिवर्सिटी में प्लेनेरियल कृमियों की स्मृति के बारे में खोजें की थी।

मैककोनल एवं जैकबस्न के प्रयोगों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि स्मृति संभालने वाले आर.एन.ए. के अणुओं को टीकों द्वारा एक शरीर में से दूसरे शरीर में बदला जा सकता है।

इस प्रकार पुनर्जन्म से संबन्धित कहानियों की जांच करते समय हमारा वास्ता मानवीय प्रमाणों अथवा मानव के अंधविश्वास से पड़ता है। ऐसे प्रमाण किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक अथवा बौद्धिक गुण से खाली होते हैं। अणुओं पर आधारित विशेषता उन अणुओं के नष्ट होने के पश्चात् बच नहीं सकती जिन पर वह आधारित है।

श्वास क्रिया का रूक जाना ही जीवन का रूक जाना है। नाशवान शरीर में से निकलने वाली अमर आत्मा वाला विचार हमारे पुरातन बुजुर्गों की उस स्वाभाविक इच्छा की उपज है जिसके सहारे वे सर्वनाश होने से बचना चाहते थे। ऐसे ही विश्वासों में से पितृ पूजा एवं प्रारम्भिक धर्म प्रारम्भ हुए। अनेकों बह्म-भ्रम, अनेकों रीति-रिवाज एवं संस्थाएं जैसे मंदिर, चर्च, मस्जिदें, शिवालय, बलि प्रथा, कुर्बानियां, पूजा-पाठ, प्रार्थनाएं, तीर्थ-यात्राएं, आशीर्वाद, श्रद्धा, शुद्धिकरण, परिवर्तनीकरण, भूत निकालने हेतु झांड-फूंक, जादू-टोना, पुरोहित, पादरी, बिशप, कार्डीनल, पोप इत्यादि मृत्योपरांत जीवन के बेबुनियाद पर कायम हैं। मनुष्य अपनी कल्पित आत्मा के भविष्य की खुशी के लिए अपना बहुत सा समय, शक्ति एवं खून पसीने की कमाई बेकार में खर्च करता है। यदि वह यह समझ ले मृत्यु के साथ ही उस का सचेत अस्तित्व खत्म हो जाता है तो वह अपना समय, शक्ति और धन इस जीवन को सुन्दर बनाने के लिए खर्च करेगा तथा वह पुरोहितों, चर्चों, मंदिरों को अमीर नहीं बनाएगा।

यह विश्वास कायम रखना कि मृत्यु अगली दुनिया में जीवन का आरम्भ है, प्रत्येक धर्म के पुरोहितों के लिए अत्यन्त लाभ कमाने वाला धंधा है। क्योंकि अंधविश्वासी लोगों के दिमाग में इसी विश्वास पर उनका रोजगार निर्भर करता है। पालतू अथवा जंगली जानवरों के दिमाग में ये विचार डालने के लिए पुरोहितों के पास कोई साधन नहीं इसलिए जानवरों को इन बातों का कोई डर नहीं होता कि मृतक लोगों की आत्माएं भूत-प्रेत बन कर उनमें आ जाएंगी अथवा उन्हें नरकों में घोर कष्ट भुगतने पड़ेंगे अथवा मृत्योपरान्त वे किसी घटिया योनि में जन्म लेंगे।

आओ हम तर्कशील बनें एवं अपने वर्तमान जीवन को अपने एवं सहयोगी व्यक्तियों के लिए खुशहाल बनाने के लिए कार्य करें। आईये हम अपने पड़ोसियों के साथ शांति एवं प्यार के साथ रहना सीखें, चाहे उनकी भाषाएं, संस्कृति एवं बह्म-भ्रम हम से अलग ही क्यों न हों। सब से बड़ी बात यह कि हम अपने अज्ञानी पूर्वजों से मिले बह्म-भ्रम अपने बच्चों के दिमागों में ठोसने से गुरेज करें।

हिन्दी अनुवाद, बलवन्त सिंह लैक्चरार

शोक-समाचारः

1. तर्कशील सोसायटी हरियाणा की पूण्डरी (कैथल) इकाई के प्रधान मानसिंह सैनी की माता श्रीमति शान्ति देवी आयु 84 वर्ष का 04. 10.13 को निधन हो गया।

2. तर्कशील सोसायटी हरियाणा के अध्यक्ष राजा राम हण्डियाया की माता श्रीमति इन्द्र देवी उम्र 80 वर्ष का 08.11.13 को निधन हो गया।

रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा रजि. इन साथियों के दुःख में सहभागी बनती हुई संवेदना व्यक्त करती है।

ब्रह्माण्ड की यात्रा

डा. अवतार सिंह ढींढसा, मो. 094634-89789

दोस्तो, आप बच्चे, युवा, बूढ़े, महिला अथवा पुरूष कुछ भी हों--- ब्रह्माण्ड यात्रा पर चलने से पूर्व हमारी आपसी जान-पहचान अत्यन्त आवश्यक है। आपके बारे में तो मुझे ज्ञात है कि आप 'वैज्ञानिक चिन्तन' वाले तो होंगे ही--- प्रगतिवादी विचारों वाले भी अवश्य होंगे--- परन्तु इसके विपरीत यदि आप अंधविश्वासी हों--- ज्योतिषी से 'पुच्छा' भी लेते हो तो कोई बात नहीं--- हमें खुशी होगी की आप हमारे साथ ब्रह्माण्ड की यात्रा पर अवश्य चलें--- हमारे संगी साथी बने। परन्तु मेरा पूरा पता--- कहो तो बता दूं---- लो फिर सर्वप्रथम मैं अपना पूरा पता ही नोट करवा दूं। मेरा पता है----

प्रवक्ता - 'वैज्ञानिक चिन्तन का मालिक'
निवासी - एक छोटा सा ग्राम - घांदड़ा
डाकखाना - बरड़वाल तहसील - धूरी
जिला - संगरूर, देश - भारत
महांद्वीप - एशिया, ग्रह - पृथ्वी
मण्डल - सौरमण्डल, ग्लैक्सी-आकाश गंगा
नजदीक - एंडरोमैडा ग्लैक्सी

हैरान न हों -- यदि आप पत्र संगरूर में ही लिखेंगे तो संगरूर लिखने की आवश्यकता नहीं है, पत्र मेरे गांव तक पहुँच जाएगा। यदि आप पत्र पंजाब में से लिखेंगे तो पंजाब लिखने की आवश्यकता नहीं। यदि आप पत्र भारत के किसी अन्य प्रांत से लिखेंगे तो पंजाब लिखना ही पड़ेगा-- परन्तु पत्र यदि किसी अन्य देश से लिखना हो तो भारत लिखना पड़ेगा--- परन्तु यदि पत्र सौर मण्डल के आठ ग्रहों में से किसी में से आना हो तो ग्रह- पृथ्वी अवश्य लिखना पड़ेगा।

इस प्रकार यदि हमारे रिश्तेदार किसी अन्य ग्लैक्सी से पत्र लिखेंगे तो हमारे पते में हमारी ग्लैक्सी का नाम आकाश गंगा लिखना आवश्यक होगा। अन्यथा हमारा पत्र ब्रह्माण्ड की अन्य ग्लैक्सियों में ही घूमता रहेगा। जिनकी संख्या अरबों-खरबों में है!!! तथा हमारी आयु तो केवल सौ वर्षो के लगभग है!! कब मिलेगा पत्र ???

स्पष्ट है कि हम ब्रह्माण्ड की ग्लैक्सी ''आकाश गंगा' में स्थित सौर मण्डल के ग्रह पृथ्वी के निवासी हैं। साथियो यदि आपका दिल भारत के शिमला, दार्जीलिंग तथा कनाडा, अमेरिका इत्यादि देशों में घूमना चाहता है तो हमने सोचा कि हम आपको हमारे ग्रहों, तारों, ग्लैक्सियों इत्यादि पर भी सैर करवा आएं।

चलो चलेंः- हम अपने हरे-भरे जीवन से भरपूर ग्रह पृथ्वी से अपनी यात्रा को दो दिशाओं में बांट सकते हैं। एक सूर्य की ओर तथा दूसरी सूर्य की दिशा से विपरीत। चलो, पहले हम पृथ्वी से सूर्य की ओर अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं।

प्रथम यात्रा पृथ्वी से सूर्य की ओरः- यात्रा पर जाने के लिए हमें एक राकेट की आवश्यकता पड़ेगी। जिसकी गति 12 कि.मी. प्रति सैकिंड होनी चाहिए, अन्यथा हम पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण शक्ति से बाहर नहीं जा सकेंगे। अतः तैयार हो जाओ, अपने कल्पना रूपी सोच के राकेट पर सवार होने के लिए।

पृथ्वी का वायुमण्डल (गैसीय आवरण):- हम ज्यों ही पृथ्वी के तल से ऊपर उठते जाएंगे तो ठण्ड बढ़ती चली जाएगी तथा यह ठण्ड लगभग 12 कि. मी. तक बढ़ती ही जाएगी। प्रत्येक कि.मी. के पश्चात् तापमान 6.5° सैल्सियस कम होता चला जाता है। परन्तु 12 कि.मी. से कम होना बन्द हो जाता है। बादल भी यहीं तक ही बनते हैं। वर्षा, आंधी, तूफान एवं अंधड़ इत्यादि सभी यहीं तक सीमित हैं। वायुमण्डल की इस पट्टी को अशांत मण्डल (ट्रोपोसवीयर) कहा जाता है। ज्यों-ज्यों हम ऊपर उठते चले जाएंगे त्यों-त्यों आकाश भी अपना रंग बदलेगा। सर्वप्रथम ऊपर उठते हुए हमें बैंगनी

रंग चारों ओर दिखाई देगा। फिर चमकदार नीले से आसमानी नीला रंग बदलेगा। और ऊपर जाने पर चारों ओर हरा ही हरा रंग दिखाई देगा। यह रंग पीला, संतरी तथा अंत में लाल रंग में परिवर्तित हो जाएगा। आप अवश्य जानना चाहेंगे कि इन रंगों का क्या कारण है?? दोस्तो, यह वे रंग है जिनसे मिलकर सूर्य की रोशनी बनी हुई है। इन सात रंगों के बारे में जानकारी सर्वप्रथम न्यूटन ने दी थी, परन्तु पृथ्वी पर से तो आकाश केवल नीले रंग का नजर आता है, इसका कारण?--- कारण यह है कि सभी सात रंगों में से नीला रंग सबसे अधिक बिखरता है, इसलिए आकाश नीला नजर आता है। अशान्त मण्डल में आक्सीजन 21% नाईट्रोजन 78% तथा कार्बन 0.03% तथा शेष अन्य गैसें मौजूद हैं। जलवाष्प एवं बर्फ के अत्यन्त छोटे क्रिस्टल, सूर्य की रोशनी को उपरोक्त सात रंगों में बांट देते हैं।

हमारे पर्वतों की चोटियों में सबसे ऊँची एवरेस्ट चोटी भी 8 कि.मी. 848मी. ही ऊँची है। इसी कारण इन पर्वतों पर हमेशा बर्फ पड़ती रहती है। पायलट वायुयान को इस मौसम पट्टी से ऊपर उड़ाने का प्रयत्न करते हैं, ताकि आंधी, तूफान से जैट जहाजों को तथा मुसाफिरों को किसी दुर्घटना का सामना न करना पड़े।

बस 12 कि.मी. की पट्टी से बाहर निकलते ही ''स्ट्रैटोस्फीयर'' आरम्भ हो जाता है, जिसे समताप मण्डल कहा जाता है क्योंकि इसमें हवा एकदम सीधी चलती है, कोई अन्धड़ नहीं, कोई तुफान नहीं, आक्सीजन की मात्रा कम होना शुरू हो जाती है। तापमान - 60 डिग्री सैल्सियस से - 18 डिग्री सैल्सियस तक रहता है। इस मण्डल में अत्यन्त महीन ओज़ोन पट्टी है जो सूर्य की पराबैंगनी विकिरणों को सोख लेती है। पराबैंगनी विकिरण त्वचा का कैंसर कर देती है। यदि ओजो़न पट्टी न होती तो शायद आज पृथ्वी पर जीवन न होता। दोस्तो, पृथ्वी पर जीवन होने के ऐसे ही अन्य कारण भी हैं, जिनके बारे में हम साथ ही साथ व्याख्या करते रहेंगे। यह ''स्ट्रैटोस्फीयर'' 12 कि.मी. से लेकर लगभग 50 कि.मी. तक फैला हुआ है।

साथियो, सावधान! हम अपने वायुमण्डल की तृतीय तह-- मध्य मण्डल (मीजोस्फीयर) में प्रवेश कर रहे हैं। यह 50 कि.मी. से 85 कि.मी. तक फैली हुई है, सर्दी इतनी अधिक कि तापमान हिमबिन्दु से भी 90 डिग्री सैल्सियस कम अर्थात् -90 डिग्री सैल्सियस। जितने भी उल्का पिंड पृथ्वी के वायुमण्डल में दाखिल होते हैं तो ये मीजोस्फीयर में ही जल कर राख हो जाते हैं। देखो अब आकाश नीला नहीं अपितु काला है ---- क्योंकि यहां वायु अत्यन्त पतली है, हमारे सांस लेने हेतु भी पर्याप्त नहीं है। आकाश काला होना आरम्भ हो गया। वो देखो कुछ तारे भी नज़र आने लग गए हैं।

लो, हमारा राकेट अब वायुमण्डल की अगली परत यानि की तापमण्डल (Thermosphere) में दाखिल हो गया है। चारों ओर हल्का अंधेरा है। सूर्य, चन्द्रमा तारे ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। परन्तु पृथ्वी का मनमोहक नज़ारा साफ नज़र आता है। यह परत 85-90 कि. मी. से लेकर 800-1000 कि.मी. तक फैली हुई है। जरा बच के रहना ---- मीजोस्फीयर से विपरीत यहां तापमान बहुत अधिक है। लगभग दिन एवं रात्रि के तापमान में 200° डिग्री सैल्सियस से भी अधिक का अन्तर आ जाता है। तापमण्डल के ऊपरी भाग में तापमान 500° डिग्री सैल्सियस से 1000° डिग्री सैल्सियस तक पहुँच जाता है। यहां पर कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता।

तापमण्डल की बाह्य तह आइन्सटोपट्टी कहलाती है। यहां गैसों के अणुओं में से इलैक्ट्रान टूट जाते हैं तथा वे आयन बन जाते हैं। इनकी विशेषता यह है कि अब तापमान और बढ़ना शुरू हो जाता है। यहां आपको इस तापमान की वृद्धि के साथ जुड़ी एक दुभाग्यपूर्ण घटना के बारे में भी स्मरण करवा दें। कल्पना चावला (अंतरिक्ष यात्री)

वाली 'शटल' जब पृथ्वी की इन पट्टियों में दाखिल हुई थी तो इस तापमान की वृद्धि तथा वायुमण्डलीय कणों के साथ रगड़ द्वारा उत्पन्न हुए हजारों डिग्री तापमान ने 'शटल' को टुकड़ों में बांट दिया था एवं 6 अंतरिक्ष यात्री (कल्पना चावला सहित) हमसे हमेशा के लिए बिछुड़ गए, क्योंकि 'शटल' बाह्य तापरोधक प्लेटों में दरारें आ गई थी।

आप पूछेंगे कि क्या इन वायुमण्डलीय पट्टियों का हमें कोई लाभ नहीं है? हां, हां अत्यधिक लाभ है। अन्तरिक्ष में घूमते हुए छोटे-बड़े अंतरिक्षीय पत्थर के टुकड़े जब पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण में आ जाते हैं तो इन परतों में ही जलकर राख हो जाते हैं। अन्यथा ये पृथ्वी पर गिर कर जीव-जन्तुओं, इमारतों एवं वायुयानों का अत्यधिक नुकसान कर सकते हैं। ज्ञात रहे, इन जलते हुए एवं गिरते हुए पत्थर के टुकड़ों को हम ''टूटते तारे' कहते हैं। ये तारे नहीं अपितु उल्का पिण्ड (Meteor) होते हैं। 'आईनोसीफियर' की आयनी-पट्टी अत्यन्त रोचक कार्य करती है। दुनियाभर के ट्रांजिस्टर, रेडियो के कार्यक्रमों को सम्पूर्ण पृथ्वी एवं चारों ओर घुमाने में मदद करती है। इसीलिए तो रेडियो प्रोग्राम सुनने के लिए हमें किसी भी प्रकार के एंटीना की आवश्यकता नहीं पड़ती। अर्थात् यह परत रेडियो तरंगों को बाहर अंतरिक्ष में जाने से रोक देती है।

आयनी परत से बाहर निकलते ही, चारों ओर रात्रि जैसा काला अंधेरा दिखाई देगा। इसे अंतरिक्ष कहते हैं। यहां वायु भी नहीं होती। हां एक अंतरिक्षीय पदार्थ 'ईथर' होता है जिसका विशेष प्रभाव अभी पूर्णतः ज्ञात नहीं है। परन्तु यह जीवों के जीवित रहने के लिए तो किसी प्रकार से भी सहायक नहीं है। तारों की संख्या तो पृथ्वी से दिखाई देने वाले तारों की संख्या से कई गुना अधिक हो जाती है। क्योंकि अंतरिक्ष में प्रदूषण नहीं है। पीछे मुड़ कर देखो जरा ----- अब चान्द, तारों के साथ नीली रंगत में हमारी गोल पृथ्वी भी दिखाई देनें लग जाएगी।

ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह हैं--- सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, राहू और केतू। परन्तु यदि ज्योतिषियों को पृथ्वी से बाहर निकाल कर अंतरिक्ष में से आकाश दिखाया जाए तो वे एक और नीले रंग के ग्रह को देख कर हतप्रम रह जाएंगे कि यह दसवां ग्रह कहां से आ गया। दोस्तो, हमारी पृथ्वी भी सूर्य के गिर्द चक्कर लगाता एक ग्रह ही है जिसे हम सम्मान स्वरूप धरती माता भी पुकारते हैं। इसने हमें जीवन दिया है, हमें इस से भय नहीं लगता तो फिर हम शेष ग्रहों से भयभीत क्यों हों!!? यहां हम ज्योतिष का भी भंडाफोड़ कर दें कि सूर्य एवं चन्द्रमा ग्रह नहीं हैं। राहू, केतु कोई भी स्थूल ग्रह नहीं हैं। स्थूल का अर्थ है कि हम इन्हें न तो देख सकते हैं, न ही इन पर चल फिर सकते हैं, न इनकी फोटो खींच सकते हैं। सच मानो यह तो मानव की कल्पना के द्वारा ही रचे हुए ग्रह हैं जिन का कोई अस्तित्व ही नहीं है, फिर ये हमारा बिगाड़ भी क्या सकते हैं?? परन्तु यह राहु केतू पृथ्वी के गिर्द चन्द्रमा के चक्र पथ पर केवल दो बिन्दु तो हो सकते हैं जिन पर चन्द्रमा के होने के समय कभी सूर्य ग्रहण अथवा कभी चन्द्र ग्रहण लगते हैं। ज्योतिषियों को समझाना तो कठिन है ----- परन्तु आप तो मेरे साथ हो ही --- अतः हमें अन्य किसी की परवाह नहीं। चलो आगे बढ़ें --- उस हमारे नजदीक के पड़ोसी--- चन्द्रमा की ओर----

कमशः

हिन्दी अनुवाद, बलवन्त सिंह प्राध्यापक

अनमोल वचनः

1. तुम आगे क्या बढ़ोगे, सवेरे 9 बजे तक तो सोये रहते हो।

जार्ज बर्नार्ड शा

2. हर बात में आगे मत कूदो। अपना हर कदम सोच समझ कर उठाओ।

दयानन्द सरस्वती

युग कैसे बदलते हैं ?
नरिन्द्र सिंह कपूर के लेख पर टिप्पणी

डा. अमृत

4 नवम्बर, 2012 के पंजाबी ट्रिब्यून में श्री नरिन्द्र सिंह कपूर का लेख ''युग कैसे बदलते हैं ?'' प्रकाशित हुआ। इस लेख में उन्होंने मानव समाज कैसे बदलता है, इसके पड़ावों एवं इसमें आने वाले परिवर्तनों के विषय में काफी कुछ लिखा है तथा साथ ही युगों के बदलने में व्यक्ति की भूमिका, पश्चिम एवं पूर्व विशेषतौर पर भारत के इतिहास पर कई टिप्पणियां भी की हैं। क्योंकि श्री कपूर पंजाबी के काफी लिखने वाले पढ़े जाने वाले विद्वान हैं, वे विश्वविद्यालय स्तर पर प्रोफैसर के पद पर रह कर अध्यापन का कार्य कर चुके हैं तथा संभव है कि उनके विचारों को पढ़ कर बहुत से साधारण लोग एवं पाठक धारणाएं बनाते होंगे, इसलिए जरूरी हो जाता है कि उनके विचारों का मूल्यांकन किया जाए।

कपूर जी के मुख्य तर्क के अनुसार– ''स्पष्ट रूप में युग तब बदलता है, जब मनुष्य उर्जा का नया व्यापक स्त्रोत खोज लेता है।'' उनके अनुसार उर्जा के स्त्रोत कौन से हैं, ''मनुष्य का अपना शारीरिक बल, फिर पशुओं का बल, तृतीय मकैनिकी बल (यह तीनों मानव प्रयोग करना सीख चुका है) तथा चतुर्थ है सौर उर्जा। श्री कपूर इन उर्जा के स्त्रोतों के आधार पर मानवी इतिहास के विकास को तीन युगों में बांटते हैं– मनुष्य के शरीर बल के अनुसार ही 'शिकार युग' पशु बल के अनुसार ही 'कृषि युग' तथा यान्त्रिकी बल के अनुसार ही 'ओद्यौगिक युग'। परन्तु पूरे लेख में यह बात नहीं बताते कि सौर उर्जा के अनुसार ही आगामी युग कौन सा होगा ? एक अन्य बढ़ौतरी वे यह करते हैं– शिकार युग में शिकार अथवा पशु केन्द्रित था, कृषि युग में धर्म अथवा ईश्वर केन्द्रित था जबकि औद्योगिक युग में विज्ञान एवं मानव केन्द्रित है। यहां पर वे एक बात फिर से यह नहीं बताते कि सौर उर्जा वाला युग क्या (?) केन्द्रित होगा ? इस सम्पूर्ण व्याख्यान में वे ऐतिहासिक एवं मानवी नव-विज्ञान से सम्बन्धित तथ्यों की कैसे ऐसी-तैसी करते हैं, इस पर भी हम अलग से दृष्टिपात करेंगे। श्री कपूर के इस थोथे ऐतिहासिक बंटवारे को समझने के लिए हमें मानव विकास के इतिहास के बारे में कुछ विस्तार से अपनी बात करनी पड़ेगी।

मानव विकास को प्रायः ऐतिहासिक काल एवं प्रगैतिहासिक काल में बांटा जाता है। ऐतिहासिक काल के दौरान मानव समाज ने पिछले कबायली समाज, जो अपने पतन के रास्ते पर पड़ चुका था, प्राचीन समाज (जो मुख्य तौर पर दासता पर आधारित समाज था), सामन्तवादी समाज, पूंजीवादी दौर तथा समाजवादी पड़ाव तक की यात्रा तय की है। विश्व के अलग-अलग हिस्सों में इन पड़ावों का समय, लक्षण अलग-2 रहें हैं तथा अलग-2 क्षेत्रों के मानवी समाज अलग-अलग समय पर इन पड़ावों में दाखिल हुए तथा गुजरे। कई समाजों में इन समयों का अत्यन्त सुन्दर तरीके से लिखित इतिहास अपलब्ध है, जैसे युरोप, चीन आदि में। जबकि कई समाजों में लिखित सामग्री उतनी विशाल एवं स्टीक तरीके के साथ नहीं मिलती, जैसे कि भारत। यह वह दौर है जब मनुष्य ने बाकायदा लेखन कार्य आरम्भ कर दिया था, इसीलिए इस समय को लिखित इतिहास का काल भी कहते हैं। इस प्रकार लगभग 4000 ई. पू. के पश्चात् ऐतिहासिक काल का प्रारम्भ माना जा सकता है। प्रगैतिहासिक काल मानव विकास का वह समाज है जब अभी मनुष्य ने लिखना नहीं सीखा था, तथा इस दौर के लिखित प्रमाण नहीं मिलते। इस काल में मानव समाज कबायली समाज था, जिसमें कबीले द्वारा शिकार से हासिल किया गया मांस तथा एकत्र किया गया अनाज एवं अन्य आवश्यक वस्तुएं सामूहिक सम्पत्ति होते थे, अर्थात् यह युग आदिम

साम्यवादी युग था। यह काल 4000 ई.पू. से लेकर कई लाख वर्ष पीछे जाता है तथा यह काल आगे कई कालक्रमों में बांटा जा सकता है जैसे पुरा-पाषाण युग, मध्य पाषाण युग तथा नव पाषाण युग। वर्णनीय परिवर्तन आए तथा मानव समाज वर्तमान पड़ाव तक पहुँचा।

मनुष्य का पशु जगत से अलगाव उस समय शुरू हुआ (तथा इसके साथ ही मानव के विकास के प्रगैतिहासिक काल अथवा प्रारम्भिक समाज की बुनियाद टिकी) जब मनुष्य के पूर्वज नर-वानरों की एक शाखा ने औजारों का प्रयोग करते हुए स्वयं को प्राकृति की कैद से आजाद करवाने का संघर्ष प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि अन्य बहुत से जन्तु भी प्रकृति के विरूद्ध संघर्ष करते हैं, स्वयं को प्राकृतिक प्रकोपों से बचाने का प्रबन्ध करते हैं तथा बया एवं दीमक जैसे जन्तु तो शानदार घर भी बनाते हैं। परन्तु शेष सभी जन्तु अपने कार्य उन्हीं औजारों से करते है जो उनके शरीर का हिस्सा होते हैं, जैसे अपनी चोंच से कठफोड़ा वृक्ष की लकड़ी को भी खोद देता है, चूहे, चींटियां आदि अपनी टांगों से लम्बे बिल बना लेते हैं, जबकि मनुष्य अपने औज़ार प्रकृति से प्राप्त कच्चे माल जैसे कि पत्थर, टहनियों को अपनी मर्जी के अनुसार तराश कर बनाता था तथा वह इसमें लगातार विकास करता जा रहा था। इसी कारण मनुष्य शेष जन्तुओं से विकास में आगे निकल गया क्योंकि उसकी प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी द्वारा हासिल किये विकास के स्तर में और बढ़ौतरी करती जाती है। इस प्रकार औजारों का प्रयोग वह अलगाव बिन्दु है जो मनुष्य के विकास का प्रारम्भिक बिन्दु कहा जा सकता है। प्रारम्भ में ये औजार अनघड़ पत्थर एवं टहनियां ही थे परन्तु इनका प्रयोग मनुष्य का प्रकृति के विरूद्ध अपने संघर्ष में एक बड़ा कदम था। मानव के पूर्वजों ने विकास के कदम आगे बढ़ाने जारी रखते हुए पत्थरों को परस्पर टकरा कर अनघड़ चाकू, कुल्हाड़ी आदि बनाए, फिर इनकी धार को तेज करना सीखा। इन ही तीखे किये पत्थरों से मनुष्य ने लकड़ी के डण्डे से बांधकर प्रारम्भिक कुल्हाड़े, नेजे तथा फिर तीर बनाए, कुदाल एवं फाले बनाए। बाद में आकर मनुष्य ने जानवरों की हड्डियों को भी औज़ार बनाने के लिए प्रयोग करना शुरू कर दिया। हड्डियों से उसने सुईयां, दरांतियां, तीरों की नोकें इत्यादि बनाई। प्रारम्भिक वर्ष पूर्व (कुछ वैज्ञानिक यह समय 14 लाख वर्ष तक का मानते हैं, जिस बारे अभी तक यह आम राय नहीं बनी है) आग को प्रयोग में लाना शुरू कर दिया था। वह प्राकृतिक तौर पर लगी आग से अपने निवास में आग की धूनी जला लेता तथा फिर जितनी देर तक वह वहां रहता, वह उस धूनी को लगातार जला कर रखता क्योंकि अभी मानव ने स्वयं आज जलाना नहीं सीखा था। (हमारे मन्दिरों में आग की ज्योति लगातार जलाए रखने की धारणा सम्भवतः इसी दौर की उपज है क्योंकि आग ने मानव के जीवन में अहम भूमिका बना ली थी परन्तु आग जलाना न सीखा होने के कारण आग की धूनी लगातार जला कर रखना उसके लिए अत्यन्त अहमियत वाली बात थी। आध ुनिक समय में मनुष्यों ने पाषाण युग के पूर्वजों की यह जरूरत एक धार्मिक कर्मकाण्ड के तौर पर बची रह गई है। मानव शिकार करता, आसपास से फल आदि एकत्र करता, पौधों की जड़े खोदकर खाता तथा एक दौर में आ कर मछलियां भी पकड़ने लगा। आग को काबू करने से मानव पका हुआ मांस खाने लगा जिससे उसकी तंत्रिकाओं का आकार कम होने लगा क्योंकि पका हुआ मांस पचाना आसान था, मानव पौधों के वे हिस्से जैसे फलियां इत्यादि भी खाने लगा जो पहले कच्चे रूप में पचते नहीं थे। पके हुए भोजन ने वे खुराकी तत्व मानवी शरीर को उपलब्ध करवाए जिससे मानवी दिमाग का तेज विकास संभव हुआ, जिसके लिए जोरदार उत्तेजक मानव द्वारा दो टांगो पर चल सकने की योग्यता तथा हाथों के प्रयोग में पड़ा था। विकसित होते हुए दिमाग ने प्रतिफल के रूप में हाथों के प्रयोग को और भी मुहारत दी। शिकार करने एवं औजारों के निर्माण के दौरान मनुष्यों को एक-दूसरे को संदेश

देने की जरूरत महसूस हुई, जैसे शिकार पर निकले समूह का एक सदस्य जब भी किसी जानवर के पदचिन्ह देखता अथवा आवाज सुनता तो उसने इस बारे में झटपट अपने साथियों को बताना होता था। पद-चिन्ह अथवा आवाज उसके लिए शिकार के नजदीक होने का संकेत था। उसने इस संकेत को दूसरों तक पहुँचाने के लिए संकेत का इन्तजाम करना था। शुरू में ये संकेत हाथों की हरकतें एवं चेहरे के हाव-भाव थे। इस प्रकार मानव ने ''संकेत के संकेत'' (रूस के वैज्ञानिक इवान पावलोव के शब्दों में जिन्होंने भाषा को ''संकेत का संकेत'' कहा था) की खोज कर ली। परन्तु इसकी सीमाएं थी क्योंकि ये संकेत अंधेरे में कार्य नहीं करते थे, परिणाम मानव का ध्वनि निकाल कर संकेत देना एवं कण्ठ का विकास। कण्ठ के विकास के दौरान ही मानव के गले में एक हड्डी प्रकट हो गई जिसने कण्ठ को जीभ के साथ जोड़ दिया। ये आवाजें बाद में कण्ठ से निकलती हवा की हरकत तथा जीभ की हरकतों के साथ मिलकर ध्वनियां बनी तथा ध्वनियों ने शब्द का, भाषा का रूप ले लिया। ''संकेत के संकेत'' के विकास के पड़ावों ने मानवी मस्तिष्क को और भी विकसित किया तथा उसके सोचने, अग्रिम योजना बना कर कार्य करने की योग्यता अत्यधिक हद तक विकसित हो गई। इस पूरे समय के दौरान मानव की एक नहीं बल्कि कई नस्ले पृथ्वी पर निवास कर रहीं थी तथा आधुनिक मानव के पूर्वज लगभग दो लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी निवासी बनने शुरू हुए जिन्होंने आगे चलकर वर्तमान मानव का रूप लिया तथा शेष नस्लें नव-पाषाण युग आते-आते खत्म हो गई।

शिकार करना, भोजन एकत्र करना तथा औज़ार बनाना, यह सभी कुछ सामूहिक तौर पर होता था तथा उस समय यह सामूहिक ही हो सकता था क्योंकि उस समय मानव इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह समूह के बगैर जानवरों का शिकार कर सकता एवं प्रकृति का मुकाबला कर सकता। दूसरा तथा विशेष कारण यह था कि उस समय यदि समूह के कुछ सदस्य भोजन का प्रबन्ध करने में भाग लेने से इन्कार कर देते तो भोजन की कमी हो जानी थी तथा परिणामस्वरूप भूखमरी एवं समूह का सफाया। इसलिए समूह के तौर पर तथा समस्त समूह के कार्य करने की शर्त पर ही उस दौर का मानवी समाज जीवित रह सकता था। समूह के नवयुवक शिकार करने जाते, बुजुर्ग पुरूष औज़ार बनाते, महिलाएं एवं बच्चे आस-पास के खाद्य पदार्थ एकत्र करते, स्त्रियां खालों के वस्त्र बनाने लग गई। सारा कुछ सभी का सामूहिक था, ''मेरा'' एवं ''तेरा'' अभी उत्पन्न नहीं हुए थे। मानव के रीति-रिवाज एवं विश्वास समय के अनुसार थे, मनुष्य जिन जानवरों का शिकार करके भोजन प्राप्त करता वे जानवर मानव के लिए पूजनीय थे क्योंकि मनुष्य समझता था कि यदि इन जानवरों ने स्वयं को शिकार के तौर पर पेश न किया होता तो मनुष्य ने भूखे मर जाना था। कोई मानवी समूह जिस जानवर का मुख्य तौर पर शिकार करता वह उसका देवता एवं समूह का चिन्ह बन जाता जिसे 'टोटम' कहा जाता है। शिकार करने, भोजन एकत्र करने तथा औज़ार बनाने की मानवी हरकतों को नृत्य के रूप में पुनर-प्रस्तुत किया जाता जिसे नई पीढ़ी के लोगों को शिक्षा भी मिलती तथा मानव देवता का ध ान्यवाद भी करता। इन नृत्यों को शिकार पर जाने से पूर्व एवं शिकार में सफल रहने के पश्चात् किया जाता। समूह का मुखिया धुएं अथवा किसी अन्य ढंग से नृत्य का नेतृत्व करता। यदि मानवी समूह अथवा कबीले को किसी अन्य समूह अथवा कबीले के साथ लड़ना पड़ता तो वह अपना एक सरदार चुन लेता जो उतनी देर ही सरदार रहता जितनी देर तक लड़ाई होती, बाद में वह भी कबीले के शेष सदस्यों की भांति कार्य करता। लड़ाई में विजेता कबीला या तो दूसरे कबीले के सभी आदमियों को मार देता अथवा उन्हें भी अपने कबीले में सम्मिलित कर लेता तथा इन नये सदस्यों को भी उसी प्रकार ही काम करना पड़ता तथा उन्हें भी बराबर का हिस्सा मिलता। इस प्रकार अभी तक कबीले के

सरदार तथा नृत्य-रस्मों के दौरान नेतृत्व करने वाले सदस्यों को विशेषाधिकार प्राप्त रूतबा हासिल नहीं हुआ था। कबीले में क्योंकि अधिकतर कार्य स्त्रियों को करना पड़ता था, इसलिए कबीले में उनकी ही चलती थी, मानवी कबीले अभी मातृ-प्रधान थे। इस सारे समय के दौरान मानव प्रारम्भिक पाषाण-युग एवं मध्य पाषाण युग में ही रह रहा था। विकास के पड़ावों में आगे बढ़ता हुआ मानव लगभग 10000 वर्ष पूर्व उस पड़ाव पर आ पहुँचता है जिसे विश्व प्रसिद्ध पुरातत्व वैज्ञानिक वी. गौर्डन चाईल्ड ने ''न्यूलिबिक रिव्योलूशन'' (नव-पाषाण युगीन क्रांति) कहा।

नव-पाषाण युगीन क्रांति के पड़ाव पर आ कर, जिसे नव-पाषाण युगीन कृषि क्रांति भी कहा जाता है, मानव ने जानवरों एवं पौधों को पालतू बनाना शुरू किया। ऐसा नहीं कि मनुष्य के पास उससे पूर्व कोई पालतू पशु नहीं था, कुत्ते को वह काफी समय पूर्व ही अपना सहयोगी बना चुका था। परन्तु इससे पूर्व मानव ने कभी भी मांस एवं अन्य भोज्य पदार्थ हासिल करने के लिए पशुओं को पालतू बना कर एक स्थान पर टिक रहना शुरू नहीं किया था। उसने भेड, बकरी, घोड़ा एवं अन्य पशुओं को पालतू बनाया। साथ ही उसने अनेक जंगली अनाज एवं अन्य खुराकी पौधों को स्वयं उपजाना शुरू किया। सर्वप्रथम कृषि ९००० ई. पू. में मिस्र एवं पश्चिमी एशिया के इलाकों में प्रारम्भ हुई मानी जाती है। लगभग इसी ही समय (८००० ई. पू.) चीन एवं भारत में भी कृषि की शुरूआत हो चुकी थी। इसके पश्चात् कृषि युरोप के इलाके में फैल गई। फसलों की बीजाई पत्थर की बनी हुई लम्बी कुदालों से होती थी तथा बीजाई एवं कटाई का कार्य स्त्रियां ही करती थी। पत्थर के औज़ारो से भूमि की खुदाई ज्यादा गहरी नहीं होती थी तथा उपजाऊ शक्ति भी शीघ्र ही समाप्त हो जाती थी। कबीला नई भूमि साफ करता तथा वहां पर कृषि शुरू कर देता। कृषि शुरू होने का मतलब यह नहीं था कि अब मानव ने पशुओ को कृषि कार्य में प्रयोग में लाना शुरू कर दिया था, कृषि मानव स्वयं के परिश्रम से ही करता था। पशुपालन का उद्देश्य मांस, दूध एवं खालें प्राप्त करना होता था। यहां तक कि घोड़े को लम्बे समय तक दूध एवं मांस के लिए पाला जाता रहा। इस सारे समय के दौरान कबीलों में परस्पर बड़े-बड़े श्रम-बटवारे सामने आए। कई कबीले मुख्य तौर पर पशुपालक बन गए तथा कई मुख्य तौर पर कृषि करने वाले, जबकि कई कबीले दोनों कार्य ही करने लग गए। इस श्रम-बटवारे से कबीलों में वस्तुओं के विनिमय का आधार तैयार हुआ तथा कबीलों में धन का संकल्प पैदा हुआ। जिस कबीले के पास अधिक पशु होते वह धनी होता तथा जिस के पास कम वह निर्धन। इसी प्रकार जिस कबीले के पास अनाज के अधिक से अधिक भण्डार होते वह धनी होता तथा दूसरा निर्धन। कबीले के अन्दर भी श्रम के बटवारे का आधार तैयार हो चुका था। पशुपालन के साथ-साथ पुरूष अब कृषि कार्य में भी भाग लेने लगे थे तथा जैसे-जैसे कृषि में बल की आवश्यकता बढती चली गई, कृषि में स्त्रियों का दायरा सीमित होता चला गया तथा पुरूषों की भूमिका बढ़ती चली गई। परिणामस्वरूप स्त्रियां कबीले में अपनी प्रधान पोजीशन गंवाती चली गई तथा कबीले पुरूष प्रधान होने लगे। कबीले के लिए आवश्यक औज़ार बनाने के लिए कारीगरों का एक दल अस्तित्व में आ गया था जो समय के साथ न केवल अपने कबीले के लिए वस्तुएं बनाता, बल्कि अन्य कबीलों के साथ भी विनिमय के लिए औज़ार इत्यादि बनाने लगा। दूसरी ओर, क्योंकि कबीले के पास हर समय पशुओं का एक बड़ा खेदड़ तथा अनाज के भण्डार मौजूद रहते थे, इनकी रखवाली के लिए एक तैयार-बर-तैयार लड़ाकू दस्ता रखना आवश्यक होता चला गया। कबीले का सरदार इस लड़ाकू दसते का भी मुखिया होता तथा उसे अपने लड़ाकू दस्ते के लोगों के समेत कृषि, पशुपालन तथा अन्य कार्यो से छूट मिलने लगी। नृत्य-रस्मों में जादूगर-नुमा भूमिका निभाने वाला आगू व्यक्ति अब ऐसा विशेष व्यक्ति

बनने की ओर बढ़ने लगा जो कबीले के उत्पादन की गतिविधियों के लिए तथा कबीले को शत्रुओं से बचाने के लिए देवताओं के सम्मुख समस्त कबीले की ओर से प्रतिनिधि बन गया तथा वह कृषि के लिए आवश्यक जानकारियां जैसे मौसम की जानकारी इत्यादि भी रखने लगा, जिसे वह देवताओं का आशीर्वाद बना कर एक रहस्य के तौर पर प्रस्तुत करता। इस प्रकार कबीले में मानसिक कार्य एवं शारीरिक कार्य के श्रम के बटवारे की नींव रखी जा चुकी थी। कबीले के सरदार के पास अन्य कबीलों के साथ होते युद्धों के दौरान प्राप्त हुए लूट के माल में से अपनी पोजीशन के कारण अधिक हिस्सा हड़प सकने के अवसर पैदा होने लगे। इस दौरान कृषि योग्य भूमि के टुकड़े अलग-अलग सदस्यों को कृषि करने के लिए दिये जाने का रिवाज शुरू हो गया तथा निजी सम्पत्ति का संकल्प अस्तित्व में आया। कबीले का सरदार अन्य कबीलो के लोगों को गुलाम बना कर अपने खेतों में काम पर लगाने लगा तथा दूसरे कबीले की जमीन में से भी बड़ा हिस्सा रखने लग गया। इस प्रकार वह कबीले में धनी व्यक्ति की हैसियत में आने लगा। उसके नजदीक के व्यक्ति भी उसी की भांति ही धनी होने लगे। परन्तु अभी भी कबायली समाज का पूर्णतः खात्मा नहीं हुआ था। अभी भी सब कुछ सांझा ही था, चाहे कबीले के सरदार तथा उसके नजदीकी व्यक्ति तथा पुजारी अपना हिस्सा बढ़ाने की कोशिश करते थे। सरदार अभी राजसत्ता का रूप नहीं था, वह कबीले से ऊपर बैठी कोई वस्तु नहीं था, बल्कि वह कबीले का ही एक सदस्य था। परन्तु कबीले के सदस्यों में आर्थिक एवं सामाजिक असमानता उत्पन्न हो चुकी थी। इस से आगे जा कर जनसंख्या बढ़ने के कारण तथा कई काबायली ग्रामों के मिल जाने से नगरों का तथा फिर शहरों का उदय हुआ तथा कबीलों के सरदारों तथा उनके नजदीकी लोगों का एक धनी वर्ग अस्तित्व में आने लगा। वे अपने ही कबीले के कंगाल हो चुके व्यक्तियों को अथवा अन्य कबीलों से कैद किये लोगों को गुलामों के रूप में प्रयोग में लाने लगे, इस प्रकार प्रथम वर्ग आधारित समाज दास प्रथा वाले समाज की नींव पड़ी। फिर सामाजिक विकास के पड़ाव को पार करता हुआ मानवी समाज दास प्रथा से निकल कर सामन्तवादी समाज में तथा फिर पूंजीवादी समाज में पहुँचा। परन्तु सवाल यह खड़ा होता है कि मानवी-समाज में आते तथा आ चुके इन परिवर्तनों के पीछे कौन सी चालक शक्तियां है जिनकी बदौलत मानव समाज लगातार विकास के उच्चत्तर स्तर में परिवर्तित होता चला गया तथा ये चालक शक्तियां किन नियमों के अधिन कार्य करती है? साथ ही यह सवाल भी पैदा होता है कि मानव समाज की भविष्य की दिशा क्या हो सकती है? इससे हमारी मानव समाज के प्रति समझ और भी विकसित होगी, दूसरे जब हमें इन शक्तियों एवं नियमों का ज्ञान होगा तो हम इसका प्रयोग करते हुए अपने समाज को सचेत रूप में अगले पड़ाव पर ले जा सकने में समर्थ हो सकेंगे।

इन प्रश्नों का उत्तर 19वीं सदी के महान दार्शनिक एवं विज्ञानी कार्ल मार्क्स ने दिया। उन्होंने मानव इतिहास के विकास के पीछे कार्यरत चालक शक्तियों एवं नियमों को खोजा तथा मानव के इतिहास को क्रमबद्ध रूप दिया। इस से पूर्व मानव इतिहास प्राकृतिक तौर पर घटित हो रही घटनाओं का एक समूह प्रतीत होता था अथवा इसके पीछे किसी दैवी, रहस्यमयी शक्ति का हाथ दिखाई देता था। मार्क्स की मानवता को यह महान देन है, उन्होंने अपनी इस खोज़ को ऐतिहासिक पदार्थवाद का नाम दिया। उनके मित्र एंगेल्स ने भी ''परिवार, निजी सम्पत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति'' नाम की पुस्तक एवं वानर से मानव तक विकास में श्रम द्वारा डाला गया हिस्सा'' नाम के लेख द्वारा इस खोज में अहम योगदान दिया।

शेष अगले अंक में

हिन्दी अनुवाद - बतवन्त सिंह प्राध्यापक

अंधविश्वास के चलते

प्राण लौटने की उम्मीद में दबाया बच्चे का शव

गांव खेड़ी लांबा में कक्षा तीसरी में पढ़ने वाले एक बच्चे की बिजली का करेंट लगने से मौत हो गई। एक विश्वास के के चलते परिजनों ने बच्चे को करीब पांच घंटे तक मिट्टी में दबा कर रखा। लेकिन उसमें प्राण नहीं लौटे। सूचना मिलने पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से डॉक्टर भी मौके पर पहुंचे। डाक्टरों ने मौके पर पहुंच कर बच्चे की मौत की पुष्टि कर दी। गांव खेड़ी लांबा में तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे मोहित की मौत अचानक करेंट लगने से घटना स्थल पर ही मौत हो गई। करेंट के प्रभाव से मौत होने के कारण परिजनों ने बच्चे के शव को चिकित्सकों के पास ले जाने की मंशा जाहिर की पर ग्रामीणों ने बच्चे के फिर से जीवित होने की उम्मीद में सहमति बनाई कि बच्चे के शव को गर्दन तक मिट्टी में दबाया जाए। ग्रामीणों का विश्वास रहता है कि मिट्टी में दबाए जाने से करेंट का प्रभाव समाप्त हो जाता है और प्राण लौट आते हैं। इसी विश्वास के साथ घर में ही गड्ढा खोदकर उसे गले तक मिट्टी में दबा दिया। करीब पांच घंटों तक बच्चे के शव को गर्दन तक मिट्टी में दबाए रखा गया। हादसे की सूचना मिलने के बाद स्वास्थ्य विभाग की ओर से डॉक्टर भी मौके पर पहुंचे। डॉक्टरों की टीम ने परिजनों को समझाते हुए बच्चे को बाहर निकाला और जांच के बाद उसकी मौत की पुष्टि कर दी। इसके बाद परिजनों ने बच्चे का अंतिम संस्कार कर दिया। मोहित की मौत पर गांव खेड़ी लांबा में सन्नाटा पसरा हुआ है। कलायत में एसएमओ बलविंद्र गर्ग ने बताया कि चिकित्सा जगत में ऐसा कोई उपाय नहीं है कि मिट्टी में दबाए जाने से प्राण लौट आते हैं। यह मिथ्या है। बच्चे की मौत हो चुकी थी।

अमर उजाला 22-10-2013

डायन बताकर महिला को पीटा, शराब पिलाई और निर्वस्त्र कर पूरे गांव में घुमाया

झारखंड के लोहरदगा जिले में डायन होने के आरोप में एक 50 वर्षीया महिला को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने की शर्मसार कर देने वाली घटना सामने आयी है। निर्वस्त्र कर घुमाने से पहले महिला को शराब पिलाई और बुरी तरह पीटा भी गया। घायल पीड़िता को अस्पताल में भर्ती कराया गया है जबकि परिजनों द्वारा की गई शिकायत के अनुसार पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। घटना के समय परिजन खेत पर काम करने गए थे और वह घर में अकेली थी। भरी पंचायत में गांव वालों ने उसे डायन करार देते हुए उसे महिलाओं के सुपुर्द कर दिया। महिलाओं ने उसे पहले जबर्दस्ती शराब पिलाई और फिर जमकर पिटाई की।

सिटी मीडिया, 05-11-2013

पटियाला में तांत्रिक और चेला धरा

एक व्यक्ति से उसकी घरेलू परेशानियां दूर करने का लालच देकर हजारों रूपये ठगने वाले एक ढोंगी तांत्रिक व उसके चेले को सिविल लाइन थाना पुलिस ने धरा है। दोनों आरोपियों को बुधवार को अदालत में पेश करके इनका एक दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया गया है। मामले के जांच अधिकारी एएसआई देवी राम ने बताया कि एक प्राईवेट अस्पताल में काम करने वाले विकास कुमार ने सिविल लाइन पुलिस के पास बयान दिया है कि उसने टीवी पर तांत्रिक आसक अली का विज्ञापन देखा कि वह हर तरह की परेशानी दूर कर देता है।

अमर उजाला, 26-09-2013

बाबाओं के काले कारनामे

शीशे के सामने नग्नावस्था मे खड़ी करवाता था बाबा

अश्लीलता करने वाला बंगाली बाबा गिरफ्तार

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर (सिद्दीकी): दिल्ली पुलिस ने एक ऐसे ढोंगी बंगाली तांत्रिक बाबा को गिरफ्तार किया है, जो ब्यॉयफ्रेंड और पति को वंश में कराने की आड़ में महिलाओं का शारीरिक शोषण करता था और उनसे मोटी रकम भी वसूलता था। ढोंगी बाबा ने यूसुफसराय इलाके में पूरे तामझाम के साथ ऑफिस बना रखा था। इसकी पहचान सूफी बंगाली बाबा सुल्तान (47) के रूप में की गई है। पुलिस ने इसके पास से तंत्र-मंत्र करने का सामान और नकदी भी बरामद की है।

दक्षिणी जिले की पुलिस उपायुक्त छाया शर्मा ने बताया कि पुलिस को इस बंगाली बाबा की हरकतों से परेशान चल रही एक महिला ने शिकायत दर्ज कराई थी। महिला ने इस ढोंगी बंगाली बाबा तांत्रिक का एक विज्ञापन केबल टीवी पर देखा था। जिस पर दिए गए मोबाइल नंबर पर संपर्क करने पर जब वह बाबा के ठिकाने पर पहुंची तब उसे पता लगा। बंगाली बाबा पर आरोप है कि विज्ञापन देखकर दफ्तर आने वाली लड़कियों से पहले तीन हजार रूपये ठग लेता। इसके बाद उर्दू में एक कागज में कुछ लिख कर दे देता। लड़कियों को बाबा बताता था कि शीशे के सामने नग्नावस्था में खड़े होकर इस कागज को अपने चारों और घुमाना। इसके बाद कागज को एक कप में डालकर आग लगा देना। राख को पुड़िया में डालकर वापस पास लाना। वह बताता था कि इस राख की जब वह पूजा करेगी तब उसकी समस्या का निदान हो जायेगा।

बताते हैं कि इस पुड़िया कि पूजा करने के लिए वह 50 हजार रूपये मांगता था। पैसे नहीं होने की हालत में वह लड़कियों को अपने साथ चार बार शारीरिक संबंध बनाने के लिए दबाव डालता था। ढोंगी बंगाली बाबा का दावा था कि वह उसके बाद फिर पूजा करेगा और मुश्किल से निकाल देगा। अपने एक चेले और एक पार्टनर के साथ वह पिछले डेढ़ साल से इस गोरखधंधे में लगा हुआ था। यह लोग ऑफिस में जींस और टी शर्ट में घूमते थे। लेकिन जैसे ही कोई कस्टमर लड़की वहां पहुंचती ऊपर से चोगा पहन लेते। उसके पार्टनर हसन अली और चेले को पुलिस सरगर्मी से तलाश कर रही है। गिरफ्तार बाबा से पुलिस को तंत्र-मंत्र का सामानए भस्मए कैश और टोटका आदि करने का सामान बरामद हुआ है।

पंजाब केसरी, नई दिल्ली, 31-12-2011

शारीरिक शोषण के केस में रागी जेल में

भारत से यहां यात्रा पर आए 38 वर्षीय रागी अजय सिंह को एब्ट्सफोर्ड की एक नाबालिग लड़की के शारीरिक शोषण के केस में 90 दिन कैद की सजा सुनाई गई है। अजय सिंह अकाल तख्त के एक भूतपूर्व जत्थेदार का बेटा है जो 1990 के अन्त में सिखों की इस सर्वोच्च संस्था का जत्थेदार था। मिली जानकारी के अनुसार अजय सिंह इसी वर्ष के आरम्भ में कनाडा आया था तथा पुलिस को घटना के बारे में सूचना 9 फरवरी को मिली थी। अजय सिंह शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी का कर्मचारी था। घटना के बाद उसे सस्पेंड कर दिया गया था। उसे सजा एब्ट्सफोर्ड के जज ने सुनाई। सजा समाप्त होने पर उसे वापिस भारत भेज दिया जाएगा।

पंजाबी ट्रिब्यून 19-10-2013

परमपिता परमात्मा के सिवा

डॉ. रणजीत

कौन थामें है सूरज चाँद सितारों को आसमान में ?
किसने रची है असंख्य नीहारिकाओं-भरी यह सृष्टि
किसके आदेश से घूमती है यह पृथ्वी
होती है सुबह-शाम
बारी-बारी से बदलती हैं ऋतुएं ?
कौन है जो फूलों में खिलता है ?
पक्षियों में चहचहाता है ?
सरीसृपों में रेंगता है ?
हाथियों में चिंग्घाड़ता है ?
शेरो में दहाड़ता है ?
बादलों में कौंधता है ?
और समुद्रों में गर्जना करता है ?

कौन हो सकता है वह
उस सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर के सिवा ?

कौन है जिसके आदेश के बिना
हिलता नही है एक पत्ता तक ?
कौन जार्ज बुश से भिजवाता है ईराक में फ़ौजें
और ओसामा बिन लादेन से गठवाता है
ध्वंसजीवियों के दस्ते ?
किसने तुड़वायी सोमनाथ की मूर्तियाँ
महमूद गज़नवी से ?
और बाबरी मस्जिद बजरंग दल से ?
कौन पढ़ाता है नरेन्द्र मोदी और बालासाहब ठाकरे को
हत्यारे हिन्दुत्व का पाठ ?
कौन जैशे-मुहम्मद को सिखाता है जिहाद ?
कौन तालिबान से रखवाता है
लाल मस्जिद के दरवाजे पर बम ?
किसकी कृपा से हिटलर बरसों तक
यहूदियों की चमड़ी से बनवाता रहा लैम्पशेड
और ईदी अमीन खाता रहा मनुष्यों का मांस ?

कौन हो सकता है वह
परमदयामय जगद्नियन्ता जगदीश्वर के सिवा ?
कौन है जो बिना मूल की अमरबेल को पालता है ?
कौन है जो अकर्मण्य अजगर
और निकम्मे पंछियों को भोजन देता है ?
कौन गया के निठल्ले पंडों से छिनवाता है
बेवकूफ पिण्डदानियों के कपड़े तक
फिर भी कृपापूर्वक बचा लेता है उनके अण्डरवीयर
कौन गिरवाता है भारतीय नारियों के गर्भों से
बालिका-भ्रूण ?
कौन चुरवाता है हिन्दुस्तानी डॉक्टरों से
ऑपरेशन के नाम पर अबोध मरीजों के गुर्दे ?
कौन करवाता है हत्यारों से हत्याएं
बलात्कारियों से बलात्कार ?
और जजों से दिलवाताा है उन्हें कड़ी से कड़ी सजाएं
बरसों तक खिंचते रहने वाले मुकदमों के बाद ?
कौन सड़ाता रहा है निरपराधों को जेलों में
बिना मुकदमों के बीस-बीस साल तक ?
कौन लड़ाता है हिन्दुओं को मुसलमानों से
गूजरों को मीणों से
और सिक्खों को नामधारियों से
कौन पहनवाता है बाबा रामरहीम को
गुरू गोविन्द सिंह का लिबास
और सिक्खों में मचाता है बवाल ?
उस परमपिता परमात्मा के सिवा
और कौन हो सकता है वह ?

मो. 9019303518

बच्चों का कोना

नया तरीका–फोटोप्रिंट करने का

5 ग्राम पोटोशियम फैरिक अमोनियम साइट्रेट को अलग –अलग लगभग औंस पानी में घोल लो और फिल्टर पेपर से छानकर इन दोनों रासानिक घोलों को दो भूरी (ठतवूद) बोतलों में अलग – अलग ही भरकर रख लो। अब यदि तुम्हें अपना नाम या कोई स्केच छापना है, तो सबसे पहले तो तुम्हें उसका निगेटिव बनाना होगा और यह बनेगा ट्रेसिंग पेपर पर पेंसिल से अपना नाम या जो कुछ बनाना चाहते हो, बना लो फिर ब्रुश से उस पर काली स्याही फेर दो। सूखने के बाद यह तुम्हारे निगेटिव का काम करेगा। हां यदि तुम्हें फोटो छापनी है, तो कैमरे से खिंचा निगेटिव काम दे जाएगा।

दोनों बोतलों में से आवश्यकता अनुसार मात्रा में घोल लेकर एक अलग बर्तन में मिला लो। इस नये तैयार घोल को ब्रुश या रूई से उस कागज पर अच्छी तरह लगा लो जिस पर प्रिंट उतारना चाहते हो। घोल क्योंकि हरे रंग का होता है, अतः छुटी हुई जगह देख पाने में तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। कागज को किसी डिब्बे में या ऐसे कमरे में रखकर सुखा लो, जहां बहुत कम रोशनी आती हो। प्रिंट उतारने के लिए पता है क्या करना है तुम्हें ? इस कागज को लेकर दफ्ती पर रखो और फिर निगेटिव या ट्रेसिंग पेपर रखकर ऊपर से कांच के टुकड़े से दबाकर क्लिप से कस दो। धुप खिलाने के बाद कागज को निकालो। ध्यान से देखने पर तुम्हें कुछ भाग हरा व कुछ नीला नजर आएगा और जब इस कागज को साफ पानी नजर आएगा और जब इस कागज को साफ पानी से अच्छी तरह धो डालोगे तो हरा रंग साफ हो जाएगा व अंदर से कागज वास्तविक रंग निकल आएगा। इसे सुखाने के लिए अखबरों की तहों के बीच दबाकर अपना काम जल्दी खत्म कर सकते हो। चारों तरफ से अच्छी तरह से काटकर फालतू कागज निकालने के साथ ही तुम्हारा प्रिंट तैयार है।

दोनों बोतलों से मिलाकर बनाए गए घोल व प्रिंट के लिए तैयार किए गए कागज को एक घण्टे के अंदर ही उपयोग में ले लेना चाहिए वर्ना ये बेकार हो जाते है – इस बात का ध्यान रखना जरूरी है।

फायर प्रूफ झूला

गर्म पानी में जितना अधिक हो सके नमक घोल लो, ताकि नमक का खूब तेज घोल तैयार हो जाए। अब इस घोल में मलमल का टुकड़ा व दो मीटर के लगभग धागा डुबो कर अच्छी तरह भिगों लो। दोनों चीजों को बाहर निकालकर सुखाने के बाद एक बार फिर इसी घोल में डालकर निकालो और सुखा लो कपड़े व धागे को घोल में डुबाने व निकालकर सुखाने की इस क्रिया को जितना अधिक बार हो सके दोहराते जाओ। हां चिन्ता मत करना, क्योंकि इस क्रिया में न कपड़े की शक्ल में कुछ अंतर आएगा न धागे की शक्ल में ही। अब मलमल के इस कपड़े के चारों कोनों को धागे की सहायता से बांधकर एक घोल में डुबोकर सुखा लो यदि रखना इस क्रिया को तुम्हें कई बार दोहराना है।

इसके बाद अपने इस झूले को टांगकर उसमें अण्डे का खाली छिलका रख और नीचे से आग जलाओ। पूरा झूला तो कपड़े व धागे समेत जलकर भस्म हो जाता है, पर वह रे वाह! कमाल है कि अण्ड़ा वैसे ही लटका रहता है और इसका श्रेय जाता है नमक को। धन्यवाद नमक देव! बहुत खूब! सिर्फ खाने के ही नहीं और भी काम आते हो तुम तो!

स्वास्थ्य

सोते समय होने वाले भयानक अटैक

कई लोगों के लिए रात को सोते समय या नींद खुलने पर होने वाले डरावने अनुभव या अटैक एक आम बात है। यह माना जाता है कि ये बुरे स्वप्नों का नतीजा है और इन भयावह अनुभवों का व्यक्ति के जीवन की किन्हीं खास घटनाओं से अक्सर कोई संबंध नहीं होता।

असल मे रात को सोते समय होने वाले अत्यधिक चिंतायुक्त अनुभव के ज्यादातर केसों में इसका कारण तनाव होता है। जो कि एक व्यक्ति दिन के समय या जागते हुए अनुभव करता है। प्रायः रात के समय होने वाले डरावने अनुभव तब घटित होना शुरू होते हैं जब व्यक्ति की जिंदगी में कोई बड़ी तबदीली आती है।

जैसे कि किसी दूसरे शहर या देश में चले जाना, नौकरी बदलना, किसी प्रिय साथी या रिश्ते को गवा देना या किसी प्यारे जानवर को खो देना इत्यादि।

स्वप्न, तनाव व डरावने अनुभवः

कभी-कभार लोग सोते समय कुछ छोटे-मोटे भयानक व डरावने अनुभवों में से गुजरते हैं पर ये अक्सर उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी को प्रभावित नहीं करते। परन्तु लगातार घटने वाले ऐसे अटैक, कुछ दिनों के बाद व्यक्ति का तनाव तथा चिंता रोग की तरफ ले जाते हैं।

इस दौरान यदि व्यक्ति व्यवहार को काबू में रखता है तथा दिन के समय अपने मनोभावों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता तो रात के समय ये बुरे सपनों, अत्यधिक चिंता रोग व डरावने अनुभवो का कारण बन सकता है।

रात को होने वाले डरावने अनुभव व उसके परिणाम :

ये जानना जरूरी है कि सोते समय होने वाले डरावने अटैक एक लक्षण हैं, जो कि हमे हमारे आम मनौवैज्ञानिक हालात के ठीक न होने, अत्यधिक चिंता व रोजमर्रा के तनाव का संकेत देते हैं। आमतौर पर सोते समय होने वाले ये डरावने अटैक व्यक्ति को कोई शारीरिक नुक्सान तो नहीं पहुंचाते पर वास्तव में ये डर तथा आतंक के हालात पैदा करते है। जिसमें होने वाले तनाव की वजह से शारीरिक दर्द, सिरदर्द तथा खासकर कमर व कंधो का दर्द रहने लगता है।

ये रात के समय होने वाले भयानक अटैक नुक्सानदेह हैं क्योंकि ये आम आदमी की नींद में खलल डालते हैं और व्यक्ति को अच्छी और आरामदेह नींद नहीं लेने देते। कभी-कभी लोग भविष्य में होने वाले इन अटैक के बारे में भयभीत रहते हैं, इसलिए सोने से भी डरते हैं, जिस कारण व्यक्ति को नींद न आने की बीमारी लग जाती है जिसे कि 'इन्सोमनिया' कहा जाता है।

दुर्भाग्यवश, जितना लम्बा अर्सा एक व्यक्ति नींद न आने की बीमारी से पीड़ित रहता है उतना ही अगले होने डरावने अटैक अलग-अलग अनुभव से आएेंगे और ये भयानक चक्र व्यक्ति के स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है जिसके कि दुखद नतीजे हो सकते है।

आपको इसकी जानकारी होनी चाहिए। कि समय रहते मनौवैज्ञानिक सलाह तथा थरैपी इस कष्ट को दूर करने में सहायक हो सकती हैं ये थरैपी शरीर तथा मन में एक मनोवैज्ञानिक तालमेल को पुनः स्थापित कर रात के समय गहरी, शांत और सम्पूर्ण नींद लाने में सहायक हो सकती है। साईकोथैरापिस्ट आपकी दुश्चिंता को कारण को समझकर रोगी के व्यवहार, उसके सोचने व महसूस करने की क्रिया का अध्ययन कर रोग को आरम्भ से जान सकेगा। इस प्रकार से एक मनोवैज्ञानिक नई तकनीक व साईकोथरैपी का प्रयोग करके रोगी को आराम दिलाने में सहायक होगा। जहां तक संभव हो रोगी को जरूरत पड़ने पर दवाईयों की मदद भी ली जा सकती है। इस प्रकार यह ईलाज रोगी को जल्द आराम तथा अच्छे परिणाम दिला सकेगा। तथा रोगी अपना जीवन एक आम आदमी की तरह जी सकेगा।

डॉ. कुलदीप सिंह, (98960-63134)

तर्कशील हलचल

सैनी धर्मशला-पूण्डरी (जिला कैथल) में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की बैठक सम्पन्न

दिनांक 06-10-2013 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की बैठक श्री आर.पी. गान्धी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरियाणा प्रदेश के तर्कशील कार्यकत्ताओं ने भाग लिया तथा विभिन्न प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किए।

सर्वप्रथम श्री रामेश्वर दास जीन्द ने अपने विचार रखे। उन्होंने आसाराम बापू के प्रकरण उल्लेख करते हुए बताया कि अधिकतर बाबाओं की जीवनशैली इसी प्रकार की ही है। विजय कुमार कलायत ने तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों को और आगे बढ़ाने पर जोर दिया। विज्ञान ज्योति पत्रिका के संपादक बलवन्त सिंह ने मानव समाज के विकास के विभिन्न पड़ावों पर चर्चा करते हुए बताया कि मानव समाज हमेशा एक सा नहीं रहा है। यह विभिन्न पड़ावों से गुजर कर वर्तमान पूंजीवादी लोकतन्त्र के दौर में पहुँचा है तथा इस दौर पर आकर भी यह स्थिर नहीं रहेगा, यह और आगे बढ़ता हुआ समाजवादी दौर में भी अवश्य पहुँचेगा, जहां पर वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित मानव मूल्य ही प्रधान रूप में कार्यरत रहेंगे तथा जहां पर धर्म के नाम पर अथवा अन्य किसी भी प्रकार से मानव द्वारा मानव का शोषण नहीं हो सकेगा।

बैठक में जगत सिंह साकरा, मा. सुरेश कुमार, कृष्ण राजौंद तथा कृष्ण हलवाई ने हलके-फुलके अंदाज में तर्कशील चिन्तन पर आधारित अपने-अपने विचार रखे तथा सोसायटी की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में अपना-अपना पूर्ण योगदान करने का संकल्प लिया।

अध्यक्षीय भाषण में श्री आर.पी. गान्धी ने दर्शाया कि वे अब 86 वर्ष की आयु में भी सोसायटी के कार्यों को आगे बढ़ाने में कार्यरत हैं। आज के नवयुवकों को भी उनका अनुकरण करते हुए समाज के हित में सोसायटी की गतिविधियों से जी जान से जुट जाना चाहिए।

बैठक में सुभाष तितरम द्वारा तर्कशील साहित्य की स्टाल लगाई, जहां से कार्यकर्त्ताओं ने तर्कशील साहित्य की खरीदारी की।

इस बैठक में मंच संचालन की भूमिका बलजीत भारती (कुरूक्षेत्र) ने अत्यन्त सुचारू रूप से चलाई।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की बैठक की रिपोर्ट

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की एक बैठक दिनांक 10-11-2013 को सरस्वती बाला विहार स्कूल कैथल में सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष राजा राम हंडियाया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में सर्वप्रथम राजा राम हंडियाया ने अपनी बातचीत रखी, जिसमें उन्होंने तर्कशील सोसायटी हरियाणा के परिचय को विस्तार से रखा ताकि मीटिंग में आये हुए नयें साथी सोसायटी के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकें। सुभाष तितरम ने 'तर्कशीलता क्या है तथा क्यों जरूरी है' विषय पर अपनी बातचीत रखी। पिछले दिनों मीडिया में प्रमुख खबर बनी उत्तर प्रदेश के गांव डौंडिया खेड़ा में एक संत की भविष्यवाणी पर जमीन में दबे हुए खजाने को खोजने पर हुई भारत की जग हंसाई पर बलवन्त सिंह प्राध्यापक ने अपनी बातचीत में समझाया कि समय-समय पर इस प्रकार के धूर्त संत व बाबा लोग दबे हुए खजाने की मुगतृष्णा में बहका कर आम जनता को लूटने की घटनाएं हमारे देश में आमतौर पर हौती ही रहती हैं।

रामेश्वर जीन्द ने अपने वक्तव्य में बाबाओं की पोल पट्टियां खोलते हुए समझाया कि वैज्ञानिक चिन्तन अपना कर ही साधारण जनता इन पाखण्डियों की लूट से बच सकती है। तर्कशील सदस्य राजेश पेगा ने फीरा की बैंगलोर मीटिंग की रिपोर्ट प्रस्तुत की। बैठक को श्री लक्ष्मी आनंद व राकेश कुमार शास्त्री ने भी संबोधित किया।

अन्त में वरिष्ठ साथी श्री बलबीर सिंह ने अपने निजी अनुभव बताते हुए वैज्ञानिक चिन्तन की आवश्यकता को आगे बढ़ाने पर बल दिया।

बैठक में मंच संचालन करते हुए सोसायटी के महासचिव गुरमीत सिंह ने अन्य बातों के अलावा तर्कशील केन्द्र हरियाणा के निर्माण के बारे में, नास्तिक केन्द्र विजयवाड़ा में सम्मेलन 5-6 जनवरी 2014 के बारे में तथा फीरा द्वारा 24-11-2013 को अंबेदकर भवन-नई दिल्ली में सेमिनार व 25-11-2013 को जन्तर-मन्तर-नई दिल्ली में फीरा के प्रस्तावित घटनाक्रम के बारे में जानकारी दी तथा साथियों को अधिक से अधिक संख्या में पहुँचने का आह्‌वान किया।

8 सितम्बर, 2013 को श्री आर.पी. गान्धी ने पूण्डरी में श्री मान सिंह व श्री कृष्ण लाल द्वारा आयोजित मीटिंग में अपने विचार रखे तथा उपस्थित सदस्यों द्वारा उठाई गई शंकाओं को निराकरण किया। मीटिंग की कार्यवाही अढ़ाई घंटे तक चली। समाज में फैले हुए अन्ध-विश्वासो पर विस्तार से चर्चा हुई। आज भी कुछ साथी अंध-विश्वासों और कुरीतियों का शिकार हैं। उनके दिमागों में हलचल पैदा हुई व सच्चाई को समझने, जानने के लिए आतुर हुए। साथी कृष्ण लाल ने मन की बात को पहले ही जानने के बारे पर्चियों वाली चालाकी दिखाई। फिर चालाकी का पर्दाफाश किया। इस आइटम द्वारा साथियों के दिमागों में आकर्षण और रोचकता पैदा हुई। उसके बाद श्री आर.पी. गान्धी करौंठा में एक हताश मरीज को देखने के लिए गए और परामर्श द्वारा उसके अन्दर हिम्मत और होंसला पैदा करने का प्रयास किया। साथी मान सिंह की जिम्मेदारी लगाई कि वे मरीज को परामर्श सम्बन्धी सेवाएं देते रहें।

स्थानीय टी.वी. चैनलों पर तान्त्रिक बाबाओं का जो प्रचार चलता था कि जीवन की सभी समस्याओं का समाधान इन तांत्रिकों के पास है। यह प्रचार मैजिक-मैडिको एक्ट-1954 के अनुसार गैर-कानूनी है। इसके लिए श्री आर.पी. गान्धी ने चैनल के मालिकों से मिलकर यह समझाया कि यह गैर-कानूनी प्रसारण है और इससे जनता का भी शोषण होता है। अब इस प्रकार का प्रसारण बन्द है और जनता को भ्रान्तियों से छुटकारा मिला है।

आर.पी.गांधी

लघुकथा

ईनाम का हकदार

डा० प्रद्युम्न भल्ला कैथल

शर्मा जी नमस्ते..... उँचे स्वर में वर्मा ने कहा विद्यालय में घुसते ही।

- नमस्ते वर्मा जी,
- और सुनाईए, कैसा रहा आप का परीक्षा-परिणाम। वर्मा के स्वर में व्यंग्य का पुट था।
- कुछ खास नहीं बस वो
- अरे! आप तो सारा साल मेहनत करवाते हैं, एकस्ट्रा कलास भी लेते है फिर भी..... वर्मा ना जाने क्या-क्या कहता रहा। शर्मा जी खड़े ना रह सके। वे जानते थे वर्मा सारा साल मौज मारता था। अधिकारियों से सांठ-गांठ रखता था। हर वर्ष उन्हें खिला-पिला कर, नकल करवा कर अपना परिणाम शत-प्रतिशत ले आता था। वे कुछ ना बोले।

छुट्टी होने पर सब बाहर निकले। गांव की चौपाल से गुजरते हुए कुछ लोगों का वार्तालाप उन्हें सनाई पड़ा।

- दादा स्कूल में अब पहले जैसी बात ना रही...... .. इस बार सुना है आप ने शर्मा जी का परिणाम. .... मगर वर्मा जी का परिणाम बहुत अच्छा है एक युवक बोला।
- अरे रहने दे..... मैं जानता हूँ एक नम्बर का घटिया किस्म का और कमीना है यह वर्मा.....

- बेटा इन्सान का असली परिणाम उस के कामों में झलकता है........ शर्मा जी जैसा अध्यापक चिराग ले कर ढूँढने से न मिलेगा...... मेहनती ईमानदार, सहज और विषय का माहिर है वह...... बुजुर्ग बोला ये तो ठीक कहते है दादा, हम सब भी उन्हीं से पढ़े है...... मास्टर है तो असली वहीं।

शर्मा जी ने वर्मा जी की ओर देखा। उन की नज़रे झुक गई थी। उन्हें वहां से गुजरना भी मुश्किल हो रहा था। मगर शर्मा जी का चेहरा चमक रहा था।

केस रिपोर्ट

पेट की पथरी में बीयर का सेवन एवं बाबाओं के मानसिक प्रभाव की दहशत

— बलवन्त सिंह लैक्चरर

हरियाणा एवं पंजाब की सीमा पर बसे एक गांव में फौजा सिंह का परिवार अपना समान्य जीवन बिता रहा था। फौजा सिंह स्वयं तो एक राज-मिस्त्री का कार्य करता है। पहले तो उसका कार्य बहुत अच्छा चल रहा था, परन्तु पिछले कुछ अर्से से खनन पर लगी रोक के कारण अन्य राजगीरों की तरह से उसका कार्य भी बहुत ढीला पड़ गया था। फौजा सिंह के दो लड़के हैं। बडा लड़का एक प्राईवेट फैक्टरी में वैल्डर की नौकरी करता है तथा छोटा लड़का गांव में एक छोटी सी दुकान चलाता है। दोनों ही लड़के विवाहित हैं। बड़े लड़के के पास एक चार-पांच वर्ष की पुत्री पूनम है, दूसरे लड़के के पास अभी तक कोई संतान नहीं थी।

कुछ मास पूर्व घर की अल्मारी में रखी हुई बड़ी बहू की चांदी की पाजेबें तथा छोटी बहू की सोने की अंगूठी गायब हो गई, जबकि शेष जेवर उसी अल्मारी में ज्यों के त्यों रखे पड़े रहे। यह नुक्सान देख कर परिवार के सभी सदस्यों में मानसिक परेशानी छा गई। उसके कुछ समय पश्चात् बड़ी बहू का किसी कारण से गर्भपात हो गया। इस से उनकी मानसिक परेशानी और भी बढ़ गई।

फिर उस से कुछ समय के पश्चात् अल्मारी में रखे हुए पैसों में से 500 रूपये गायब हो गए। उसके पश्चात् तो घर में छोटी-मोटी विचित्र घटनाएं दिन-प्रतिदिन ही घटने लग गई। अब कभी घर के अन्दर अल्मारी में रखे हुए कपड़े कट जाते तो कभी धोकर सुखाने के लिए बाहर रस्सी पर टंगे हुए कपड़े कट जाते। एक दिन छोटी बच्ची पूनम के सिर के बाल कई जगहों से अपने-आप कटे हुए मिले। इस प्रकार घर में से कपड़े कटने एवं पैसे गायब होने का सिलसिला निरन्तर चलता रहा। अल्मारी का चाहे ताला भी लगा हुआ हो, तब भी उसमें से रखे हुए पैसे गायब हो जाते थे। किसी भी सदस्य के पहने हुए कपड़ों में रखे हुए पैसे अथवा पहनी हुई पैंट की जेब में रखे हुए बटुए से कभी भी पैसे गुम नहीं हुए थे। हां, जब कोई सदस्य अपनी पैंट अथवा कमीज उतार कर पैसों समेत अल्मारी में अथवा कीली पर टांग देता तो कुछ समय पश्चात् उस में से पैसे गायब हो जाते थे।

उनके गांव में ही एक महिला देवी की चौकी लगाती है। घर में विचित्र घटनाओं वाली समस्या से परेशान हो कर वे उस कथित देवी की चौकी में चले गए। उस तथाकथित देवी को इस समस्या के बारे में कुछ भी समझ नहीं आया। उसने यह कह कर अपना पल्ला छुड़ा लिया कि घर के पित्तर नाराज हो कर ऐसा कर रहे हैं। पित्तरों की शान्ति हेतू धर्म के नियमानुसार सारी कार्यवाही करने के पश्चात् भी घर में शान्ति न आ सकी। अजीबो-गरीब घटनाएं लगातार जारी रही, बल्कि अब समस्या और भी विकराल रूप धारण कर गई।

अब छोटी बहू हरमीत को दौरे पड़ने शुरू हो गए। वह घर का काम करते-करते अचानक बेसुध हो कर गिर पड़ती तथा काफी समय तक उसी अवस्था में पड़ी रहती। एक दिन हरमीत घर के बराम्दे में बैठी सब्जी साफ कर रही थी तो उसे ऐसा लगा कि कोई अनजान औरत घर के गेट पर मिट्टी का तेल छिड़क रही है। इस पर उसकी चीखें निकल गई तथा वह बेसुध हो कर गिर पडी। जब कई घण्टों तक उसे होश नहीं आया तो डाक्टर को बुलाया गया। डाक्टर ने आकर उसे टीका लगाया तो कुछ समय के पश्चात् वह उठ कर बैठ गई।

उसके पश्चात् छोटी बहू को एक अन्य समस्या ने घेर लिया। गांवो के अन्य घरों की तरह से उनका बाथरूम भी उनके मकान से थोडा दूरी पर है। अब जब भी वह बाथरूम जाती तो उसे लगता कि किसी ने उसके दोनों बाजू पीछे की ओर बांध दिए हैं। वह चीख मार कर वहीं गिर पड़ती। जब घर के सदस्य वहां जा कर देखते तो उसके हाथ पीछे की ओर मुड़े हुए होते तथा वह बेसुधा पड़ी हुई होती। अब जब भी उसे बाथरूम में जाना होता तो उसकी सास उसके साथ चली जाती, परन्तु ज्योंहि वह बाथरूम के अन्दर जाती तो सास के सामने ही उसके बाजू पीछे की ओर मुड़ जाते और वह चीख मार कर गिर पड़ती।

उसके घर वालों के लिए यह समस्या अत्यन्त गंभीर थी, वे उसे कई बाबाओं की चौकियों पर लेकर गये। किसी ने कह दिया कि इसके पीछे जिन्न और प्रेत

लगे हुए हैं तथा किसी ने बता दिया कि यह सती माता का कार्य है। बाबाओं द्वारा जिन्न, भूत-प्रेतों को भगाने के नाम पर हजारों रूपयों के अनुष्ठान करवाए गए परन्तु उनकी समस्या और भी विकराल रूप धारण करती चली गई।

अन्त में उनका एक रिश्तेदार - जो तर्कशील सोसायटी द्वारा समाज हित के लिए किये गए कार्यों से परिचित था- उन्हें लेकर मेरे पास आ गया। उन से बातचीत द्वारा समस्या की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् मैंने उसी समय उनके साथ जाकर उनकी समस्या का समाधान करना उचित समझा।

उनके घर पहुँच कर घर के प्रत्येक सदस्य के साथ मैंने बारी-बारी से एकान्त में बातचीत की और दोषी की पहचान कर ली। वह छोटी बहू हरमीत थी, जो इन सभी घटनाओं को अन्जाम देती थी। जब मैंने उसे साधारण बोलचाल में समझाया कि यह सब कुछ वह स्वयं ही करती है तो वह सएकदम उखड़ गई। फिर मैंने उससे लम्बी बातचीत की तथा अपने तर्कों द्वारा उसे पूरी तरह से निरूत्तर कर दिया। तब जाकर उसने स्वीकार किया कि सभी कपड़े उसी ने कैंची के द्वारा काटे हैं। छोटी बच्ची के बाल भी कैंची द्वारा काटना उसने स्वीकार कर लिया। उसने स्वीकार किया कि अल्मारी में से पैसे भी वह ही उठाती रही है। यह पूछने पर कि ताला लगी अल्मारी में से वह पैसे किस प्रकार उठाती रही है? तो उसने जवाब दिया कि ''सभी सदस्य जब भी अल्मारी खोलते हैं तो बाद में ताला लगाकर चाबी उसके समीप ही रख देते हैं। मुझे पता होता है कि चाबी कहां पर है। अतः मैं दांव लगते ही चाबी उठाकर ताला खोलती हूं तथा पैसे उठाकर ताला लगाकर चाबी पुनः वहीं पर रख देती हूं।'' जेवरों के बारे में उसने बताया कि ''सोने की अंगूठी तो मेरी ही थी। मैंने उसे तुड़वा कर नई बनवा ली तथा कह दिया कि मेरे मायके वालों ने मुझे नई बनवा कर दी है। चांदी की पाजेबें मैंने तोड़ कर अपनी पेटी में छुपा कर रखी हैं।''

बाथरूम में जा कर हाथ पीछे मुड़ जाना तथा वहां चीखने चिल्लाने के बारे में उसने बताया कि ''जब हम बाबाओं की चौकियों पर जाते रहे थे और उन बाबाओं ने पुच्छा में बता दिया कि यह जिन्न, भूत-प्रेतों का कार्य है तो मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि हमारे बाथरूम में वही भूत-प्रेत बैठे हुए हैं। जब मैं बाथरम में जाती तो मुझे ऐसा लगता जैसे कोई आदमी पीछे से मुझे पकड़ कर मेरे हाथ बांध रहा है। मैं चीखने चिल्लाने लग जाती, फिर मुझे पता ही नहीं रहता था कि मेरे साथ क्या हो गया है। जब मुझे होश आता तो घर वाले ही बताते कि तू तो बाथरूम में जाते ही चिल्लाकर बेहोश हो गई थी।'' अपनी सास के साथ होते हुए भी उसे ऐसा महसूस होता था कि अन्दर कोई आदमी खड़ा है, जबकि सास को कुछ भी ऐसा वैसा दिखाई नहीं देता था।

उस के पश्चात् मैंने सम्मोहन विधि द्वारा उसके मन में बैठे हुए भूत-प्रेतों के डर को दूर कर दिया तथा उससे वचन लिया कि अब से वह ऐसा वैसा कुछ भी नहीं करेगी। उसने यह वचन देने के साथ-साथ निवेदन भी किया कि उसके पति की बुरी आदतों को तथा उसके रूखे व्यवहार को भी सुधार दिया जाए। मैंने उसे आश्वासन दिया कि उसके पति से बातचीत करके उसके रूखे व्यवहार को एवं उसकी बुरी आदतों को सुधारने का हम पूरा प्रयत्न करेंगे। अब जब उसे सम्मोहक नींद से जगाया गया तो वह अत्यन्त प्रसन्न थी।

कारणः- हरमीत के जेठ व जेठानी का परस्पर अत्यधिक प्रेम था। वे दोनों आपस में एक-दूसरे को किसी भी बात पर इनकार नहीं करते थे, वे एकदम से एक दूसरे का कहना मान जाते थे। परन्तु हरमीत का पति कुछ अलग स्वभाव का था। वैसे तो उसे किसी प्रकार का ऐब नहीं था। वह अपनी पत्नी की जायज़ बात को तो मान लेता था, परन्तु जो बात उसे अनुचित लगती, उस पर वह उसे कई बार झिड़क भी देता था।

हरमीत के मायके वाले दिल्ली वाले बाबा ठाकुर सिंह के अनुयायी थे। हरमीत की यह दूसरी शादी थी। उसकी प्रथम शादी जहां पर हुई थी, वह परिवार शराब इत्यादि का सेवन करता था। बाबाओं की अनुयायी होने एवं नामदान लिया होने के कारण हरमीत शराब से अत्यधिक नफरत करती थी। वह अपने प्रथम ससुराल में कुछ दिन ही रही थी। उसने अपने ससुराल जाते ही अपने पति को शराब पीने से रोकने की कोशिश की तो उसके पति पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ गया। उसने गुस्से में उसको दिखा कर और अधिक पीनी शुरू कर दी। इस से नाराज हो कर वह अपने मायके चली गई। बाद में पंचायतों का दौर चला तथा दोनों का पंचायती तौर पर तलाक हो गया।

अब जब उसकी दूसरी शादी हो गई और वह अपने दूसरे ससुराल में आ गई। यहां पर ससुराल में कोई भी सदस्य उसे शराब का सेवन करता हुआ दिखाई नहीं दिया। अतः यहां उसका कुछ समय सुखपूर्वक गुजर गया। अब शादी के लगभग एक-डेढ वर्ष के बाद हरमीत के पति मनप्रीत के पेट में कभी-कभी तेज दर्द होना शुरू हो गया। मैडीकल टैस्टों की रिपोर्ट में उस के गुर्दे में पथरी निकली। डाक्टरों ने उसे बताया कि पथरी अभी छोटी ही है, अतः डाक्टरों ने कुछ दवाईयां लिख दी, जिससे कि दर्द में आराम भी रहे।

अब पथरी की शिकायत का पता चलने पर कई नीम हकीमों के कहने पर उसने कई प्रकार की आयुर्वैदिक जड़ी-बूटियों का सेवन किया, परन्तु पथरी ज्यों की त्यों बनी रही। कभी-कभी उसके पेट में बहुत तेज दर्द उठता। पथरी के असहनीय दर्द से छुटकारा पाने के लिए किसी नीम हकीम ने उसे बीयर पीने का सुझाव दिया उनका तर्क था कि बीयर पीने से पेशाब अधिक मात्रा में आता है तथा अधिक मात्रा में पेशाब आने के कारण धीरे-धीरे टूट कर पथरी गुर्दे से बाहर निकल जाती है।

अतः मनप्रीत ने प्रतिदिन सायंकाल के समय बीयर का सेवन करना शुरू कर दिया। अब पति को बीयर का सेवन करते देख कर हरमीत के मन में अपने प्रथम ससुराल वाला घटनाक्रम स्मरण होना शुरू हो गया। उसे बीयर पीता देख कर वह उसे सीधे तो कुछ न कहती परन्तु अन्दर ही अन्दर से कुढ़ती रहती। फिर एक दिन वह इस बात को लेकर अपने पति से झगड़ भी पड़ी। घर वालों ने बीच बचाव करके मामला शांत तो करवा दिया और मनप्रीत ने उनके सामने बीयर न पीने की हामी भी भर दी। परन्तु अब वह चोरी-चोरी बीयर पीने लग गया। चोरी ज्यादा दिन छुपी न रह सकी, हरमीत को जब फिर से पता चल गया कि वह बीयर पी लेता है तो उनमें झगड़ा और तनाव बढ़ता चला गया, जिस से वह और भी कुंढित होती चली गई। क्योंकि अपने बाबा की पक्की श्रद्धालु होने के कारण हरमीत को हर किस्म की शराब से अत्यधिक नफरत थी।

शादी के पश्चात् अपने ससुराल आ कर कुछ समय के पश्चात् हरमीत ने अपने पति को अपने दिल्ली वाले बाबा जी के सत्संग में चलने तथा उनका नामदान लेने के लिए काफी मजबूर किया था। परन्तु मनप्रीत ने भी तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने भी उसकी बात अनसुनी कर दी थी। अब जब उसका पति बीयर पीने लगा तो उसके कारणों को जाने बगैर उसकी अपने ससुराल वालों से नफरत और भी बढ़ती चली गई। यही नफरत अन्त में मानसिक रोग का कारण बन गई।

उसके ससुराल वालों ने उसे जो सोने की अंगूठी पहनाई थी, उसका डिजायन उसे पसंद नहीं था। अब जब वह मानसिक कुण्ठा का शिकार थी तो एक दिन उसकी सास व जेठानी किसी कार्य से घर से बाहर गई थी तो उसने अल्मारी में से अपनी सोने की अंगूठी तथा साथ ही जेठानी की चांदी की पाजेबें भी उठा ली। इसी प्रकार वह बाकी घटनाएं भी करती रही। अन्धविश्वासी होने के कारण उसके ससुराल वाले जब बाबाओं की शरण में चले गए तथा उन बाबाओं ने इसे जिन्न, भूत-प्रेतों का कारनामा घोषित कर दिया तो वह और भी उद्दण्डता के साथ कपड़े काटने अथवा पैसे उठाने या अन्य घटनाएं करती चली गई। इसी दौरान आत्म ग्लानि से मन पर अत्यधिक बोझ पड़ने तथा अंधविश्वासी मानसिकता के कारण उसे अपने बाथरूम में भूत-प्रेत खड़े हुए दिखने लगे। जब वह बाथरूम में जाती तो इसी मानसिक बोझ के कारण उसे कथित भूत-प्रेत उसका गला दबाते एवं उसके हाथ मरोड़ कर पीछे की और बांधते हुए महसूस होने लगे।

अवचेतन अवस्था में योग्य सुझाव देने से उसके मन से भूत-प्रेतों का डर पूर्णतः दूर कर दिया गया। अब लगभग 5-6 महिने बीत चुके हैं, तब से वह परिवार फिर से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा है।

नोटः- यह एक सत्य घटना है, परन्तु सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पात्रों के नाम व स्थान बदल दिए गए हैं।

सोशल नेटवर्किंग का बढ़ता हुआ रूझान

—————————— डा. हरिश मल्होत्रा, ब्रमिंघम, मो. 00447763013424

कहावत है कि, ''एक चुप सौ सुख''। यह कहावत हमें अनेक प्रकार की परेशानियों से बचाती है तथा हमारी शारीरिक एवं मानसिक सेहत को भी शक्ति प्रदान करती है। चुप रहने से हम चुगली करने से बचे रह सकते हैं, इस से किसी के मन को ठेस लगने से बचाव रहेगा। नफ़रत तथा क्रोध जैसी बुराई से परहेज होगा। मन शांत रहेगा तथा अपनी छवि को भी अधिक प्रभावशाली व खूबसूरत बना लेंगे। और तो और हम स्वयं को 'बुद्धिमानों' में गिनने लग जाएंगे। लोग हमारा सम्मान भी अधिक करेंगे। 'पहले तोलो फिर बोलो' जैसी कहावत हम पर लागू होने लग जाएगी। जिस प्रकार कथन है कि ''गप्पों की बढ़ौतरी में अपराध की कमीं नहीं, परन्तु जो अपने होठों को रोकता है, वह बुद्धिमान है।'' परन्तु आजकल नई-नई खोजों ने जहां जानकारी व संचार को बढ़ा दिया है वहां कई प्रकार की समस्याओं में भी वृद्धि की है।

कम्पयूटर चाहे मोबाइल फोनों पर है अथवा एक स्थान पर घर में पड़ा है, इसके साथा हम दुनिया के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक जुड़े हुए हैं। इस में अत्यधिक जानकारी है। कम्पयूटर के साथ जुड़ी बहुत की कलाओं में हम बहुत सी जानकारी एकत्र करके रख भी सकते हैं। चाहे यह सारी तरक्की अत्यन्त गर्व की बात है परन्तु इसके साथ बहुत सी बुराईयां भी बिन बुलाए ही आती जा रही हैं। जैसे की अनेकों बच्चे तथा वयस्क भी सारा दिन अथवा अधिकतर समय इन कलाओं पर खेल ही खेलते रहते हैं तथा अपना समय व्यर्थ में बर्बाद करते रहते हैं। उन्हें फिर किसी अन्य बात की सुध-बुध ही नहीं रहती। वे निकम्में एवं निखट्टू बन जाते हैं जो बाद में कई प्रकार की मानसिक बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। कई हिंसक खेल व्यक्ति में क्रोध की भावनाएं उत्पन्न कर सकते हैं तथा हमें गुस्सैल बना सकते हैं। कम्पयूटर एवं इसके साथ जुड़ी अन्य कलाओं के द्वारा अश्लील किस्म की फिल्मों की ओर झुकाव हो सकता है। जिनके प्रभाव में कई प्रकार के घिनौने अपराध किये जा सकते हैं। जो एक अन्य पागलपन आजकल तूल पकड़ रहा है, वह है सोशल नेटवर्किंग का। बहुत से लोगों ने टवीटर, यू ट्यूब तथा फेसबुक खोल रखी हैं। तथा उन पर कई-कई घण्टों का समय गुजारते हैं। ऐसा करने से उनकी शारीरिक गतिविधियां भी रूकती हैं तथा मानसिक तौर पर आदत सब्त तक पहुँच जाती है। उन्हें लगता है कि, ''यदि आज मैंने फेसबुक न देखी तो दुनिया तबाह हो जाएगी।'' फेसबुक पर हम अपने फोटो के अतिरिक्त अन्य बहुत सी निजी जानकारी भी देते हैं जैसे कि घर का पूरा पता, फोन नम्बर, अपना व्यवसाय तथा कहां पर कार्यरत हैं। हमारी पढ़ाई, आदतें, जीवन की व्यस्तताएं तथा हमारे चिन्तन से संबन्धित विचार, लेख, टिप्पणियां इत्यादि। इसके अतिरिक्त हम अपने परिवार का ब्यौरा तथा उनके फोटो भी फेसबुक पर लगा देते हैं। हमारे साथ एवं परिवार के साथ क्या-क्या घटित हो रहा है, हम जग जाहिर कर देते हैं। यदि हम अपने निजी दोस्तो के साथ कोई विचार सांझा करते हैं, तो उसके बारे भी सारे संसार को खबर कर देते हैं। यह हमारी निजी जानकारी होती है। आम बोलचाल में हम किसी अपरिचित व्यक्ति को अपनी निजी जिन्दगी में शामिल नहीं होने देते परन्तु फेसबुक पर हम अपनी पूर्ण नुमायश लगा देते हैं। हम ये भी खबरें लगा देते हैं कि हम छुट्टियों पर जा रहें हैं तथा कब वापिस लौटेंगे। कब हम घर पर होते है तथा किस समय हम घर पर नहीं होते। कहां पर अपने कार्य अथवा स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी जाते हैं इत्यादि चोरों को अपने घर में खुला बुलवा देने वाली बात है। इसके अतिरिक्त हमारे निजी फोनों के द्वारा हमें व हमारे परिवार के शेष सदस्यों को कोई परेशान कर सकता

है। आपको व आपके परिवार को डरा-धमका सकता है। यह कार्य कोई रिश्तेदार भी कर सकते हैं तथा अनजान लोग भी।

प्रायः हम यह भूल जाते है कि दुनियां में अनेकों ऐसे व्यक्ति भी हैं जो हमारे हितैषी भी है और साथ ही हमारे शत्रु भी। उन्हें हमारी तरक्की, खुशहाली, नौकरी इत्यादि किसी भी बात पर ईर्ष्या हो सकती है तथा हमको तंग करके उन्हें खुशी मिल सकती है। हम उन्हें ऐसा मौका क्यों दें? यदि वे मानसिक तौर पर बीमार हैं तो इस बीमारी के शौक के लिए हम उन्हें मौका क्यों दें? चाहे फेसबुक पर दी गई जानकारी दोस्तों के लिए हो अथवा जानकारों के लिए, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि आज वाले जानकार अथवा दोस्त हमारे सदैव हितैषी रहेंगे। यह हमारी निजी जानकारी कोई किसी को भी ई-मेल कर सकता है। कई इस प्रकार के मामले देखने में आए हैं, जहां किसी की फोटो को फेसबुक से लेकर किसी अन्य के साथ जोड़कर बदनामी की गई है। यह कार्य महिलाओं एवं लड़कियों के शोषण के लिए विशेष तौर पर प्रयोग में लाया जाता है। किसी को किसी के साथ भी आपत्तिजनक हालत में दिखा कर जग-जाहिर किया जा सकता है। मैं कुछ मामलों को जानता हूं जहां लोगों को गम्भीर किस्म की मुक्कदमें बाजी में डाल दिया गया। जबकि वे लोग उस समय उस देश में भी नहीं थे। इन उदाहरणों से मिलती-जुलती और भी बहुत सी बातें होंगी जो सीधे-साधे लोगों को उल्झनों में डाल सकती हैं। क्योंकि घटिया सोच वाले लोगों का दिमाग हर समय उल्टी दिशा में लगा रहता है।

एक और बहुत बड़ा नुकसान फेसबुक से यह होता है कि यदि आपने किसी नौकरी के लिए अर्जी दी है तो आजकल बहुत सी फर्में आपकी फेसबुक वाली जानकारी से अनुमान लगा लेती हैं कि इस व्यक्ति को नौकरी दी जाए अथवा नहीं। हो सकता है अपने कोई निजी जानकारी नौकरी लेने के समय अर्जी में न लिखी हो। वे इस बात से भी नतीजा निकाल लेते हैं कि इस इन्सान के निजी विचार क्या हैं? यह कैसी राजनीति में विश्वास रखता है? इसके दोस्त कैसे हैं? इसके शौक क्या हैं? इसके धार्मिक विचार किस प्रकार के हैं? क्या यह हमें किसी मुसीबत में तो नहीं डाल देगा? यह बातें हमारी नौकरी से चाहे संबन्धित न भी हों, परन्तु फर्मो के उच्चाधिकारी इन बातों से कई प्रकार के नतीजे निकाल कर आपको नौकरी नहीं देंगे चाहे आपके पास उचित योग्यता एवं तजुर्वा इत्यादि भी हो।

इस बाबत हम यह कर सकते हैं कि अपने सोशल नेटवर्क एकाऊंट पर प्राईवेसी सैटिंग्ज के द्वारा पूरी जानकारी हासिल करें तथा इसे प्रयोग करने की दक्षता भी प्राप्त करें। फोटो अथवा अन्य निजी जानकारी केवल अत्यावश्यक मामलों में कुछेक उन लोगों को भेजी जाएं जिन पर पूर्णतः विश्वास किया जा सकता हो फिर भी ध्यान रखने योगय बात यह है कि जो कुछ भी हम भेजते हैं, वह किसी और के हाथ भी लग सकता है। कम्पयूटर कलाओं में भी कई प्रकार की हेरफेरिया होती हैं। हमें समय-समय पर अपनी फेसबुक को देखते रहना चाहिए कि जो भी आपने उस पर डाला है, क्या वो वहीं पर है तथा किसी ने उसे तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश तो नहीं की अथवा किसी ने निजी जानकारी चुरा तो नहीं ली। अगर ईमानदार लोग दुनियां में हैं तो बेईमानों की भी कमी नहीं है। यदि हम चाहते हैं कि निजी जानकारी से प्रदान करने से हम पर कहर बरस सकता है तो निजी दोस्तों को भी यह जानकारी फेसबुक के द्वारा मत दो। आवश्यकता होने पर यह जानकारी किसी अन्य तरीके से भेजी जा सकती है। जब हम फोन पर बात करते हैं तो हमारी आपसी बातचीत हमारे दरम्यान ही रहती है, किसी अन्य के कानों में पड़ने का खतरा कम हो जाता है बशर्ते यह जानकारी रिकार्ड न कर ली जाए। हमें लापरवाही से बचना चाहिए।

फेसबुक का एक अन्य नुकसान यह है कि

हम सस्ती शोहरत हेतु कई लोगों को दोस्ती के नाम पर परवानित कर लेते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जितने अधिक दोस्त होंगे, उतना ही सोशल नेटवकिंग पर समय बिताया जाएगा तथा जब तक एक बार इसका स्वाद पड़ गया तो इसका जनून भी हो सकता है। इसका नतीजा यह होगा कि बहुत सा बहुमूल्य समय व्यर्थ एवं बर्बाद होने लग जाएगा। घर के आवश्यक कार्य ठप्प हो जाएंगे, इसके कारण घरेलू वातावरण में खटास उत्पन्न हो जाएगी तथा आप कहेंगे कि ''मैं किस फन्दे में फंस गया, मैंने तो अपना व अपने परिवार का सकून गंवा लिया।'' इस बुरी आदत से छुटकारा ही बढ़िया तरीका है।

कई बच्चे तो इसमें इतना अधिक धंस जाते हैं कि वे घर का कार्य तो क्या स्कूल का कार्य भी नहीं करते। वे फटाफट घर पहुँचने की करते हैं ताकि देखा जाए कि जो मैंने फेसबुक पर भेजा था उसका मेरे दोस्तों ने क्या जवाब दिया है तथा किस-किस ने जवाब दिया है। अब उस सभी को उनका जवाब देना पड़ेगा तथा इस दौरान इस दौरान यदि आपके मां-बाप अथवा बहन भाई आकर आपको कोई बात कहता है तो आप आपे से बाहर होकर उसके साथ लड़ने लग जाते हो।

हम सभी को पता है कि समय अत्यन्त मूल्यवान है। समय को बर्बाद करना पैसे को बर्बाद करने जैसा है। हमें यह देखना पड़ेगा कि सोशल नेटवर्किंग पर कितना समय खर्च किया जाता है। एक दिन का हिसाब करके इसे सप्ताह के बाद अथवा महीने बाद देखो कि कुल कितना समय लगा है। अब इसे समझने की जरूरत है कि क्या इतना अधिक समय नेटवर्किंग पर लगाना उचित है, यदि जवाब नहीं में है तो फैसला करो कि कितना समय लगाना है तथा उस फैसले पर दृढ़ इरादे के साथ पहरा दो।

अगर आप मां-बाप हैं तथा आपके बच्चे सोशल नेटवर्किंग करते हुए हद से ज्यादा समय बिताते हैं, तो यह समझने की कोशिश करो कि इसका कोई खास कारण है अथवा नहीं? उदाहरण के तौर पर साईबर किड्स (Cyber Kids) नामक पुस्तक में नैन्सी ई. विलार्ड बताती हैं कि सोशल नेटवर्किंग का हद से ज्यादा प्रयोग करने वाले शायद चिंता एवं तनाव का शिकार हों। उनका कथन है कि: ''किशोर आयु के बहुत से बच्चों को यह चिन्ता लगी रहती है कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं। उनके अनुसार जितने अधिक सोशल नेटवर्क पर उनके दोस्त होंगे, उनता अधिक लोग उनको पसन्द करते हैं। इसी कारण उन्हें सोशल नेटवर्किंग की लत लग सकती है।'' शोशल नेटवर्किंग अथवा कम्पयूटर तथा किसी भी अन्य कार्य को अपने घर के सदस्यों से अपने रिश्ते में रूकावट न बनने दो। डॉन टेप्सकाट अपनी पुस्तक 'ग्रोन अप डिजिटल' (Grown Up Digital) लिखते है कि, इंटरनेट को दाद देनी चाहिए कि एक तरफ तो यह दूरस्थ क्षेत्रों में रहते हमारे परिवार के सदस्यों के साथ हमारी बातचीत करवाता है तथा दूसरी ओर एक ही घर में रहते सदस्यों में दूरियां डालता है।'' इसी कारण आवश्यक है कि हमें जाब्ता रखना पड़ेगा कि इस मशीन को कब बन्द करना है।

एक कहावत है कि ''धन-दौलत से नेकनामी अधिक अच्छी है तथा इस से भी अधिक अच्छा है दयालु होना।'' अतः यह जरूरी है कि सोशल नेटवर्क पर वहीं बातें ही लिखी जाएं जिनसे हमें बदनामी न मिले। क्योंकि इन बातों का बाद में सफाया करना शायद मुश्किल हो। जैसा कि हमें पता है कि बहुत से लोग इन बातों से अनजान होते हैं। जब कुछ लोग सोशल नेटवर्किंग करते हैं तो उन्हें होश नहीं रहता। वे ऐसी बाते करते हैं जो वे आमने-सामने बैठ कर नहीं करेंगे तथा इस कारण कईयों को पता नहीं रहता कि यह घटिया बात पोस्ट करने से उनकी नेकनामी मिट्टी में मिल सकती है।

अतः सोशल नेटवर्क के साथ आपकी नेकनामी पर धब्बा लगने के कारण आपके भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। ग्रोन अप डिजिटल

के अनुसार, ''सोशल नेटवर्क साईट का प्रयोग करने वालों की बहुत सी कहानियां सुनने को मिलती है कि उनके द्वारा पोस्ट की गई बातों के कारण उन्होंने अपनी नौकरियां खो दी अथवा उन्हें किसी ने इसी कारण नौकरी नहीं दी।''

अब अपने सोशल नेटवर्क पेज को दूसरों की नजरों से देखने का प्रयत्न करो तथा स्वयं से यह सवाल करो, ''क्या मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे बारे इस प्रकार ही सोचें? यदि कोई मेरे द्वारा पोस्ट की गई फोटो को देखे, तो वह मेरे चरित्र के बारे में क्या सोचेगा अथवा उन के मन में क्या आएगा कि मैं किस प्रकार का हूँ? 'पाटियों का शौकीन', 'लुच्चा लफंगा', 'बदमाशी करने वाला' अथवा 'घर से बाहर मूंह मारने वाला'। यदि लोग मेरे बारे में इस तरह के विचार रखते हों तो क्या मैं चाहता हूं कि नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र देते समय मेरा होने वाला मैनेजर मेरे सोशल नेटवर्क वाले पेज को देखकर मेरे बारे में इस प्रकार सोचे? क्या यह फोटो अथवा पोस्ट किये गए विचार मेरी शख्सियत अथवा छवि का प्रतिनिधित्व करते हैं? क्या यह बातें दर्शाती हैं कि मैं कैसा हूं तथा मेरी धारणाएं क्या हैं? साथ ही साथ आप स्वयं से यह भी पूछें कि यदि मेरे मां-बाप, मेरा अध्यापक अथवा कोई अन्य व्यक्ति जिसका मैं अत्यन्त सम्मान करता हूं, मेरी ये बातें मेरे सोशल नेटवर्क पर देखे? वे जो कुछ देखेंगे अथवा पढ़ेंगे क्या उस कारण से मैं शर्मिन्दा तो न होऊंगा? तथा स्मरण योगय बात यह है कि जो हम बोते हैं, वह ही हम काटेंगे।

जब हम अपने कम्पयूटर पर नहीं होते तथा अपने एकाऊंट को खुला छोड़ देते है तो इस बात का खतरा बना रहता है कि दुसरे लोग आपके पेज़ पर कोई जानकारी पोस्ट न कर दें। इसका मतलब यह हुआ कि आपके पेज़ पर कोई भी एवं कुछ भी पोस्ट कर सकता है। यह बात खुले स्थान पर अपना बटुआ अथवा मोबाईल छोड़ने के समान है।

कंज्यूमर मैगजीन द्वारा किए गये सर्वेक्षण के अनुसार सोशल नेटवर्क प्रयोग करने वाले कई लोग, ''खतरा मोल लेते हैं जिसके कारण उनके घर में सेंधमारी हो सकती है। उनकी निजी जानकारी चुराई जा सकती है तथा कोई उनके पीछे पड़ सकता है। 15 प्रतिशत लोगों ने अपने पेज़ पर पोस्ट कर दिया कि वे कहां पर हैं अथवा कहां जाने वाले हैं, 34 प्रतिशत लोगों ने अपनी जन्म तिथि पोस्ट कर दी तथा 21 प्रतिशत लोगों ने घर में रहते अपने बच्चों के नाम व फोटो पोस्ट कर दिये।'' ये सभी बाते खतरा मोल लेने वाली हैं कि, ''आ बैल, मुझे मार।''

हम सभी को ज्ञात है कि अपने दोस्तों का हमारी सोच एवं कार्यो पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी कारण कहते हैं किः ''व्यक्ति की पहचान उसके दोस्तों को देख कर की जा सकती है।'' समझदार लोगों का संगी-साथी भी समझदार बन जाता है तथा मूर्खो के साथी को दुख होगा तथा बाद में पछताना पड़ेगा।'' इसलिये समझदारी इसी में है कि आप सोच समझकर सोशल नेटवर्क पर दोस्त बनाएं। सैकड़ों लोगों को अपनी दोस्ती की सूचि में सम्मिलित करके हम स्वयं को मुसीबत में डाल सकते हैं। इसी कारण केवल उन लोगों को ही दोस्त बनाओ जिन को आप जानते हों। इसके अतिरिक्त यह भी कि उनकी विचारधारा आपके साथ मेल खाती हो। शायद इसी कारण डा. रावेन शोर्रान अपनी पुस्तक, ''साईबरसेफ'' (Cybersafe) में लिखते है कि, ''अच्छी बात यह है कि आप सोशल नेटवर्क पर केवल उन लोगों को ही दोस्त बनाओ जिन्हें आप ऑफ लाईन मिलते-जुलते हों और जानते भी हों।''

हिन्दी अनुवाद, बलवन्त सिंह लैक्चरार

अनमोल वचनः

1. अज्ञान जैसा शत्रु कोई दूसरा नहीं।

चाणक्य

2. आदमी के बात करने का अंदाज बतला देता है कि वह क्या है।

फरदून

3. अंधविश्वास पागलपन का दूसरा नाम है।

एनी बेसेंट

काले जादू का काला सच

पत्रलेखा चटर्जी

वरिष्ठ पत्रकार। विकास के मुद्दों पर दुनिया की महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में नियमित स्तंभ लेखन एक भारतीय के रूप में हर किसी को आस्था और विश्वास की स्वतंत्रता है। लेकिन अगर यही आस्था खुद किसी व्यक्ति के लिए या दूसरों के लिए नुकसानदायक हो जाए तो यह निजी मामला नहीं रह जाता।

ऐसे में यह मामला सार्वजनिक हो जाता है और लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले अन्य मुद्दो की तरह ही इसका भी हल निकाला जाना चाहिए।

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर में भौतिकी एवं खगोल विज्ञान के एक प्रोफेसर एडम फ्रैंक ने हाल ही में न्यूयॉर्क टाइम्स के अपने एक लेख में बताया कि 1982 में हुए एक सर्वेक्षण के मुताबिक 44 फीसदी अमेरिकी मानते थे कि भगवान ने इस सृष्टि की रचना की है। 30 साल बाद सृष्टिवादियों की संख्या बढ़कर 46 फीसदी हो गई है। यह एक ऐसा वाद है जिसमें माना जाता है कि इस पृथ्वी और ब्रह्मांड की रचना किसी अलौकिक शक्ति ने की है वाद उद्‍भव के वैज्ञानिक सिद्धांत को खारिज करता है। अमेरिकी विचारों में सृष्टिवाद का 20वीं शताब्दी के ज्यादातर समय में मामूली महत्व रहा। लेकिन फ्रैंक कहते है कि जब वह छात्र थे, उस समय बेहद कुशलतापूर्वक प्रयास करके इस विचारधारा की उत्पत्ति को विज्ञान के रूप में दोबारा स्थापित कर दिया गया और देशभर की कक्षाओं में इसकी घुसपैठ करा दी गई।

अवैज्ञानिक होने के बावजूद कुछ दकियानूस किस्म के राजनेताओं ने अपने राजनीतिक करियर के लिए उत्पत्ति के सिद्धांत को खारिज कर दिया।

सवाल यह है कि भारत जैसे बेहद धार्मिक देश में इसके क्या मायने हैं? दरअसल, 71 साल के डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की हत्या के बाद अंधविश्वास और बुद्धिवाद जैसे विषय फिर चर्चा में आ गए हैं। पुणे के मशहूर तर्कवादी दाभोलकर देश में फैले अंधविश्वास के खिलाफ वर्षों से अभियान चला रहे थे और काला जादू जैसे तंत्र-मंत्र को एक कानून लाकर प्रतिबंधित करने के लिए करीब दो दशक से सरकार पर दबाव बना रहे थे। उनकी हत्या के बाद देशभर में उपजे गुस्से के बीच महाराष्ट्र सरकार ने काला जादू, अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र के निर्मूलन के लिए काफी समय से लंबित विधेयक को एक अध्यादेश की शक्ल में लाने का ऐलान कर दिया। अगर यह विधेयक पारित हो जाता है, तो अपने देश में इस तरह का यह पहला मामला होगा। सबसे पहले 1995 में यह विधेयक राज्य विधानसभा में लाया गया था और अब तक कम से कम 29 बार इसमें संशोधन हो चुका है। इस दौरान सभी राजनीतिक दलों की सरकारे बनी, लेकिन कट्टरवादी समूहों के दबाव में इसे पारित नहीं करवा सकीं, क्योंकि ये समूह इस कानून को 'हिन्दू विरोधी' बता रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि आज भी आस्था के नाम पर काला जादू, टोना-टोटका और दूसरे अंधविश्वासों को खत्म करने के प्रयासों की मुखालफत करने वालों की अच्छी खासी तादाद है। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि अंधविश्वास केवल भारत में ही नहीं है, बल्कि अमेरिका में भी लोग सृष्टिवाद को पसंद करते हैं, जो विज्ञान और तर्कवाद को चुनौती देता है।

एक भारतीय होने के नाते मैं इस तरह के तर्क से बेचैन हूं। दाभोलकर धर्म और आस्था को चुनौती नहीं दे रहे थे और न ही अन्य तर्कवादी ऐसा करते हैं। अमेरिकी की तरह यह नास्तिकता बनाम सृष्टिवाद की बहस नहीं है, बल्कि भारत में यह तर्क व कारण बनाम अंधविश्वास व अज्ञान की बहस है। यहां धर्म बनाम निरीश्ववाद की बात भी नहीं की जा रही है। आस्था निश्चित रूप से एक निजी मामला है। एक भारतीय के रूप में हर किसी को आस्था और विश्वास की स्वतंत्रता है। लेकिन अगर यही

आस्था खुद किसी व्यक्ति के लिए या दूसरों के लिए नुकसानदायक हो जाए तो यह निजी मामला नहीं रह जाता। ऐसे में यह मामला सार्वजनिक हो जाता है और लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले अन्य मुद्दो की तरह ही इसका भी समाधान निकाला जाना चाहिए। भारत में, अंधविश्वास खतरा-ए-जान भी हो सकता है और यह समस्या केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित नहीं है। हर साल सैकड़ों औरतों को प्रताड़ित किया जाता है और कई बार तो उनकी हत्या कर दी जाती है। इन औरतों का कसूर सिर्फ इतना है कि कुछ सिरफिरे लोग उन्हें डायन घोषित कर देते हैं। इसी तरह दैवीय शक्तियों को खुश करने के लिए बच्चों की बलि के मामले भी सामने आते हैं। राष्ट्रीय क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरो के मुताबिक, अकेले 2012 में ही टोने-टोटके के नाम पर 119 लोगों की हत्या हो गई। ये सरकारी आंकड़े है और यह बात भी किसी से छिपी नहीं है, बहुत से मामले पुलिस के पास दज ही नहीं होते। पिछले दिसम्बर नई दिल्ली में 12वें इंडियन साइंस कम्युनिकेशन कांग्रेस में बोलते हुए प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक और रायपुर के सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. दिनेश मिश्रा ने देश भर में अंधविश्वास के कारण काला जादू और टोने-टोटके की घटनाओं का जिक्र किया था और एक राष्ट्रीय कानून बनाने की मांग की थी। सवाल यह है कि जब इस समस्या के बारे में अच्छी तरह से पता है, तो इसके निदान के लिए इतने मामूली कदम क्यों उठाए गए हैं?

इसका कारण बहुत आसान है। दरअसल, टोना-टोटका इस देश में एक बहुत बड़ा धंधा है। दिल्ली में काले जादू करने वाले एक शख्स ने खुद को काला जादू समाधान विशेषज्ञ बताते हुए सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट लिंक्डइन पर भी इसका प्रचार प्रसार किया है। उसकी वेबसाइट पर दावा किया गया है कि वह एक काला जादू विशेषज्ञ बाबा है, जिसने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के हजारों परिवारों की समस्याओं का समाधान किया है। जाहिर है कि आम लोगों को मूर्ख बनाकर ठगी करने वालों पर शिकंजा कसने की अब तत्काल जरूरत है।

'नौटंकी बाबा की बोलती बंदः

पुलिस के सामने गिड़गिड़ाए- बोले

जेल भेजा गया तो अपवित्र हो जाऊंगा

. रेप के मामले में फंसे आसाराम गिरफ्त में आने के बाद पुलिस के सामने गिड़गिड़ाते दिखे। नाबालिग से यौन उत्पीड़न जैसी नापाक हरकत के आरोपी 'नौटंकी बाबा' का ड्रामा रविवार को इंदौर से जोधपुर पहुंचने के बाद भी जारी रहा। उन्होंने पुलिस से कहा कि मुझे हवालात में नहीं डाला जाए, वरना अपवित्र हो जाऊंगा। आसाराम ने फिर से बीमारी का बहाना भी बनाया, लेकिन मेडिकल जांच में उनकी तमाम चालबाजी धरी रह गई और जोधपुर पुलिस ने उनसे चार घंटे तक कड़ी पूछताछ की। आसाराम को रविवार को जोधपुर की अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें एक दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस ने पूछताछ के लिए अदालत से दो दिन की पुलिस रिमांड मांगी थी। पुलिस आसाराम को अदालत से सीधे जोधपुर के पास मणई स्थित फार्म हाउस पर ले गई, जहां कुटिया में नाबालिग से दुराचार की कथित घटना हुई थी। पुलिस उन्हें गुप्त स्थान पर रखेगी।

इससे पहले इंदौर में पूछताछ में सहयोग नहीं देने के कारण जोधपुर पुलिस ने शनिवार देर रात आसाराम को गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद रविवार को पुलिस उन्हें विमान से दिल्ली होते हुए दोपहर 12.30 बजे जोधपुर ले आई। जोधपुर हवाई अड्डे पर पहुंचते ही आसाराम ने मीडिया से कहा कि उन्हें सताया जा रहा है, जिसे देश और दुनिया रहे हैं। आसाराम ने पुलिस से कहा कि उन्हें हवालात में न ले जाएं, वरना वे पवित्र हो जाएंगे। करीब 20 मिनट तक समझाने के बाद उन्हें जोधपुर-जयपुर हाईवे पर स्थित पुलिस लाइन में ले जाया गया। यहां पूछताछ में आसाराम ने कहा कि उन पर लगे सभी आरोप निराधार हैं। पूछताछ के दौरान आसाराम ने तबीयत खराब होने की शिकायत की। पुलिस ने तुरंत चार सरकारी डॉक्टरों की टीम को बुलाया और उनकी पूरी जांच करवाई।

डॉक्टरों ने पुलिस को आसाराम के स्वस्थ होने की जानकारी दी। इसके बाद पुलिस ने पूछताछ जारी रखी। मालूम हो कि आसाराम ने शनिवार को इंदौर में भी गिरफ्तारी से बचने के लिए तमाम हथकंडे अपनाए थे। इस बीच आसाराम ने अपने सर्मथकों से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा है कि वह निर्दोष साबित होकर बाहर आएंगे।

अमर उजाला ब्यूरो

...और वक्त से तेज चली महत्वाकांक्षा की यात्रा

जयोतिर्मय

सन 1998 की बात है। दिल्ली में एक छतरपुर मंदिर के नाम से मशहूर आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ में तीन जाने माने संतों का एक कार्यक्रम हुआ। एक शंकराचार्य थे, दूसरे तो साकेत और मध्यप्रदेश के एक शहर में सांई मंदिर चला रहे संत थे और तीसरे संत आसाराम बापू भी पहुंचे थे। कुछ और भी स्थानीय साधु संत और विद्वान थे। उनमें से दो तीन वक्ता बोले होंगे कि बापू ने माईक खुद संभाल लिया। पच्चीस तीस मिनट के भाषण में बापू ने वहां बैठे प्रमुख संतो को जम कर खरी खोंटी सुनाई। कुछ ज्ञान ध्यान की बातें की और भाषण पूरा होते ही श्रोताओं को चुटकी बजाकर उठने का ईशारा किया। खुद भी उठ कर चल दिए। गुरू को उठता देख बापू के अनुयायी भी उठ गए और पंडाल खाली हो गया। कार्यक्रम खत्म। मौजूद बाकी संतो को अपनी बात कहने का मौका ही नहीं मिला। इस आक्रामक शैली की कई मिसालें हैं। पर शुरूआती दिनों की बात करें तो उनका पहला कार्यक्रम मार्च 1989 में दिल्ली के बिड़ला मंदिर में हुआ था। तब चैत्र नवरात्रियों में मानस मर्मज्ञ पंडित रामकिंकर उपाध्याय के प्रवचन हुआ करते थे। रामनवमी को उनके प्रवचन पूरे हुए और अगले दो दिन बापू वहां की व्यासपीठ से बोले। श्रोताओं की तलाश रामकिंकर जी को सुनने आए लोगों में से ही की गई। उनका प्रवचन पूरा होने के बाद जब लोग वापस जा रहे थे तो बापू के कार्यकर्ता नवरात्र के बाद अपने गुरू के कार्यक्रम में आने का न्योता देते। काफी मेहनत मशक्कत के बाद दो दिन के कार्यक्रम में डेढ़-दो सौ श्रोता आए।

करीब पांच साल बाद लालकिला मैदान में बापू का सत्संग कार्यक्रम हुआ। सितम्बर 1994 में हुए इस कार्यक्रम में पांच-सात हजार लोग सुनने के लिए मौजूद थे। इस आयोजन के बाद करोलबाग, रोहिणी, पीतमपुरा, रिंगरोड, जमनापार आदि इलाकों में कार्यक्रम की श्रृंखला ही बन गई। शिष्य परिवार इस कदर फैला कि दो-दो तीन-तीन आयोजन करने पड़े। मुंबई, चंडीगढ़, सूरत, लखनऊ, वाराणसी, इंदौर आदि शहरों की कहानी भी इसी से मिलती-जुलती है।

अब बापू के अनुयायियों की संख्या पंद्रह करोड़ से ज्यादा बताई जाती है। बीस साल पहले अहमदाबाद के पास एक ग्रामीण बस्ती मोटेरा में छोटा सा आश्रम था। अब वहां महिला आश्रम है। बापू की पत्नी लक्ष्मी देवी और बेटी भारती देवी इसकी व्यवस्था देखती हैं इस आश्रम के सामने ही आसाराम बापू के गुरूभाई स्वामी सदाशिव का एक छोटा सा आश्रम है जो उपेक्षित सा है। बापू ने इसी आश्रम से 1971 में अपनी गतिविधियां शुरू की थी। बापू का आश्रम इस आश्रम से करीब तीन सौ गुना फैल गया है। देश-विदेश में उसकी 225 से ज्यादा शाखाएं योग वेदांत समिति की तीन हजार से ज्यादा मंडलियां हैं। सप्ताह में कम से कम एक बार शिष्य मिलते और अपने गुरू के उपदेशों के प्रचार के लिए अगले सप्ताह की रणनीति बनाते है। बापू स्वयं अब भी बारहों महिने प्रवास पर रहते हैं। बापू का प्रारंभिक जीवन बहुत सामान्य रहा है। भारत के बैरानी (नवाबशाह) गांव में 17 अप्रैल 1941, को आसुमल के पिता परचून की दुकान चलाते थे। ज्यादा आमदनी नहीं थी। विभाजन के बाद भारत आए तो अहमदाबाद के मणिनगर इलाके में ठिकाना मिला। वहां पहले परचून की और फिर चाय की छोटी सी दुकान शुरू की। पिताा को यहां महसूस हुआ कि बच्चे को पढ़ाना भी चाहिए। दो तीन साल तक स्कूल गए। पिता का निधन हो गया।

गुजारे के लिए दुकान ही एक जरिया थी। रिश्ते के एक भाई के साथ उसे देखने लगे। छोटी उम्र में विवाह और फिर आश्रम के सपने के साथ धर्म व्यवसाय का सपना देखते हुए बापू ने जो यात्रा शुरू की तो पीछे मुड़ कर नहीं देखा। तीर्थों में अपने भविष्य को तलाशते हुए वृंदावन में स्वामी लीलाशाह को अपना गुरू बनाया। लीलाशाह ने नए शिष्य को नाम दिया- आसाराम। दीक्षा के बाद घर लौट जाने के लिए कहा कि आज के समय में घर-परिवार में रहते हुए ही अध्यात्म साधन करना श्रेयस्कर है। आसुमल से आसाराम बने बापू इसके बाद सीधे मणिनगर आ गए।

यहां आकर उन्होंने कारोबार में फिर भी दिलचस्पी नहीं ली। पांच-छह साल तक की गई यात्राओं में हुए अनुभवों और सीखे सिद्धांतों को बांटना शुरू किया। संन्यासी जैसा वेष रखते हुए वे पहले ही धोती लपेटने और चादर ओढ़ने लगे थे। उनका कहना था कि दीक्षा के बाद उन्हें गुरू ने योग वेदांत के प्रचार का आदेश दिया और वह गुरू आज्ञा का पालन करने में जुट गए। 1971 में अहमदाबाद में स्वामी सदाशिव के आश्रम में आकर रहने और बाद में अपना अलग संस्थान शुरू करने पर बापू को मणिनगर के कुछ व्यवसायियों का सहयोग मिला। व्यवसायियों का यह समुदाय छोटा ही था पर उन्हें योग वेदांत के उभर रहे युवा उपदेशक में अपनी धार्मिक पहचान मिलती दिखाई दे रही थी।

जो तर्कों से डरते हैं
अमर उजाला

संपादकीय

कुरीतियों और अंधविश्वास के खिलाफ अभियान चलाने की वजह से डॉ दाभोलकर ऐसे लोगों को खटक रहे थे, जो अज्ञानता का फायदा उठाकर अपनी दुकानें चलाते हैं।

अंधविश्वास और कुरीतियों के खिलाफ लम्बी लड़ाई लड़ने वाले डॉ दाभोलकर की पुणे में हुई हत्या स्तब्ध करने वाली है। इससे पता चलता है कि आज भी हमारे बीच मध्ययुगीन मानसिकता वाले लोग मौजूद हैं, जिनके लिए तर्कों का कोई अर्थ नहीं है। कुरीतियों और रूढ़िवादियों के खिलाफ अभियान चलाने की वजह से वह ऐसे लोगों की आंखों की किरकरी बन गए थे, जो लोगों की अज्ञानता का फायदा उठाकर अपनी दुकानें चलाते है। हैरत की बात है कि आज भी ग्रामीण अंचल ही नहीं, शहरों तक में अंधविश्वास गहरे तक जड़ें जमाए बैठा है, जिस कारण दैवीय प्रकोप से बचने के लिए कभी किसी बच्चे की बलि दे दी जाती है, तो कभी जादू-टोने के नाम पर किसी महिला को निर्वस्त्र घुमाया जाता है। उनकी लड़ाई सिर्फ अन्धविश्वास तक सीमित नहीं थी, उन्होंने जाति पंचायतों की जड़ता और लैंगिक असमानता जैसे मुद्दे भी उठाए और स्वयंभू धर्मगुरूओं और बाबाओं को भी चुनौती दी। डॉ दाभोलकर आस्था और विश्वास के महीन अन्तर को बखूबी समझते थे और उनकी पहल से ही महाराष्ट्र के अनेक मंदिरों में महिलाओं को प्रवेश मिल सका था। उनका कुसूर बस यही था कि अपनी अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के जरिये वह वैज्ञानिक तर्कों के साथ लोगों मे जागरूकता फैलाने का काम कर रहे थे, जो पाखंडी लोगों को नागवार गुजरा। वह एक दशक से भी लंबे समय से महाराष्ट्र में काला जादू और अंधविश्वस उन्मूलन विधेयक को पारित किए जाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। यह विधेयक 18 वर्षों से लंबित है, जिसे पारित करने से प्रदेश की तमाम सरकारें हिचकती रहीं है, क्योंकि एक वर्ग का मानना है कि इससे लोगों की आस्था आहत हो सकती है। असल में इसके पीछे भी गहरी राजनीति है, जिसके अर्थ समझने की जरूरत है। महाराष्ट्र की पृथ्वीराज चव्हाण सरकार ने अब जाकर इसे अध्यादेश की शक्ल में मंजूरी दी भी है, तो तब, जब दाभोलकर की हत्या कर दी गई। वाकई प्रचलित सामाजिक धारणाओं के खिलाफ जिस साहस से वह लड़ रहे थे, वैसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि तो यही होगी कि अंधविश्वास के खिलाफ सख्त कानून बनाया जाए, क्योंकि आज भी अनेक प्रदेशों में यह बड़ी समस्या है।

अनमोल वचनः

1. तुम्हारा कोई साथ न दे तो क्या हुआ, तुम अकेले चलो।

रविन्द्रनाथ टैगोर

2. कोई भी क्रिया अकारण नहीं होती। कारण से ही क्रिया की उत्पत्ति होती है।

चाणक्य

जन्म कुंडली या स्वास्थ्य कुंडली

कुछ दिनों पहले की बात है मेरे पास एक दम्पत्ति आये उन्होंने कहा डॉक्टर साहब हमारी लड़की सुशिक्षित है, उसे एक सजातीय लड़का पसंद है जो कि उसके साथ नौकरी करता है हमें भी वह युवक योग्य लगता है। जब हम उनसे शादी की चर्चा हेतु उसके पिता के पास गये तो उसके पिता ने हमसे हमारी पुत्री की जन्म कुंड़ली मांगी व अपने बेटे की जन्म कुंड़ली हमें दे दी तथा पंडित से मिलवाने के बाद ही उत्तर देने की बात की। दोनों कुंडलियों को जब उन्होंने पुरोहित से मिलवाया तो उनके पुरोहित ने उसमें खोट निकाल दी तथा मंगल जैसी कुछ ग्रह दोषों का हवाला देकर शादी न करने का निर्णय दे दिया। हमें समझ नहीं आ रहा है कि हम क्या करे। हम उस युवक को छोड़ना भी नहीं चाहते। समझ में नहीं आ रहा क्या करे। ऐसा ही कुछ वर्ष पहले और हुआ था जब हमने एक लड़का पसंद किया था तब भी उसकी कुंडली व लड़की की कुंडली में कम गुण मिलने के कारण उस समय भी शादी नहीं जम पायी थी। मैंने उनसे कहा कि हमारे देश में बहुत सारी विवाह योग्य युवतियां अनब्याही रह जाती है जिसमें दहेज के अलावा ऐसे अंधविश्वास भी एक कारण है, जिसमें माता-पिता कुंडली के हिसाब से सबसे अच्छा वर ढूंढने में 4-5 साल खराब कर देते हैं, फिर जब बच्चों की उम्र बढ़ने लगती है तब पालको का मानसिक तनाव बढ़ने लगता है। इसलिये उन्हें सोचसमझकर निर्णय लेने की सलाह मैंने दी।

हमारे देश में विवाह योग्य युवाओं की शादी के लिए उपयुक्त पात्रों के चयन के लिए जन्म कुंडली मिलाने की परम्परा है। यह परम्परा बहुत पहले से चली आ रही है। लोग अपने युवा पुत्र-पुत्रियों के विवाह के लिए पुरोहित द्वारा बनाई गई जन्म कुंडली मिलाते रहे है व उनके बताये अनुसार रिश्ते बनाते रहे है। यह जन्म कुंडली अनुमानों पर आधारित होती थी जिसमें विभिन्न ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति व कथित प्रभाव को दर्शाया जाता रहा। कुंडली मिलान की यह परम्परा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रही। यदि शादी ठीक-ठाक चलती रही तो पंडित जी की वाह-वाह! और यदि कुछ गड़बड़ हुआ तो किस्मत व भगवान पर दोषारोपण। धीरे-धीरे शिक्षा का प्रचार प्रसार बड़ा, लड़कियां भी पढ़ लिख कर समाज में अपना स्थान बनाने लगी, आत्मनिर्भन बनने लगी, तब जागरूकता भी बढ़ी, पर आज समाज में अनेक लोग जन्म कुंडली व उसके मिलान को लेकर बड़े संवेदनशील है।

विज्ञान का मानना है कि ग्रह-नक्षत्र किसी व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव नहीं डालते। शनि व मंगल, राहू-केतू के नाम पर की जाने वाली भविष्यवाणियां गैर वैज्ञानिक है इनके ग्रह दोष के नाम पर चलाये जाने वाली भविष्यवाणियां समाधान भ्रामक व व्यवसायिक भी है। किसी व्यक्ति के विवाह के लिए ग्रह आधारित कुंडली मिलाने के बजाए एक-दूसरे के विचारों, व्यवहारों, स्वभाव, पसंद-नापसंद के साथ स्वास्थ्य की दृष्टि से शारीरिक गुणों का मिलान होना अधिक जरूरी है। चिकित्सकीय कार्य करने के कारण हमारे पास अक्सर ऐसे लोग आते हैं जो विवाह के पूर्व ग्रहों के गुण दोष का ही समाधान करते रहे, बाद में जब उन्हें महसूस हुआ कि वे जन्म कुंडली के बजाए स्वास्थ्य कुंडली का मिलान कर विवाह बंधन में बंधते तो अधिक सफल, सुखी जीवन व्यतीत कर सकते थे। यदि कोई युवक-युवती किसी अनजाने रोग से ग्रसित है तो वह अपने जीवन साथी को तो रोग भेंट में देगा ही बल्कि साथ आने वाली पीढ़ी को भी रोग ग्रस्त कर सकता है। इससे यह तथ्य पुनः साबित होता है कि ग्रह-नक्षत्र भले ही अपना प्रकोप न दिखा पायें पर आगे चलकर बीमारियां जरूर अपना प्रकोप दिखा सकती है जिनसे स्वास्थ्य कुंडली का मिलान करने से बचा जा सकता है।

स्वास्थ्य कुंडली बनाते समय उन संक्रमणों व दशाओं की जांच कर लेना चाहिए जो संक्रामक है, आनुवांशिक है, व एक से दूसरी पीढ़ी में पहुंच सकती है। क्योंकि कुंडली के नौ ग्रह भले ही प्रभाव न डाले शारीरिक संक्रमण किसी भी व्यक्ति के सुखी वैवाहिक जीवन पर अवश्य प्रभाव डाल सकते है। ब्लड ग्रुप, हिपेटाईटिस, थैलसीमिया, हिमोफिलिया, टार्च टेस्ट, सिफलिस, कलर ब्लांइडनेस, सिकलिंग, एड्स जैसी कुछ जांच करवाने की यदि परम्परा बनाई जाती है तो यह अधिक लाभदायक होगा। शासन व समाज को भी इस दिशा में जागरूकता के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

डॉ दिनेश मिश्र

हैवानियत

जब से इलैक्ट्रानिक मीडिया तथा समाचार पत्रों में बलात्कारी की घटनाएं चर्चित हुई तब से ऐसी घृणित घटना को अन्जाम देने वालों को हैवान के नाम से जाना जाता है। इनको दरिन्दा और 'भेड़िया' के नाम भी दिए जाते रहे। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। पशु-पक्षियों में इस तरह की नीचता के अवगुण पाए ही नहीं जाते। नर मादा की इच्छा के विरूद्ध कुछ नहीं करता। यह एक खुली सच्चाई है। घरेलू चिड़िया के केस में नर चिड़िया पंख फैला कर मादा चिड़िया को खुश करने और उसकी स्वीकृति लेने की कोशिश करता है। इसी प्रकार मोर पंख फैलाकर नृत्य करता है और मोरनी को रिझाने की चेष्टा करता है। ऐसे ही नर कबूतर गर्दन फुला कर विचित्र आवाज निकालते हुए मादा कबूतर के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहता है। इसी प्रकार बैया जो तिनको से शानदार घोंसला बनाते हैं। घोंसले को बनाने में नर बैया ही कार्य करता है। जिस नर बैया का घोंसला किसी मादा बैया को पसंद आ जाए तो वह मादा बैया उस नर बैया को स्वीकृति देकर जोड़ा बना लेती है। आपने पालतू पशुओं में भी देखा होगा कि सांड कभी भी किसी छोटी बछड़ी के साथ जोर-जबरदस्ती नहीं करता; न ही भैंसा किसी कटड़ी के साथ ऐसा जबरदस्ती वाला व्यवहार करता है। इस प्रकार की नीचता और गिरावट केवल इन्सानों में देखने को मिलती हैं। इन दिनों अनेक समाचार पढने और देखने को मिले कि 4-5 साल की बच्ची के साथ बलात्कार करने के बाद उसको जान से मार दिया गया। इन्सान की हमेशा से एक आदत रही है कि वह अपनी बुराई को न देखकर उसको दूसरों पर मढ़ने की कोशिश करता है। दो भाईयों या दो दोस्तों में जब मतभेद हो जाते है तो हर बुराई दूसरे में ढूंढते हैं और अपने को ठीक सिद्ध करने की कोशिश की जाती है। इसी प्रकार दो राष्ट्रों के बीच जब युद्ध होता है तो स्वयं चाहे कितने ही दोषी क्यों न हो मगर दोषारोपण दूसरे पर ही किया जाता है। आज नई सोच जन्म ले रही है। हमें अन्दर बैठे शैतान को खोजना होगा तभी सुधार की बात हो सकती है न कि अपनी जिल्लत और घटियापन को पशुओं के सिर मढ़ कर स्वयं को संतुष्ट करते रहें।

मै फिर दोबारा यह कहूंगा कि दरिन्दों तक में ये अवगुण नहीं पाए जाते भले ही वे खूंखार जानवर शेर-शेरनी क्यों न हो ? शेर शेरनी से शारीरिक रूप में डेढ़ गुणा होता है परन्तु वह शेरनी की स्वीकृति जीतने की कोशिश तो करता है मगर ज्यादती नहीं करता। यहां तक कि गलियों में आवारा घूमने वाले कुत्ते व कुत्तियों में आपसी लड़ाई देखने को नहीं मिलती। कुत्ता मादा के लिए कुत्ते से तो लड़ता है मगर कुत्तियां से नहीं। यह बुराई केवल इन्सानों में ही देखने को मिलती है। इन्सानों में नारी की खातिर अनेक लड़ाइयां लड़ी गई जिनमें अनेक जाने बर्बाद हुई। 1947 में देश के विभाजन के समय नारी उत्पीड़न सभी सीमाओं को लांघ गया। लाहौर शहर में अनेक हिन्दू महिलाओं को निर्वस्त्र कर जलूस निकाला गया। इसी की प्रतिक्रिया में ऐसा ही व्यवहार अमृतसर में मुस्लिम स्त्रियों के साथ किया गया। बंगला देश में स्वतन्त्रता के समय अनक बंगला देशी महिलाएं सैनिकों की हवस का शिकार हुई। वियतनाम युद्ध में हजारों लड़कियों को वैश्य बनाने के लिए विवश किया गया। इन्सान न जाने क्यों भूल जाता हैं कि नारी एक मां, पत्नी और बेटी भी है। इनकी रक्षा करना एक सभ्य इन्सान का पहला फर्ज होता है। साहिर लुधियानवी के गीत की एक पंकित के अनुसारः

''औरत ने मर्द को जन्म दिया,
मर्द ने औरत को बाजार दिया।''

अगर हम इस पंक्ति के बोल सोचें तो एक बहुत बड़ी सच्चाई सामने आती है। मेरे देश के बुद्धिजीवी इन्सानों की जिम्मेदारी बनती है कि अपने बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करे और उनको अच्छे नागरिक बनाएं। सभी जीवों से उत्तम कहलाने वाला इन्सान ही अगर गिरावट की राहों पर चलेगा तो वह इन्सान न होकर पशुओं से भी बदतर है। दरिन्दे तब शिकार करते है जब उनकी भूख होती है। अगर शेर का पेट भरा हो तो पास से कोई शिकार गुजर भी जाए तो वह उसको कोई हानि नहीं पहुंचाता। परन्तु इन्सान अपने घमण्ड व अहं की तृप्ति के लिए बेगुनाह लोगों के साथ ज्यादती करता रहता है। धन व सम्पत्ति एकत्रित करने की लालसा भी इन्सान को इन्सानियत से दूर ले जाती है है।

अगर हम स्वस्थ व स्वच्छ समाज का निर्माण करना चाहते है तो हमें इन्सानी दिमागों से क्रूरता खत्म कर दया भावना और हमदर्द पैदा करनी होगी। यह मानवता का पहला गुण है न कि अपनी कमजोरियों को हैवानों और दरिन्दों पर मढ़कर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करना। आओं मिलकर सभी विश्व में सच्ची मानवता का संचार करें जिससे मानव समाज समृद्धि एवं शांति को प्राप्त करे।

आर. पी. गान्धी, मो0 93154-46140

आशीर्वाद देने वालों का सच

उत्तराखंड त्रासदी के जख्म अभी भरे भी नहीं हैं, सनसनी खेज खबरों को फैलाने में माहिर कारपोरेट मीडिया ने अपना बोरिया बिस्तर समेट लिया है। उसके लिए नई सनसनी दुर्गा नागपाल है, जिसे राष्ट्रीय समस्या के रूप में परोसा जा रहा है। जल्दी ही इसे भूल कर नई सनसनी की खोज यह कर लेगा, नया उभरा मध्यम वर्ग अपने चरित्र के अनुसार खबरों को जानकारी के लिए नहीं मनोरंजन के लिए देखता है। कांवडियों के शोर-शराबे में डूबी सड़कें सदा की तरह रूकावट बनबर उभर रही हैं। यह भीड़ सड़क पर कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है। किसी भी प्रकार के अंकुश की बात करना बेकार ही होगा।

उत्तराखंड त्रासदी से नए तथ्य उभरे हैं, धर्म की अफीम खिलाने वाले बाबे व चैनल इस त्रासदी में सहायता के नाम पर नदारद रहे। इक्का-दुक्का बाबे नामात्र को अपनी अय्याशी से निकलकर पीड़तों की सहायता के लिए आए। भारत में बाबागिरी एक व्यापार के रूप में स्थापित है, अरबों की सम्पत्ति पर कुंडली मारे धर्मगुरु व उनके प्रचारक बस आशीर्वाद का पाखंड ही करते हैं। आंकड़ों से पता चला है कि मुख्यमंत्री राहतकोष में 153 करोड़ रुपये आने तक किसी भी बड़े बाबा का नाम दाताओं की लिस्ट में नहीं था। जबकि बाकी देश को तो छोड़िये हरिद्वार व ऋषिकेश में ही बाबाओं का बड़ा जमावड़ा है। कई बाबा तो ऐसे हैं जो उतराखंड में ही अपना करोड़ों का धंधा चला रहे हैं। इन बाबाओं के आश्रम सरकारी जमीनों पर ही राज्य के सहयोग से बने हैं। इन्हें जमीनें कौडियों के भाव मिली हुई हैं। एक अनुमान के अनुसार हरिद्वार, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ तक गंगा और सहायक नदियों के किनारे बाबाओं के लगभग दो हजार आश्रम हैं जोकि आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं। जहां बाबे अपने देशी व विदेशी श्रद्धालुओं को कथित ज्ञान बांटते हैं परन्तु इस त्रासदी में इनकी सक्रियता नदारद है। कई जगह पर तो त्रासदी के शिकार लोगों को छूटभइये बाबे लूटते तक देखे गए वे मृतक लोगों के गहने व पैसे चुराकर ले गए, जोकि शर्मसार करने वाला है। देश की सामाजिक संस्थाएं, अखबार व भारत सरकार के उपक्रम जैसे कोल इंडिया सहायता के लिए उठ खड़ी हुई हैं। व्यक्तिगत तौर पर सहायता के लिए भी वे पारिवारिक लोग निकले हैं जिन्हें बाबे दुनियावि लोग कहते हैं।

उत्तराखंड त्रासदी में फंसे पीड़ित लोगों के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। यह एक सनसनी खेज खबर नहीं है जिसे अपने ड्राईंग रूप में टी.वी. का रिमोट हाथ में दबाए बस मनोरंजन के लिए देखा जाए बल्कि मानवीय संवेदना का विषय है, अब भी बहुत कुछ करना बाकी है। स्थानीय लोगों का जीवन-यापन पर्यटकों के आगमन से जुड़ा हुआ है जोकि बुरी तरह से प्रभावित है। उनका पुनर्वास सर्वप्रथम होना चाहिए। अभी भी मानवीय सहायता के लिए उठे हाथों को पीछे नहीं हटना चाहिए। बाबाओं व धर्मस्थलों को दान देने की बजाए इंसानियत के लिए दान करना उत्तम है।

अमर-उजाला

अनमोल वचनः

1. बातचीत के दौरान अगर-मगर कर कर बात करने वाले आदमी से सावधान रहो।

सुकरात

2. अटल रहकर काम करो। आधी सफलता वैसे ही मिल जाएगी।

चीनी कहावत

फैडरेशन ऑफ इंडियन रैशनलिस्ट एशोसियेशनस ने धर्म को राजनीति से अलग करने के लिये धरना प्रदर्शन किया

नई दिल्ली, 26 नवम्बरः फैडरेशन ऑफ इंडियन रैशनलिस्ट एशोसियेशनस ने प्रो. नरेन्द्र नायक राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री यू. कलानाथन राष्ट्रीय महासचिव तथा श्री हरचंद भिंडर सचिव उत्तरीय जोन की अगवाई में, धर्म को राजनीति से अलग करने के लिये, संसद के सम्मुख धरना दिया। इस मौके पर में प्रो. नरेन्द्र नायक ने कहा कि भारत बेशक धर्म निरपेक्ष देश है, परन्तु वर्तमान हालातों में ऐसे लगता है कि यह किन्ही विशेष धर्मों के पक्ष का देश है। धर्म का सरकारी काम काज में हस्तक्षेप दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यहां तक कि इसरो जैसे वैज्ञानिक संस्थान में जब भी कोई नया काम किया जाता है विशेषकर जब बीते दिनों में खगोलिए उपग्रह मंगलयान छोड़ा गया था, तो उस समय एक धर्म विशेष के पुजारियों द्वारा पुजा आदि की गई थी। इसी प्रकार प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति का धार्मिक स्थलों पर जाना अनेक अनेक प्रशन खड़े करता है। श्री यू. कलानाथन ने कहा कि धर्म को राजनीति से अलग करने के लिए फीरा 2005 से संघर्ष कर रही है। स्मरण रहे कि 18 अप्रैल, 2005 को भी फीरा ने संसद के समक्ष धरना दिया था। उन्हौंने कहा कि आज का धरना सांकेतिक धरना है क्योंकि संसद का सैशन अभी शुरू नहीं हुआ है परन्तु हम इस बिल को पास कराने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहेंगे। तर्कशील सोसायटी पंजाब के श्री भूरा सिंह ने कहा कि वर्तमान में राजनीति धर्म को अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रयोग कर रही है। बदले में कुछ धर्मों को विशेष तौर पर आर्थिक मदद देती है, जिस के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के मास्टर बलवन्त सिंह ने कहा कि राजनीतिक संरक्षण के चलते नये-नये पाखण्डी बाबे फल-फूल रहे हैं तथा भोली-भाली जनता को गुमराह कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आन्ध्रा प्रदेश से श्री रामाचन्द्रन, अर्जक संघ उत्तर प्रदेश के श्री रघुनाथ सिंह, केरत युक्तिवादी संघम के श्री सुकुमारन, एडवोकेट अनिल कुमार एवम् अन्य संगठनों के वक्ताओं ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस धरने में तर्कशील सोसायटी पंजाब के राज्य कार्यकारिणी के मा. राजेन्द्र भदौड़, चानन वान्दर, सुखदेव फगवाड़ा, जसविन्द्र पटवारी, मा. कुलजीत, जोगिन्द्र कुलेवाल एवम् राम कुमार पटियाला आदि ने भाग लिया तथा रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा से राज्य कार्यकारिणी के सदस्यों सुभाष तितरम, अनुपम सिंह, ईश्वर नास्तिक, राजेश पेगा, आत्मा सिंह वरिन्द्र राणा आदि ने भाग लिया। धरने के उपरान्त फीरा के पधान तथा महासचिव इस बिल की प्रति और मांग-पत्र प्रधान मंत्री कार्यालय में रिसीव कराकर आये। धरना प्रदर्शन के अन्त में संसद मार्च कमेटी के कनवीनर रैशनलिस्ट सोसायटी के गुरमीत सिंह ने देश के भिन्न-भिन्न राजयों से आये समस्त कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि भविष्य में सभी संस्थाऐं इस बिल को पास कराने के लिये संसद सदस्यों को स्मरण पत्र देते रहेंगे।

आईना

कैसे-कैसे लोग

बलजीत भारती

(1)

बात 1991 की है। बी.एड. करने के बाद मैं काम की तलाश में था। प्राइवेट स्कूलों में वेतन संतोषजनक नहीं मिलता था। इसलिए एक-दो स्कूलों में काम करने के बाद विचार आया कि क्यों न अपना ही प्राइवेट स्कूल चलाया जाए। शहर में स्कूल चलाने के लिए बजट की भारी समस्या थी। सो, कैथल के पास एक गांव में स्कूल खोलने की सोची। चाचा जी की मदद से कुछ सामान जुटाया लेकिन पूरा नहीं पड़ रहा था। कुछ पैसों की जरूरत पड़ी तो एक दोस्त की याद आई। दोस्त के हालात भी अच्छे नहीं थे लेकिन जैसे-तैसे उसने किसी से पकड़कर 1500 रू0 का बन्दोबस्त कर दिया। 1500 रू0 आज बहुत मामूली बात है लेकिन उस वक्त यह मेरे लिए एक बड़ी रकम थी। मैंने एक महिने की कहकर ये पैसे लिए थे। स्कूल खुल गया लेकिन स्कूल से आया पैसा स्कूल में ही लगता गया। एक-एक करके छः महिने बीत गए। मैं पैसे नहीं लौटा पाया। अपने आप में मैं बड़ी शर्म महसूस कर रहा था। गनीमत रही कि उधर से कोई तकाजा नहीं आया। आखिरकार छः महिने बाद मैंने उसे पैसे देने के लिए कैथल के बस-स्टैण्ड पर बुलाया। आप क्या सोच रहे हैं? मिलते ही उसने मुझे उलाहना दिया होगा। जी नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ था। उसने कहा था, ''तुम्हे और पैसों की जरूरत तो नहीं है?'' वो बात याद करके आज भी मेरी आंखें भीग जाती हैं। याद कीजिए आपके ऐसे कितने दोस्त हैं।

(2)

स्कूल एक चौपाल में खोला गया। बच्चे धड़ाधड़ आने लगे। लेकिन गांव में सब तरह के लोग होते हैं। चौपाल के पड़ोसियों को अपने पड़ोस में स्कूल खुलना गवारा नहीं हुआ। कुछ समय बाद एक किराए के भवन में चले गए लेकिन जल्दी ही मकान मालिक किराया बढ़ाने की बात करने लगा। फिर वहां से एक व्यक्ति के खाली पड़े मकान के एक हिस्से में शिफ्ट हो गए। उस व्यक्ति की मां को यह बात पसंद नहीं आई और यदा-कदा झगड़ा करने लगी। मैं बड़ा परेशान था। इसी तरह की बातों से उन लोगों को बड़ी तकलीफ हुई जिनके बच्चे पढ़ाई में आश्चर्यजनक रूप से अच्छा कर रहे थे। उन्ही में से एक सज्जन एक दिन मेरे पास आए और कहा कि, ''मास्टर जी, मैं आपको स्कूल बनाकर देता हूं।'' मुझे हैरानी हुई लेकिन उनकी बात पर अविश्वास करना भी मुश्किल था। देखते ही देखते उनके खाली प्लाट में स्कूल का भवन तैयार हो गया। और पूरे गांव में उनके इस काम की वाह-वाही होने लगी। उस भले आदमी की वजह से बच्चों को उनका स्थाई स्कूल मिल गया और मुझे मन का सुकून। आप ऐसे कितने लोगों को जानते हैं?

लेखकों/पाठकों के लिए

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail:tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती हैं। mail भेजते समय SG-4 Hindi Fonts का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतनिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रेशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा रजि. को सहयोग:

1. दर्शन सिंह U.S.A. ने अपने पौत्र दक्ष सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 20047/- रु. का सहयोग भेजा।
2. डॉ.सुभाष चन्द्र प्रसाद एच.ओ.डी. आनंद इंजीनियरिंग कॉलेज आगरा ने 1000 रुपये का सहयोग भेजा।

इनका सोसायटी हार्दिक धन्यवाद करती है।

24-25 नवम्बर 2013 को फीरा द्वारा आयोजित धरने में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के साथियों द्वारा दिया गया सहयोग:-

1.	गुरमीत सिंह, अम्बाला	-	1000
2.	आत्मा सिंह, अम्बाला	-	1000
3.	अनुपम सिंह, अम्बाला	-	1000
4.	हरबिलास भड़ुंगपुर	-	1000
5.	राजेश पेगा	-	1000

हरियाणवी रागिनी

रंग आजादी का ईब

हाथ जोड़ कै नेता जी, ईब माँगै सलाह बेगाने की ।
आजादी तो आई अड़ै, ना बदली सोच जमाने की ।।

अमरीका आगै लम्बा पड़्या, हो सकै खड़्या कोन्या,
चाहवैं थे आजादी आला, देश पै रंग चढ़्या कोन्या,
विदेशी दबाव के साहमी, विचार देशी अड़्या कोन्या,
रीत-नीत वही पुराणी, रती भर पफर्क पड़्या कोन्या,
कुर्बानी होगी बेकार आज, न्यू तड़पफै रूह दीवाने की।

टैक्स ठोक घौटाले करते, पीस्सा खा रे जनता का,
शिक्षा अर काम खोस कै, टिब्बा ठा रे जनता का,
नए-नए कानून बणा कै, ये रोक लगा रे जनता पा,
अमरीका कै आगै पफैर, सिर झुकवा रे जनता का,
घणी कसूती आदत सै, सब आगै शीश झुकाने की।

जात-पात, वर्ण व्यवस्था, ज्यादा पक्की होगी,
गेहूँ गेल घुण पिसै, या सियासत चक्की होगी,
इसी आजादी देख कै जनता, हक्की-बक्की होगी,
कागजां म्हं तो देश की, घणी तरक्की होगी,
कसम खा रे नेता जी, देश बेच कै खाणे की ।

लीडरां की तो अब भी, सै आदत वही पुराणी,
बार-बार अमरीका जा कै, बात पूछ कै आणी,
हम बिल्ली ये बांदर हो गे, हो री वही कहाणी,
'रामेश्वर' का पफर्ज बणै ईब, साच्ची बात बताणी,
दोषी जिंदा लिकड़ गया, रहगी कमी निशाने की ।

रामेश्वर दास 'गुप्त'
94162-20513

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC

धर्म को राजनीति से पृथक करने के बिल को पास करने हेतू 25 नवम्बर 2013 को फैडरेशन आफ़ इन्डियन रैश्नलिस्ट एसोशिएशन (फीरा) के नेतृत्व में जन्त्र-मन्त्र दिल्ली में दिए धरने में फीरा से जुड़े देश भर के तर्कशील संगठनों ने शिरक्त की

उत्तरी अमेरिका तर्कशील सोसायटी ब्रम्पटन ने तर्कशील मेले का आयोजन किया जिसमें तर्कशील सोसायटी पंजाब से बलविन्द्र बरनाला ने भी भाग लिया, इस आयोजन को सफल बनाने में कोआर्डीनेटर बलदेव रहिपा, बलदेव सोकर और डा० बलविन्द्र शेखों ने अहम भुमिका निभाई।

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....